Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीवित-समाधि

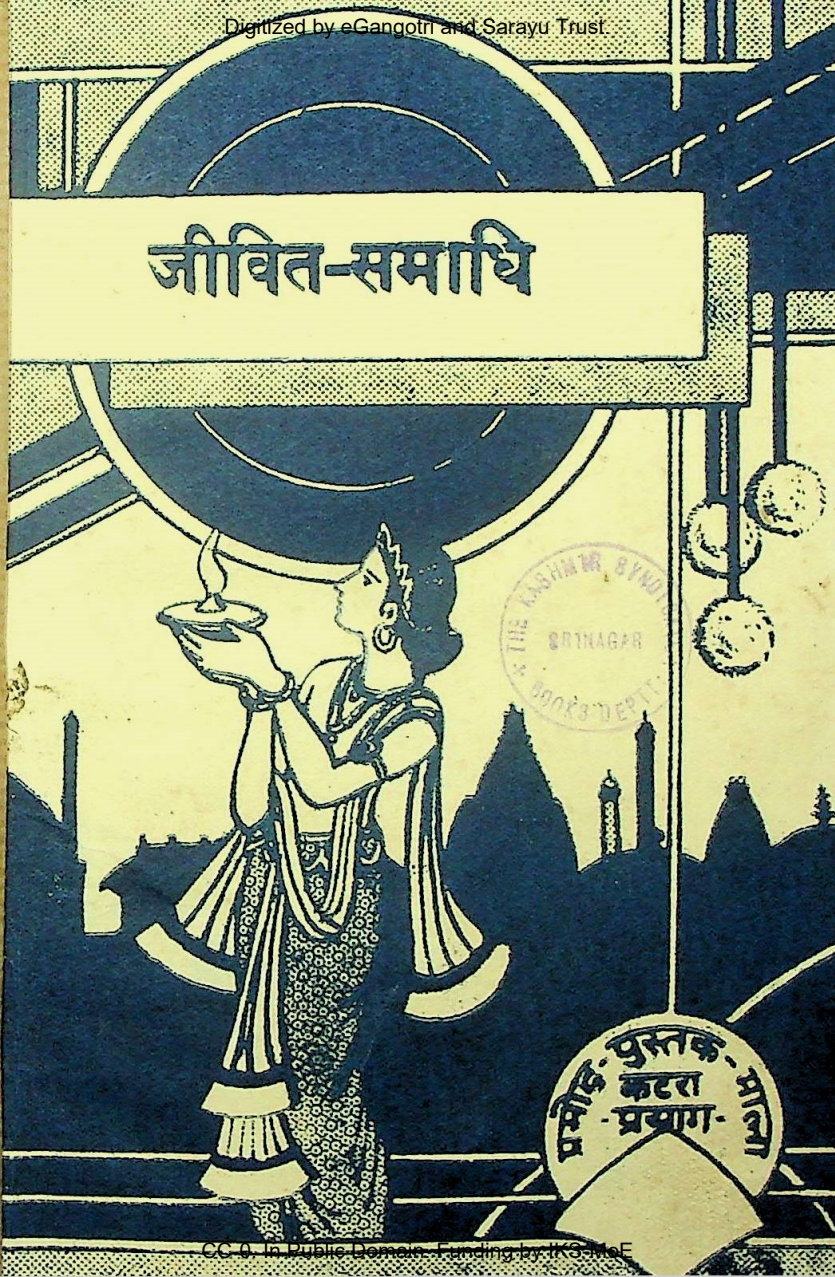

THE KASHMIR SYND... SRINAGAR BOOKS DEPT.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

जीवित-समाधि

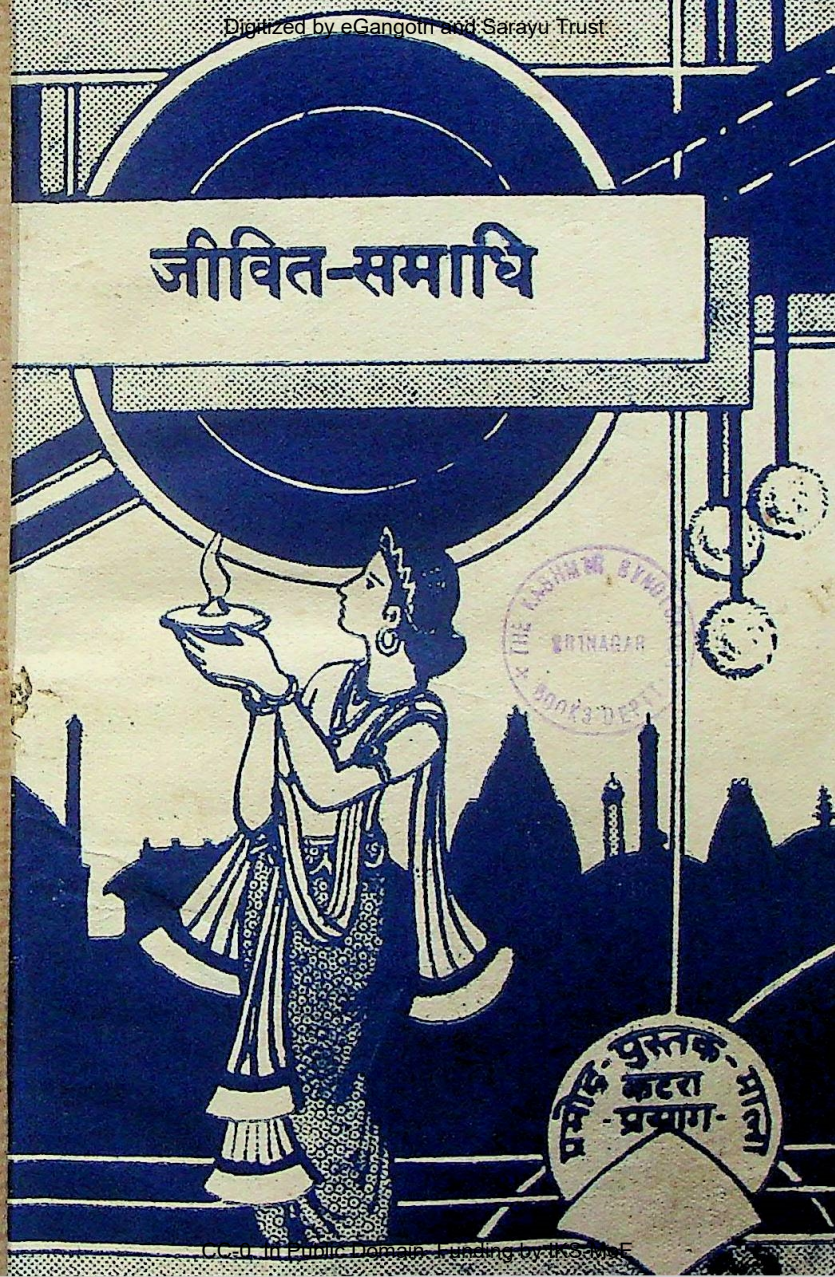

THE KASHMIR SYNDICATE
SRINAGAR
BOOKSELLERS

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS&MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीवित-समाधि

(मौलिक, सामाजिक उपन्यास)

लेखक

श्री अनंत प्रसाद विद्यार्थी, बी० ए०
स० संपादक 'देशदूत'

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

SPS
891.433 A 47 J
15344

प्रकाशक

प्रमोद पुस्तकमाला
यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद

मवार] अक्टूबर १९४३ मूल्य १॥)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकाशक—

पं० करुणाशंकर शुक्ल

प्रोप्राइटर—

प्रमोद पुस्तक माला,

यूनीवर्सिटी रोड, इलाहाबाद

acc: no: 15344

Dt 1-9-6

349 248

(सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन)

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

मुद्रक—

शिवनन्दन शर्मा

हिन्दी प्रेस, कटरा प्रयाग।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीवित-समाधि

—एक—

अध्यक्ष के कमरे से क्लर्क महोदय निकले तो सीधे दफ्तर में जाकर टाइप करने की मशीन पर बैठ गये। वर्षों के अभ्यास से अँगुलियाँ जैसे सध सी गई हैं। आँखें सामने रखे हुए काग़ज़ पर थीं, और 'की बोर्ड' पर अँगुलियाँ चल रहीं थीं, खट-खट-खट।

उमेश ने कमरे में प्रवेश किया तो देखा बाबू टाइप कर रहे हैं, सो निकट ही पड़ी कुर्सी खिसका कर बैठ गया। बाबू ने आहट पाई तो आँखें काग़ज़ पर से हटा कर एक बार उमेश की ओर देखा और फिर टाइप करने लगे, खट-खट।

उमेश क्षण भर इधर-उधर देखता रहा फिर 'फिज़िक्स' की किताब खोल कर कुछ पढ़ने लगा। आख़िर जब तक बाबू टाइप कर रहे हैं, तब तक वह बैठा-बैठा करेगा क्या? वह बी० एस-सी० का विद्यार्थी है।

पढ़ने वाला विद्यार्थी है, पर घर से अधिक ख़र्च तो उसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मिलता नहीं। सो ट्यूशन करनी पड़ती है, पढ़ने का समय कम मिलता है। सोचता है यह वर्ष किसी प्रकार समाप्त हो जाय तो वह कहीं नौकरी खोजे।

पढ़ रहा था, किन्तु मन लग न रहा था। आजकल उसके पास ट्यूशन नहीं है, खर्च की कमी पड़ रही है, सो चिन्तित रहता है। आज कालेज जा रहा था, तो रास्ते में रामशङ्कर मिल गया। उमेश को देख वह बाइसिकिल पर से उतर पड़ा और साथ-साथ चलने लगा। रामशङ्कर उमेश की परिस्थिति से परिचित है। सो चिन्तित देख पूछा—कहो, आजकल तुम चिन्तित अधिक दिखाई पड़ते हो।

उमेश अपने अभाव को किसी पर प्रकट नहीं करना चाहता। किन्तु करे क्या ? सो कहा—कोई विशेष बात नहीं है।

रामशङ्कर ने जैसे उसकी वेदना को पढ़ लिया हो, पूछा—तुम्हारे पास ट्यूशन करने के लिए समय है ?

समय भला क्यों नहीं होगा ? उसे रुपये की बहुत ज़रूरत रहती है, सो ट्यूशन तो करना ही होगा। उमेश को जैसे कोई सहारा मिल गया हो, वह बोला—हाँ, आजकल तो मेरे पास एक ही ट्यूशन है।

और फिर आशा भरी आँखों से एक बार रामशङ्कर की ओर निहारा।

'कल मैं 'केमेस्ट्री' विभाग के दफ़्तर में बैठा था, तो वह बाबू जो हैं वे एक विद्यार्थी से कह रहे थे कि उन्हें एक ट्यूटर की ज़रूरत है।'

'किसके लिए ?'

रामशङ्कर हँस पड़ा, बोला—तुम भी अजीब प्रश्न करते हो अरे यह मैं क्या जानूँ ? होगा कोई उनका लड़का ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'हुँ' कह कर उमेश कुछ देर सोचता रहा तो रामशङ्कर ने फिर कहा—आज तुम उनसे मिल लो पता चल जायगा।

'अच्छी बात है।' उमेश ने उत्तर दिया। यदि यह ट्यूशन भी मिल जाय तो उसका बड़ा काम चल जाय। उसकी कठिनाई दूर हो जाय। और फिर उसे यही वर्ष तो काटना है।

कालेज आ गया था। पहला 'पीरियड' अँगरेज़ी का होता है। रामशङ्कर मिस्टर कपूर के सेक्सन में है। तनिक सी देर हुई कि फिर मिस्टर कपूर किसी की हाज़िरी नहीं भरते। रामशङ्कर जल्दी-जल्दी बढ़ कर अपने क्लास में चला गया।

प्रोफ़ेसर उपाध्याय क्लास में सदा देर से आते हैं इसलिए उमेश धीरे-धीरे अपने सेक्शन के सामने पहुँचा। देखा तो प्रोफ़ेसर उपाध्याय हाज़िरी ले रहे थे। उमेश ने जैसे ही कमरे में प्रवेश किया कि प्रोफ़ेसर ने पुकारा—'नाइन्टी-सिक्स।'

'एस सर' चौंक कर उमेश ने कहा। 'नाइन्टी-सिक्स' उसी का 'रोल-नम्बर' है और जाकर एक कोने में बैठ गया।

प्रोफ़ेसर उपाध्याय बूढ़े आदमी हैं, पर पढ़ाते बड़े मनोयोग से हैं। विद्यार्थी उनका लेक्चर बड़े ही ध्यान से सुनते हैं। उस दिन प्रोफ़ेसर 'शेली' की काव्य-माधुरी के सम्बन्ध में भाषण दे रहे थे। उमेश ने कापी खोली; पेंसिल हाथ में ली, पर सुन वह कुछ नहीं पा रहा था। बैठता वह इसी बेंच पर रोज़ है, सब कुछ सुनाई पड़ता था, किन्तु आज उसे जाने क्या हो गया था कि उसका मन लेक्चर सुनने में न लगा। कागज़ पर वह झूठ ही पेंसिल चलाता रहा।

उसके दिमाग़ में ट्यूशन की बात घूम रही थी। कल कहा था। कौन जाने अब तक किसी को रख लिया हो। आजकल ट्यूटरों की कौन कमी! यूनिवर्सिटी के आधे विद्यार्थी तो ट्यूशन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करते है। एक बार सोचा व्यर्थ ही वह इस पीरियड में आया। सीधा बाबू के पास चला जाता। एक दिन की ग़ैरहाज़िरी से क्या बनता बिगड़ता था।

पीरियड समाप्त हुआ तो वह सीधा केमेस्ट्री विभाग के दफ्तर पहुँचा।

एक कागज़ समाप्त हुआ, तो बाबू ने दूसरा काग़ज़ लगा दिया। अभी शायद बहुत टाइप करना है। उमेश को लग रहा था कि बाबू की अँगुलियाँ जल्द चलने लगें जिससे उन्हें बात करने की छुट्टी मिले।

दूसरा कागज़ जब टाइप हो चुका तो बाबू उन्हें लेकर अपने स्थान पर आया। अभी वह कागज़ों को तरतीब से लगा ही रहा था कि मिस मीना आ धमकी। उमेश को उनका इस समय दफ़्तर में आना बहुत ही खला। मीना उमेश की सहपाठिनी है। उसके सामने वह बाबू से ट्यूशन के सम्बन्ध में कैसे बातें करेगा। सो कुरसी छोड़ कर पीछे हट आया।

मिस मीना ने कनखियों से उसकी ओर देखा और फिर मुस्कराती हुई क्लर्क से कुछ पूछने लगीं। उमेश तब तक आलमारी में लगी किताबें देखता रहा।

जब वे चली गईं, तो उमेश बाबू के निकट आ कर खड़ा हो गया। बाबू ने सिर उठाया, पूछा—कहिए ?

उमेश क्षोभ से जैसे हिल गया हो; आँखें नीची किये बोला—आप किसी ट्यूशन के सम्बन्ध में कह रहे थे।

भर-भर चलते पंखे की हवा से बाबू की एक लट माथे पर लटक आई थी; उसे ऊपर उठा कर बोले—जी हाँ, आप ठीक कहते हैं। मुझे एक ट्यूटर की ज़रूरत है। तो क्या आप करेंगे ?

'जी कर तो सकता हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाबू क्षण भर को रुके, कुछ जैसे वे उमेश में पढ़ना चाह रहे हों. फिर बोले—आप तो बी० एस-सी० फाइनल में हैं न ?

'जी हाँ।' उमेश ने उत्तर दिया, जैसे अपराधी हो।

'मेरी लड़की है। इस वर्ष इंटर में है. लेकिन वह 'फिज़िक्स' में बहुत कमजोर है।'

उमेश सोच रहा था; लड़की ! तो लड़की का ट्यूशन करना होगा। लड़की का ट्यूशन वह कभी नहीं करता। इसलिये नहीं कि उसे लड़कियों से घृणा है बल्कि उसका स्वभाव बड़ा संकोची है। अपनी माँ को छोड़ किसी भी स्त्री के सम्मुख बातें करने का उसे शायद ही कभी अवसर मिला हो। बड़े भाई हैं, उनका ब्याह हुए पाँच वर्ष हुए। पर भाभी के पास वह पाँच मिनट के लिए भी एकान्त में नहीं बैठा। कुछ उसका स्वभाव ही ऐसा है किन्तु रुपयों की उसे ज़रूरत है—बहुत ज़रूरत है। सो ट्यूशन तो करनी ही पड़ेगी। और कोई ट्यूशन मिल नहीं रही है। अगले महीने की फ़ीस भी देनी होगी।.....

वह ट्यूशन कर लेगा। कोई भी हो अपने को तो पढ़ाने से मतलब।

वह बोला—यदि आप उचित समझें तो मुझे रख लें। 'फिज़िक्स' मेरा विशेष विषय भी है।

'हाँ, हाँ आप कब से पढ़ाना शुरू करेंगे ?'

'कब से ?—जब से आप कहें।'

'तो कल ही से सही।'

'अच्छी बात है।' उमेश ने चिन्ता से मुक्ति पाते हुए उत्तर दिया।

'मेरा मकान आपको मालूम है ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'जी नहीं, पर आज शाम को आप के साथ ही चला चलूँगा। देख लूँगा।'

'हाँ, यह ठीक है।'

बाबू ने क़लम उठा ली तो उमेश उठ कर चला गया।

उमेश का पीरियड जल्दी ही समाप्त हो जाता है, सो आकर वह दफ़्तर में बैठ गया। बाबू को अभी चलने में देर थी, ख़ाली बैठे थे, सो उमेश से बातें करने लगे। सारा परिचय पूँछ डाला; कुछ शेष न रहा, तो अपना परिचय देने लगे। उमेश मूक सा प्रश्नों के उत्तर देता या उनकी बातें सुनता रहा। उसका सारा मस्तिष्क व्यस्त था अपनी नई शिष्या की कल्पना को ले कर।

घर पहुँच कर बाबू जी ने उमेश को बैठक में बिठाल दिया और आप अन्दर चले गये। एक छोटी लड़की अन्दर से आई; उमेश को देखा, तो झट आकर पास खड़ी हो गई; बोली—तुम मेरे लिए लेमनजूस लाये हो ?

अजीब भोली सी लड़की है। उमेश को बड़ी प्रिय लगी सो गोद में उठा लिया; गालों पर थपथपाते हुए कहा—मुझे नहीं मालूम था कि तुम यहाँ मिलोगी, नहीं तो ज़रूर लेता आता। अब कल आऊँगा तो ले आऊँगा।

'तो कल तुम आओगे ज़रूर ?'

'ज़रूर।'

'लेमनजूस भी लाओगे ?'

'हाँ।'

लड़की प्रसन्नता से हँस पड़ी। तभी बाबू साहब ने कमरे में प्रवेश किया। उनके पीछे सत्रह-अठारह वर्ष की एक लड़की थी; हल्के हरे रङ्ग की साड़ी पहन रखी थी। पहली ही दृष्टि में उमेश ने देखा नाटा क़द है पतला-दुबला सा शरीर, गोरा रङ्ग और आँखें

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बड़ी-बड़ी, भाव-पूर्ण हैं। कानों में सोने के बुंदे लटक रहे थे, जो कपोलों के रङ्ग में ऐसे मिल से गए थे कि पहचानना कठिन हो रहा था।

तो शायद इन्हीं को पढ़ाना होगा; उमेश ने सोचा, तभी निकट आ धीरे से कहा—नमस्ते।

उमेश कुछ अचकचा सा गया, फिर दोनों हाथ उठा दिये किन्तु मुँह से कुछ न कहा।

सामने तख्त पड़ा था, उसी के एक कोने में बैठ गई जैसे और कहीं जगह ही न हो, और आँखें नीची किए कलाई में पड़ी चूड़ियाँ फेरने लगी।

क्या कहना चाहिए उमेश को। वह सोच ही रहा था कि बाबू साहब ने कहा—'यही हैं आप की स्टूडेण्ट।'

'जी।'

और फिर छोटी लड़की को उमेश से लिपट कर खड़ी देख बोले—रमा ओ तू बिल्ली सी यहाँ कहाँ आ गई?

'बाबू जी ये कल फिर आयेंगे तो मेरे लिए लेमनजूस लायेंगे।' बालिका ने सगर्व पिता से कहा।

उमेश ने देखा उसके विद्यार्थी के अधर नीचे ही नीचे मुस्करा उठे और आँखें नाच उठीं।

पिता ने हँस कर कहा—तू भी किसी को कुछ देती है या सब से माँगती ही रहती है?

बालिका ने उमेश की ओर देखा, तो वह बोला—कल तुम्हारे लिए लेमनजूस ज़रूर लायेंगे।

पिता फिर अन्दर चले गए तो उमेश चुप बैठा रहा, बालिका की ओर देखता हुआ। फिर सोचा, कुछ पूछना तो चाहिए ही—इसलिए पूछा—आपने कौन कौन से विषय लिये हैं?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'गणित और केमेस्ट्री' उसने आँखें नीचे किये हौले से उत्तर दिया।

अब क्या पूछे उमेश, सो फिर चुप हो गया। तभी अंदर से पुकारा किसी ने—रमा ?

छोटी लड़की दौड़ती हुई भीतर भाग गई। अकेले बैठे-बैठे उमेश को कुछ वैसा-सा लग रहा था और एक यह लड़की है, जो जैसे पत्थर की हो। कैसे पढ़ायेगा वह इस लड़की को।

उमेश ने लड़कियों की जो कल्पना की थी, उससे तो यह लड़की भिन्न जान पड़ रही थी। सोचा था, लड़कियाँ बड़ी चंचल हुआ करती हैं, पर यह तो बात भी नहीं कर सकती। उमेश सोच रहा था और वह अपने आँचल का कोर ऐंठ रही थी।

पिता कमरे में आये तो बोले—अरे तू अभी तक बैठी ही है। मास्टर साहब के लिए कुछ जल पान तो ले आ। आज बेचारे कालेज से यहीं चले आये हैं।

उठ कर अन्दर चली गईं। तो उमेश ने कहा—आप व्यर्थ का कष्ट कर रहे हैं। मुझे इस समय जलपान करने की आदत नहीं है।

'अजी वाह, दिन भर के काम के बाद इस समय यदि कुछ जलपान को न मिले तो भी कोई बात है।' बाबू जी बोले।

उमेश ने सोचा, जैसे वह रोज़ जलपान करता ही तो है।

जलपान आ गया। छोटी मेज़ खिसका; उमेश के सामने रख दी और उस पर जलपान की तश्तरियाँ रख दी गईं। तो उमेश ने देखा—मिठाई; नमकीन, फल बहुत ढेर सारा तो है। यह सब खा लेने के बाद तो वह शाम का खाना खा नहीं सकता। उमेश बैठा रहा तो उसने धीरे से कहा—खाइए।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमेश की आवाज़ खुली—इतना ढेर सारा है। आप और निकाल लें।

उसने एक बार उमेश की ओर दृष्टि डाली, फिर उसी प्रकार खड़ी रही। कैसे कहे उमेश कि और निकाल लो क्षण भर प्रतीक्षा करके एक मिठाई उठा कर मुँह में डाल ली।

अब तक का खड़ा पत्थर हिला और भीतर चला गया। गिलास में पानी आकर रख गया तो उमेश ने कहा—आप व्यर्थ कष्ट उठा रही हैं, बैठिए।

आज्ञा का पालन हुआ और वह तख़्त की बाट पर बैठ गई। उमेश आँखें नीची किए खाता रहा पर जैसे यह सब कुछ गले से उतर न रहा हो।

उस दिन पढ़ाई नहीं हुई, पर उमेश ने किताबें देख लीं। दूसरे दिन सात बजे शाम को आने को कह जब वह चलने लगा तो किवाड़ों की आड़ में हट वह बोली—नमस्ते।

नमस्ते की बात शायद उमेश भूल गया था, नहीं तो स्वयं न नमस्ते कर लेता। नमस्ते कह कर जब वह गली में उतर आया तो ऐसा जान पड़ा जैसे कोई भारी बोझ उस पर से उतर गया हो।

सीधे अपने 'लाज' की ओर चला। सोच रहा था, आदमी अच्छे जान पड़ते हैं, कितनी शिष्टता है और कितना सारा तो जलपान के लिए रख दिया था। बड़ी सँकोची लड़की जान पड़ती है। इतनी देर बैठी रही, परन्तु एक बार भी आँखें ऊपर नहीं उठाईं। बोलना तो जैसे जानती ही नहीं। राह भर वह उसकी प्रशंसा करते डेरे पर पहुँचा किसी गीत की भूली-भटकी पंक्ति गुनगुनाते हुए, ताला खोल कमरे में प्रवेश किया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—दो—

उस दिन प्रातः उठ कर उमेश ने 'फिज़िक्स' की किताब के आरम्भ के अध्याय को ध्यान पूर्वक पढ़ा, पढ़ाना जो होगा न और फिर इंटर की बात ठहरी। शाम कालेज से लौटने पर उसने फिर एक बार सोचा किस प्रकार वह विषय को आरम्भ करेगा; किस प्रकार समझायेगा।

साढ़े छः बजने आये तो वह उठा और चल दिया; गली के मोड़ पर आया तो सोचा जल्दी तो नहीं आ गया, फिर धड़कते हृदय से दरवाज़े पर थपकी दी, तो चट दरवाज़ा खुल गया। सामने तख़्त पर किताबें खुली हुई रखी थीं; कुरसी सामने रक्खी थी। नमस्ते कर वह कुर्सी पर बैठ गया, तो वह भी बैठ गई; किनारे पैर लटका कर। क्षण भर रुक कर उमेश ने कहा—तो हम शुरू से ही चलें या जैसी आप ज़रूरत समझें।

कापी उसने अपने सामने खींच ली और 'फिज़िक्स' की किताब उमेश के सामने खिसकाते हुए धीरे से बोली—जैसा आप उचित समझें।

किताब उसी तरह पड़ी रही, तो उमेश ने क्षण भर रुक कर कहा—मैं समझता हूँ शुरू से ही किया जाय। अब आप को कुछ समझना हो तो पूछ सकती हैं।

'अच्छा।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उमेश ने पढ़ाना आरम्भ किया, तो वह नोट लेने लगी। बार बार उसकी दृष्टि किताब की ओर जाती और फिर वह लिखने लगती। शायद सोच रही थी कि इन्हें क्या किताब की ज़रूरत न पड़ेगी।

पढ़ाई समाप्त हो गई, तो उसने अनुभव किया 'फिज़िक्स' उसे अभी तक इतनी समझ में नहीं आया था; अब वह अवश्य ही पास हो जायगी। कितना अच्छा अध्ययन है अपने विषय का मास्टर साहब को।

उमेश ने पूछा—सब समझ में आगया। कुछ पूछना तो नहीं है ?

क्या पूछे वह; सब तो समझ में आ गया। सो उत्तर दिया—कुछ नहीं।

'कुछ नहीं' सब समझ में आ गया ?

'जी।'

कापी उसने बन्द कर दी, तो उमेश ने देखा, कापी के कोने पर लिखा है—नलिनी। और कालेज का नाम भी।

अच्छा, तो नाम नलिनी है। पर उसे नाम को जान कर करना क्या है ?

चलने लगा तो बोला—फिज़िक्स बहुत सरल विषय है, पर इसके लिए लिखने का अभ्यास होना आवश्यक है। यदि आप रोज जो पढ़ें उसे लिख डाला करें तो अच्छा हो।

उसने कोई उत्तर न दिया, किन्तु दूसरे दिन जब वह पढ़ाने गया, तो नलिनी ने सामने कापी खोल कर रख दी। उमेश ने देखा; कल जो उसने पढ़ाया था वही लिखा हुआ था। कापी उसने उठा ली और एक सरसरी दृष्टि से पढ़ गया। बहुत अच्छा लिखा था; उसने जितनी बातें बताई थीं कोई भी नहीं छूट सकी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थी, जैसे उसका सारा लेक्चर ही उतार कर रख दिया गया हो। मुंह से निकल पड़ा—बहुत सुन्दर लिखा है, जान पड़ता है आप कमज़ोर नहीं हैं।

नलिनी के अधरों पर मुस्कान खेल गई, पर उत्तर उसने कुछ न दिया। पढ़ाई फिर शुरू हो गई।

कई दिन बाद नलिनी के पिता ने पूछा—कहिए मास्टर साहब पढ़ाई कैसी चल रही है, तो उमेश ने बड़े उत्साह से कहा बहुत अच्छी; यदि यह इसी प्रकार मेहनत करती रहीं, तो केवल पास ही हो जाना निश्चित नहीं है, बल्कि डिवीज़न लाने में भी सहायता मिल सकती है।

नलिनी की आँखें खिल गईं।

रमा के लिए उमेश रोज़ एक पैसे का लेमनजूस ले आता है। और रमा रोज़ उसके आते ही पहुँच जाती है। पर आज जब वह न आई तो उमेश ने पूछा—रमा नहीं आई ?

'माँ के साथ चाचा जी के यहाँ गई है।'

उमेश चुप हो गया। पढ़ाई चलने लगी, पर थोड़ी देर बाद उमेश ने बीच में ही पूछ लिया—तुम्हारे चाचा भी यहीं कहीं रहते हैं क्या ?

'जी हाँ।'

कुछ सोचता रहा, फिर पढ़ाने लगा।

पढ़ाई समाप्त ही होने को थी कि रमा माँ के साथ बाहर से आई। साथ में नौकर था। माँ को देख उमेश खड़ा हो गया, दोनों हाथ जोड़ नमस्ते किया. तो माँ का स्नेह उभर सा आया। आशीर्वाद दे कर नलिनी के निकट ही बैठ गईं। रमा उमेश के पास आ खड़ी हुई तो उसने लेमनजूस की पुड़िया निकाल कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके हाथ में दे दी। माँ ने देखा तो हँस कर बोलीं—यह रमा बड़ी शैतान है। आप को व्यर्थ ही रोज़ परेशान करती है।

रमा लेमनजूस खा रही थी। उमेश ने सिर नीचे किए कहा—व्यर्थ क्यों है; बच्ची जो ठहरी!

माँ हँसती रहीं। यह मास्टर बहुत सीधा है।

उमेश शीघ्र ही घर का आदमी हो गया। माँ उसका बहुत ध्यान रखती हैं; कहती हैं बेचारा सीधा लड़का है; अपने मां बाप से दूर यहाँ पढ़ने के लिए पड़ा है; उसका यहाँ और है कौन? सो बहुधा उसे नलिनी के यहाँ ही भोजन करना पड़ता है। उमेश को यह सब बहुत बुरा लगता है पर माँ के अनुरोध को वह टाल जो नहीं पाता। उसकी माँ भी तो उससे इसी प्रकार अनुरोध करती है। सो उमेश जब बाध्य हो जाता है, तो नलिनी को हँसी आ जाती है। अजीब संकोची आदमी हैं।

कालेज में दशहरे की छुट्टियाँ हो गईं सत्रह दिन की। उमेश घर नहीं जायगा। उसे दो ट्यूशन करनीं पड़ती हैं। कोई इतने दिन की छुट्टी कैसे दे सकता है! सो न जाना ही तै किया। 'लाज' के सब लड़के चले गए। अकेले रह गया, सो नौकरों को भी छुट्टी दे दी गई। उसके अकेले के लिए इतने नौकर-चाकर कैसे रह सकते हैं, उस दिन खाना उसने बाज़ार में खाया, सो नलिनी के यहाँ पहुँचने में देर हो गई। नलिनी बैठी प्रतीक्षा कर रही थी। उमेश जाकर चुपचाप पढ़ाने लगा। फिर बीच में पूछ पड़ा—तुम्हारा कालेज बन्द हो गया?

'जी नहीं, परसों से होगा।'

'अच्छा' वह फिर पढ़ाने लगा; पर पढ़ा अधिक देर न सका था कि बोला—एक गिलास पानी तो मँगाना।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नलिनी भीतर चली गई। माँ खाना बना रही थीं; सुना मास्टर साहब पानी माँग रहे हैं, तो बोलीं—बुला लो खाना खालें।

नलिनी बिना पानी लिए बाहर आई, तो उमेश को कुछ संदेह हुआ, पूछा—पानी नहीं लाईं।

नलिनी ने संकोच से उत्तर दिया—माँ कह रही हैं, खाना खा लें।

उमेश को हँसी आ गई। बोला तुमसे पानी माँगना भी मुश्किल है। अरे भाई, मैं खा कर आया हूँ तभी तो पानी की ज़रूरत पड़ रही है।

'तो फिर खा लीजिए।' साहस कर नलिनी ने कहा।

उमेश ज़ोर से हँसा; फिर गम्भीर हो बोला तुमने पिछली कक्षाओं में स्वास्थ्य-विज्ञान तो पढ़ा होगा।

'जी!'

'कितनी देर लगती है, भोजन को पचने में?'

मुस्करा कर नलिनी ने कहा—आध घंटा।

उमेश चुप; फिर बोला—तुम पिछली कक्षाओं का सारा ज्ञान भूल गईं। यदि मैं तुम्हारे कालेज का अध्यक्ष बना दिया जाऊँ, तो तुम्हें फिर तीसरे दर्जे में भेज दूँ।

देर होती देख माँ स्वयं आ गईं; बोलीं—आइए मास्टर साहब, खाना खा लीजिए।

'पर मैं तो खाना खा कर आया हूँ माँ।'

'खा कर आए हो! इतनी जल्दी खाना तैयार कर देने वाला तुम्हारे 'लॉज' में कौन है?' माँ ने कहा।

उमेश अप्रतिभ हो कर बोला 'लॉज' में नहीं; वहाँ के तो सब लड़के और नौकर छुट्टी पर चले गए। मैं तो अभी आते हुए बाज़ार से खाता आया हूँ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'बाजार से।' माँ ने आश्चर्य से पूछा। नलिनी ने दाँतों तले अँगुली दबा ली। माँ कहती गईं—बाजार से भला, खाने की क्या जरूरत थी? क्या यहाँ खाना नहीं बनता?

उमेश को अपनी भूल पर खेद हुआ। उसे यह नहीं बताना चाहिए था। तो बोला—अरे! ऐसी जरूरत ही क्या थी?

'जरूरत क्यों नहीं थी? खैर, अब कल से दोनों समय आप यहाँ आ कर खाना खा जाया कीजिए।'

उमेश के लिए यह एक कठिन काम है। पर माँ को वह क्या उत्तर दे। कुछ न बोला; माँ भीतर चली गई; पानी आ गया; पीकर फिर पढ़ाने लगा, तो थोड़ा रुक कर बोला—माँ से कह देना ऐसा मैं नहीं कर सकता। मेरे पास ट्यूशन है इसलिए मैं घर नहीं जा पा रहा हूँ, पर खाने का प्रबन्ध मैंने आज से एक होटल वाले के यहाँ कर लिया है।

'तो उसे खत्म कर दीजिए।'

'क्यों?'

'क्योंकि जब अपने विद्यार्थियों के लिए आप रुक रहे हैं, तो उनका क्या इतना भी कर्तव्य नहीं है।'

'तुम बेवकूफ हो। मैं कहता हूँ, मैं यह नहीं कर सकता।'

'तो माँ से कहिए; मुझसे क्यों कह रहे हैं।' नलिनी ने थोड़ा रुक कर कहा।

'अच्छा पढ़ो, देखा जायगा।' उमेश ने कहा और पढ़ाई शुरू हो गई।

उस दिन जब चलने लगा, तो नलिनी ने पूछा—कल सुबह कै बजे आइएगा।

'सुबह मैं नहीं आऊँगा।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'खाना आप के डेरे पर भिजवा दूंगी।'

'नहीं इसकी आवश्यकता नहीं है।'

'पर जब आप न आयेंगे तो मुझे खाना भिजवाना ही पड़ेगा।' नलिनी ने उत्तर दिया।

उमेश अजीब परेशानी में पड़ गया। क्या उत्तर दे। नलिनी की बातों पर आज उसे आश्चर्य हो रहा था। इतना तो कभी वह बोलती नहीं थी; फिर आग्रह पूर्वक कहा—नलिनी, मेरा कहना मान लो; यह नहीं कर सकता मैं।

नलिनी क्षण भर तक मास्टर की आँखों को देखती रही; इतना आग्रह नलिनी ने आज तक किसी से नहीं किया; बोली—तो फिर आप घर चले जाँय।

कुछ उत्तर न दे उमेश चला आया, किन्तु उस दिन वह कुछ पढ़ न सका। चारपाई पर पड़ा-पड़ा वह सोचता रहा। यह नलिनी उससे क्यों इतना आग्रह करती है। यह लोग मानने के नहीं; और सम्भव है कल वह सुबह न जाय तो नलिनी खाना भिजवा दे। क्या करे वह ? अपने ऊपर उसे खीझ आ रही थी। कुछ निर्णय वह नहीं कर सका।

दूसरे दिन सुबह से ही वह चिन्ता में पड़ा था कि क्या करना चाहिए। नौबजे के लगभग नहाने जा रहा था कि नलिनी का नौकर आ गया। उसे देख उमेश जैसे भयभीत हो उठा हो। नौकर ने कहा बाबू जी आप को बहू जी ने बुलाया है।

क्षण भर तक सोचता रहा उमेश फिर बोला अच्छा चलो मैं नहा कर आता हूँ।

'जी उन्होंने कहा साथ लेते आना।'

उमेश क्या उत्तर दे। यह नलिनी विश्वास नहीं करती कि मैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने से आ सकूँगा। धोती तौलिया लिए वह गुसलखाने में चला गया।

रास्ते भर सोचता रहा, चल कर नलिनी को खूब डाँटूँगा। अजीब लड़की है, पर जब घर पहुँचाती नलिनी दिखाई न दी। पिता जी कहीं गए थे। माँ ने उमेश को भीतर ही बुला लिया। उमेश जब बैठ गया, तो पूछा—नलिनी कहाँ है ?

तभी ऊपर से नलिनी आ गई; मास्टर साहब को देखा तो मुस्करा दी। नहा कर आ रही थी; गीले बालों की लटें गले से लिपट रही थीं। मास्टर साहब ने देखा तो उन्हें कुछ वैसा सा लगा।

माँ ने कहा—नलिनी मास्टर साहब को खाना खिला दे।

नलिनी ने फिर एक बार मास्टर साहब की ओर देखा-मानो कह रही थी आखिर मेरी ही विजय हुई न ?

उस दिन उमेश बहुत अधिक खाना खा गया। चलने लगा तो माँ ने कहा—यदि वहाँ कोई काम न हो तो यहीं आराम करो। अकेले तो होगे अपनी किताबें भी आज लेते आना शाम को।

'नहीं' उमेश ने कहा और आँगन पार कर बाहर के कमरे में आया। नलिनी दरवाजा बंद करने के लिए पीछे-पीछे आ रही थी; उमेश ने पीछे फिर उसको देखा तो कहा—नलिनी आखिर तुम अपनी ज़िद पूरी कर के ही रहीं।

नलिनी मुस्करा दी। उमेश ने भी मुस्करा दिया।

——

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तीन

दिन भर धूप में मारा-मारा फिरता रहा; सो शाम को जब वह नलिनी के यहाँ पहुँचा तो उसका सिर दर्द कर रहा था। पढ़ाने में उसकी तबीयत न लग रही थी। नलिनी ने अनुभव किया तो पूछा—आज आप की तबीयत ठीक नहीं है क्या ?

बात उमेश ने टालनी चाही, पर नलिनी की ओर देख कहना ही पड़ा—हाँ, आज थक अधिक गया हूँ और दिन भर धूप में रहने के कारण सिर में दर्द भी होने लगा है।

'दिन भर धूप में, क्वार की धूप !' नलिनी के मुंह से निकल गया।

उमेश ने कुछ उत्तर नहीं दिया। नलिनी ने कापी बंद कर दी, बोली—आज न पढ़ाते तो शायद मैं पास न हो सकती !

खाना भी उस दिन उमेश अच्छी तरह न खा सका। रात जब घर लौट कर पहुँचा तो तबीयत अधिक भारी मालूम हुई; कुछ सर्दी सी लगी और थोड़ी देर बाद बुखार चढ़ आया।

रात भर वह बुखार में पड़ा रहा। सुबह हुई तो बुखार कुछ कम हो गया था; पर उसे बड़ी कमज़ोरी महसूस होने लगी थी; सो उसी प्रकार चारपाई पर पड़ा रहा।

15344

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोज़ की भांति जब उस दिन उमेश सुबह साढ़े नौ बजे पहुँचा तो नलिनी ने नौकर को भेजा। जाने क्यों उसे बार-बार संदेह हो रहा था कि मास्टर साहब की तबीयत आज ठीक नहीं। सो जब नौकर ने आकर बताया कि मास्टर साहब तो बुखार में पड़े हैं, तो नलिनी सन्न रह गई।

इस अनजाने मास्टर के लिए उसके हृदय का रक्त जाने क्यों खट-खट करके बज उठा।

माँ ने सुना तो कहा—जा नलिनी देख आ; न हो यहीं लिवा ला। आखिर बेचारा वहाँ किसके भरोसे पड़ा है?

नलिनी ने कुछ उत्तर न दिया। जल्दी-जल्दी अपने कमरे में पहुँची, कपड़े बदले और फिर नौकर को साथ ले चल दी मास्टर साहब के यहाँ।

किवाड़ खुले थे, पर मास्टर साहब सो रहे थे; एक ऊनी चादर ओढ़े हुए थे। क्षण भर तक द्वार पर ही नलिनी रुकी; शायद आहट पा जग जाँय, फिर कमरे में जा मास्टर साहब के सिरहाने खड़ी हो गई; माथे पर हाथ रखा, तो जैसे तवे पर पड़ गया हो। नलिनी को बड़ी व्यथा सी लगी, पट्टी के कोने पर बैठ कर हाथ धरे रही।

क्षण भर बाद ही मास्टर साहब ने करवट ली, व्यथा से कराह कर; तो माथे पर कुछ शीतल सा अनुभव कर उन्होंने आखें खोल दीं। नलिनी को देख उन्हें आश्चर्य हुआ। उठने का प्रयत्न किया तो नलिनी ने हाथ से रोक कर कहा—पड़े रहिए; कष्ट करने की आवश्यकता नहीं।

लेट गए तो एक टक नलिनी की ओर देखते रहे; नौकर बाहर था। सो नलिनी ने आखें फेर बाहर को देखा, फिर बोली—इतनी तबीयत ख़राब थी, और ख़बर भी नहीं भेजी।

14621

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'किससे भेंजता ?' मास्टर साहब ने उत्तर दिया।

नलिनी को लगा जैसे उसे यह प्रश्न न करना चाहिए था। मास्टर साहब के क्या कोई नौकर बैठा है। सोचती रही कि मास्टर साहब ने कहा—तुम व्यर्थ ही आईं; नौकर से तो मैंने कह दिया था कि अब तबीयत ठीक हो रही है। शाम तक शायद अच्छी हो जाय।

नलिनी को बड़ी व्यथा हो रही थी, पर मास्टर साहब की बातों पर हँसी आगई; इतना तो बुखार हो रहा है और कहते हैं अच्छी हो रही है। बोली—आप को लेने के लिए आई हूँ।

'मुझे ? क्यों ?' मास्टर साहब ने आश्चर्य से पूछा।

'इस लिए कि आप बीमार हैं; यहाँ आप की देख-भाल कौन करेगा ? देखती हूँ शायद दवा भी नहीं आई।'

'अरे तो दवा के योग्य जब कोई बीमार हो तब न। कल थक गया था, धूप लग गई थी, शाम तक ठीक हो जायगी।'

'तो, शाम तक चले आइएगा।'

सूखे हुए अधरों पर हँसी आगई, बोले—नलिनी तुम मुझे बहुत मजबूर किया करती हो।

मास्टर साहब का कहना कुछ उसे अच्छा लगा। जी में आया कि वह सदैव ही उन्हें इसी तरह मजबूर करती रहे और वे इसी तरह उलाहना देते रहें।

मास्टर साहब नलिनी के यहाँ आ गए, पर बुखार न उतरा। नलिनी को बड़ी चिन्ता हो रही थी; बराबर वह मास्टर साहब भी परिचर्या में लगी रहती, पर जान पड़ता जैसे वह उनके लिए कुछ भी तो नहीं कर पा रही है। मास्टर साहब देखते तो दर्द से भर उठते। नलिनी उनके लिए यह सब कष्ट क्यों उठा रही है; पर कोई समाधान न होता।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस दिन बुख़ार कुछ उतर गया था मास्टर साहब लेटे हुए थे। नलिनी दूध लेकर आई तो वे उठने का प्रयत्न करते हुए बोले—नलिनी तुम मेरे लिए जो कर रही हो, वह कोई अपना भी नहीं कर सकता।

काश! मास्टर साहब समझ लेते कि नलिनी भी तो उनकी अपनी ही है।

नलिनी कुछ न बोली, सिर नीचे डाल खड़ी रही; दूध का गिलास बढ़ाते हुए कहा—पी लीजिए।

मास्टर साहब ने गिलास ले लिया, बोले—तुम्हारे इस उपकार से मैं जन्म भर उऋण नहीं होऊँगा नलिनी।

नलिनी का दिल भर आया। मास्टर साहब दूध पी रहे थे; उसकी आँखें छलक आईं। मास्टर साहब गिलास देने लगे तो उनकी आँखों से दो बूँद आँसू छलक आये।

'नलिनी!' उन्होंने कहा और उनका गला रुँध गया।

नलिनी ने मुँह फेर आँचल के कोर से आँखें पोंछ लीं और गिलास लिए कमरे से बाहर चली गई।

मास्टर साहब कटे-वृक्ष से फिर गिर पड़े।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—चार—

परीक्षा समाप्त हो गई, पर उमेश घर नहीं गया। नलिनी के यहाँ वह रोज जाता है। कुछ ऐसा मोह सा ही हो गया है उसके परिवार से। उस दिन बैठा था; माँ से बातें हो रही थीं, तो माँ ने कहा—'मास्टर साहब, आप घर कब जाओगे'?

'घर अभी जाने का तो इरादा नहीं है। सोचता हूँ अगले वर्ष आगे न पढ़ूँगा, सो किसी नौकरी की खोज भी तो करनी है।'

क्षण भर चुप रह माँ ने कहा—'जाना हो तो इधर ही हो आओ, नहीं फिर शायद नलिनी का ब्याह तै हो गया, तो सब काम तुम्हारे ही ऊपर रहेगा। बाबू जी को तो तुम जानते ही हो कि उन्हें ऐसे कामों से बड़ी परेशानी मालूम होती है।'

नलिनी का ब्याह! मास्टर साहब को कुछ क्लेश सा हुआ। पर आखिर यह क्लेश का विषय क्यों? नलिनी पर उनका अधिकार क्या है? सो मन की बात दबा कर बोले—'अच्छा, तो कहीं बात तै हो गई क्या माँ'?

'अभी नहीं, पर शायद तै हो जायगी। बात चल रही है।'

मास्टर साहब गम्भीर हो गए—'लड़का कैसा है?'

'अच्छा है, बनारस में इञ्जीनियरी पढ़ता है। तेइस-चौबीस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

साल की उम्र है। घर के खाते-पीते हैं। उनके एक चाचा यहाँ हैं; उन्हीं के द्वारा बात-चीत चल रही है।'

उस दिन उमेश अधिक देर तक न बैठा, चला आया। पर रात भर नींद नहीं आई। सोचता रहा, नलिनी के ब्याह की बात से उसे आख़िर इतनी चिन्ता क्यों? वह उसका होता कौन है; न वह उसकी जाति की न कुछ! आख़िर यह मोह क्यों, पर समाधान वह अपने हृदय का न कर सका।

दूसरे दिन नलिनी के यहाँ जाना चाहा पर जी न हुआ। दो तीन दिन बीत गए, पर न जा सका। जब जाने को करता तो उसे जाने कौन सी शक्ति रोक देती। सो आख़िर न गया।

उस दिन शाम को कहीं न गया था। तबीयत उचटी-उचटी सी थी, सो एक पुस्तक लेकर पढ़ने का प्रयत्न करने लगा। उसका यह कमरा बहुत गरम रहता है। किताब बन्द करके रख दी। दरवाज़े से बाहर अवसान लेती हुई किरणों को देखता रहा।

तभी नलिनी ने कमरे में प्रवेश किया—अकेले। देखा तो जान पड़ा, उस पर कोई विपत आ गई हो—चेहरा कुछ ऐसा ही दीख रहा था। आ कर वह खड़ी हो गई, तो घबरा कर आश्चर्य से पूछा—'क्या बात है नलिनी, अकेले कैसे?'

नलिनी ने कुछ उत्तर न दिया। आँसू झर-झर कर गिरने लगे। मास्टर साहब का हृदय व्यथित हो उठा; पास आ बोले—'क्या बात है नलिनी?'

हाथ उनका नलिनी के सिर पर था। नलिनी की व्यथा जैसे फट पड़ी हो; मास्टर साहब के पैरों पर गिर कर वह ज़ोर से रो पड़ी।

मास्टर साहब ने, उठाया तो उसने अपना सिर उनकी छाती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में छिपा लिया। बड़ी देर बाद जब नलिनी कुछ शांत हुई तो मास्टर साहब ने कारण पूछा। नलिनी ने बताया उसका विवाह निश्चित हो गया पर वह किसी से विवाह न करेगी, एक बार जिसे अपने को सौंपने का निश्चय कर लिया; उसी की हो कर रह सकती है।

और नलिनी के इस समर्पण का पता उमेश आज पा सका। क्षण भर सोचता रहा, अपना कर्तव्य। सहसा उसकी आकृति कठोर हो गई, बोला—'नलिनी तुमने भूल की मेरे पास आ कर। माना कि तुमने मुझे अपना हृदय दे दिया, पर क्या कभी सोचा कि दान लेने वाले को भी वह स्वीकार है या नहीं। हमारे सामने समाज है; आर्थिक अन्तर है। मैं तुम से बहुत दूर हूँ, तुम्हें कभी न मिलने वाला हूँ, जैसे कभी नदी के दो कूल पर जाते हुए राही, जिनमें नदी पार करने का साहस न हो। मैं तुम्हारा अध्यापक हूँ, मेरा आदेश है जाओ और व्यर्थ में अपने को और मुझे भी बदनाम न करो।'

नलिनी ने एक बार गीली आँखें ऊपर उठाईं। मास्टर का चेहरा कठोरतर होता जा रहा था। आँखें बह चलीं तो उन्हें पोंछती हुई वह कमरे से बाहर चली गई।

मास्टर अब तक अपनी वेदना को छिपाये था, पर अब फूट-फूट कर रो उठा। आज उसे अनुभव हुआ कि नलिनी को वह कितना प्यार करने लग गया है। किन्तु कर्तव्य भी तो कोई चीज़ है।

उसी रात मास्टर साहब कहीं चले गए।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—पाँच—

बाहर वर्षा की फुहार हो चुकी थी। आसमान में बादल के टुकड़े इधर-उधर उड़ रहे थे; बाहर पेड़ों पर हरियाली छा गई थी। आसमान के सूर्य की पीली किरणें पिघले सोने की भाँति बह रहीं थीं। इंजीनियर राजदेव अपने कमरे में बैठे हुए बाहर का दृश्य देख रहे थे। कमरे से उठकर वे हाल की कोच पर जाकर लेट रहे। नौकर ने जैसे उनका इशारा समझ लिया हो। झट एक बोतल और काँच का गिलास लाकर सामने रख दिया। राजदेव ने गिलास में शराब उड़ेली और पीने लगे। नौकर क्षणभर खड़ा रहा; फिर चला गया।

राजदेव का यह नित्य का क्रम है। संध्या को दफ्तर से आने के पश्चात वे बैठ कर शराब पीते हैं। उसके बाद फिर जो घर से निकलते हैं तो बारह-एक बजे रात के पहले नहीं आते। नलिनी जब से इस घर में आई है उसे यही सब देखना पड़ रहा है। पति की ओर से उसे कभी सुख न मिला। कभी राजदेव को क्षण भर उसके पास बैठ कर बात करने का अवसर ही जैसे नहीं मिलता।

राजदेव शराब पीता रहा; जब एक गिलास समाप्त हो गया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तो उसने एक सिगरेट जलाई और पीने लगा तभी नौकर ने आकर कहा—'साहब, वर्मा बाबू आये हैं ?'

'बुला न लाओ'—राजदेव ने उत्तर दिया तो नौकर उन्हें लेने बाहर चला गया।

वर्मा बाबू नगर के प्रसिद्ध धनी हैं। अभी नवयुवक हैं। पिता की मृत्यु के पश्चात् सारी सम्पत्ति के वे एक-मात्र अधिकारी हो गए हैं। घर में बूढ़ी माँ तथा पत्नी के अतिरिक्त एक छोटा भाई है। वर्मा बाबू में यौवन की सभी बुराइयाँ विद्यमान हैं। शराब और वेश्या, यही शायद उनका जीवन है। राजदेव की उनसे बहुत पटती है; नित्य ही संध्या समय दोनों मित्र साथ ही साथ घूमने के लिए निकलते हैं।

वर्मा जी ने हाल में प्रवेश करते हुए ही कहा—'अरे आज तो आप बड़े निश्चिन्त होकर यहाँ बैठे हैं। कहीं चलने का इरादा नहीं है क्या ?'

'आइए वर्मा जी, आइए मैंने तो सोचा था शायद आज आप न आयें। इसलिए बैठा थोड़ा पानी पी रहा था।'

'यह ठीक ही है; यह भी तो आखिर पानी ही है।'

कहते हुए वर्मा जी राजदेव के निकट ही एक कुर्सी खिसका कर बैठ गए। नौकर ने तुरन्त ही एक और गिलास लाकर मेज पर रख दिया। वर्मा ने गिलास भरा और उसका एक घूँट गले से नीचे उतारते हुए बोले—'भाई मौसम तो आज का ऐसा था कि अपने बाग की बारहदरी में बैठते शराब का दौरा चलता रहता और साथ में कोई.....'

राजदेव की ओर देखकर उन्होंने मुस्करा दिया।

राजदेव ने भी कहा—'तो इसमें क्या रखा है। तुम्हारे लिए क्या कठिनाई है ?'

Sri Pratap Singh Library Srinagar

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'पर आज जो हम लोगों ने लक्ष्मी के यहाँ जाने का वचन दे रखा है।'

'अजी तुम भी, उसी को बुला लेंगे।'

वर्मा जी ने गिलास ख़ाली कर दिया तो राजदेव ने बोतल उनकी ओर खिसकाते हुए कहा—'और लीजिए।'

वर्मा ज ने फिर गिलास भरा; जेब से सिगार केस निकाल कर एक जलाया और फिर सिगार केस राजदेव की ओर बढ़ा दिया। सुगंधित सिगार की सुगंध से हाल भर गया।

तभी वर्मा जी ने कहा—'अच्छा तो आप कपड़े पहनेंगे या ऐसे ही रहेंगे।'

'ओहो, मुझे तो इसका ध्यान ही नहीं रह गया था।' राजदेव ने कहा और सिगार को 'एशट्रे' में रख उठ खड़ा हुआ।

वर्मा जी भी मुस्कराये बोले—'जान पड़ता है नशा गहरा हो गया है।'

राजदेव मुस्कराता रहा! आलमारी खोलकर उसने पहनने के लिए सूट निकाला। बड़ी कठिनाई से एक सूट उसे पसन्द आया। फिर टाई उससे मैच करती हुई खोजी जाने लगी। बड़ी देर बाद सब सामान लेकर वह शृंगार मेज़ के सामने आदम कद शीशे के सामने आकर खड़ा हो गया।

कपड़े पहन चुका ही था कि नौकर ने आकर कहा—सरकार बाहर जाने के पहले बहूजी ने आपको बुलाया है। उनकी तबीयत आज ख़राब है।

राजदेव ने कोई उत्तर न दिया, उसी प्रकार वह अपने बाल संवारता रहा। नौकर उत्तर के लिए खड़ा था। राजदेव ने मुँह फेर कर उसकी ओर देखा तो कहा—'सुन लिया, अब क्यों यहाँ सिर पर खड़े हो?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तो बहूजी से क्या कह दूँ ?' नौकर ने सहम करके पूछा।

'कह देना आता हूँ।'

राजदेव ने उत्तर दिया और फिर वर्मा जी की ओर मुँह करके कहने लगा—'मैं इस घर के झंझट से इतना परेशान रहता हूँ कि कुछ न पूछो।'

'अजी घर में तो सभी के एक न एक झंझट लगी रहती है। मैं तो कहता हूँ कि यदि मुझे चौबीसों घंटे घर में रहना पड़े तो अवश्य पागल हो जाऊँ।'

राजदेव को वर्मा जी के स्वतंत्र जीवन से कभी-कभी ईर्ष्या होने लगती है।

तैयार हो चुका तो राजदेव ने कहा—'तनिक देर प्रतीक्षा करो देखूँ क्या बात है।'

मुँह से सिगार का धुँआ निकालते हुए राजदेव ने अपनी पत्नी के कमरे में प्रवेश किया। नलिनी उस समय रोग-ग्रस्त पलंग पर लेटी हुई थी। उसकी दुर्बल देह पर बादामी रंग का दुशाला पड़ा हुआ था। गोरी-गोरी बाँह चादर से बाहर दूध से सफ़ेद बिछौने पर पड़ी हुई थी। बालों की बड़ी-बड़ी लटें गालों पर बिखर रहीं थीं। नलिनी का यह अस्त-व्यस्त सौंदर्य किसी भी पुरुष को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त था परन्तु राजदेव की आंखों से जैसे वह सौंदर्य प्रतिमा कभी उतर नहीं सकी। बोला—'क्या बात है ?'

'मेरी तबीयत ठीक नहीं है, जल्दी आ जाओगे ?'

'यदि जल्दी आ भी जाऊँ तो क्या मैं कोई डाक्टर हूँ जो तुम्हें अच्छा कर दूँगा।' राजदेव ने व्यंग के साथ कहा।

'ऐसा क्यों कहते हो ? तुम्हें देखते रह कर तो मेरा बड़ा से बड़ा रोग अच्छा हो सकता है।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तो ऐसा क्यों नहीं कहती कि मुझे घर में रखने के लिए तुमने यह लीला कर रखी है।'

नलिनी को जैसे बिजली छू गई हो; क्षण भर वह पति की ओर कातर दृष्टि से देखती रही फिर आँखें नीची कर लीं।

राजदेव को जैसे इतना सब कह कर संतोष न हुआ हो बोला—'मुझ पर तुम्हारे इस नाटक का कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। मैं यह सब अच्छी तरह समझता हूँ।'

'ऐसा क्यों कहते हो ?'

'क्यों कहता हूँ ? इसलिए कि ऐसा है। तुम मुझसे स्पष्ट कहलाना चाहती हो, तो सुनो यह डाक्टर उमेश ही की दवा क्यों होती है।'

नलिनी चौंकी फिर कहा—'इसलिए कि वे निकट हैं, अपने परिचित हैं।'

'यही तो कहता हूँ कि यह तुम्हारे परिचित नहीं बल्कि प्रेमी हैं।'

'यह तुम आज कह क्या रहे हो ?' नलिनी ने क्षुब्ध हो आहत हरिणी की भाँति पूछा।

'कह क्या रहा हूँ ? पहले का प्रेम आखिर कैसे पूरा किया जाय। सो इस तरह रोज़-रोज़ बीमार होकर उन्हें बुलाने का एक अच्छा बहाना तुमने खोज निकाला है।'

'किसी को इस प्रकार अपमानित करते तुम्हें शर्म नहीं आती।' नलिनी ने क्रोध के साथ कहा।

'लज्जा ! मुझे क्यों आये, लज्जा तो आनी चाहिए तुम्हें जो मेरी पत्नी होकर भी एक दूसरे व्यक्ति के साथ इस प्रकार प्रेम-लीला कर रही हो।' राजदेव ने भी उसी प्रकार चोट की।

नलिनी चुप रही तो राजदेव ने कहा—'देखो, आज तुमसे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कहे देता हूँ कि मेरे घर में ही तुम्हारी यह प्रेमलीला अब नहीं चलने की, यदि यही सब करना है तो मेरे घर से चली जाओ; तुम्हें कोई रोकेगा नहीं।'

उत्तर की बिना प्रतीक्षा किए राजदेव बाहर निकल गया तो नलिनी फफक कर रो उठी। राजदेव ने सदैव ही उसका अपमान किया है, कभी उससे सीधे मुँह बात नहीं की, नित्य ही संध्या समय वह घर से निकल जाता है और फिर आधी रात गए आकर चुपचाप अपने कमरे में सो रहता है। नलिनी उसके इस व्यवहार की अभ्यस्त हो गई है परन्तु आज जिस प्रकार उस पर कलंक लगाया गया है वह उसे सहन नहीं है। यह दुःख आज जो उसके अन्तर से उभर उठा तो लगा जैसे वह मर जायगी। वेदना अधिक हो गई तो वह उठ कर बिछौने पर बैठ गई।

राजदेव की कार के जाने की आवाज़ उसे साफ़ सुनाई दे रही थी। उसे राजदेव के इस जीवन से अब तक शिकायत नहीं हुई; सभी कुछ तो वह सहती चली आई है पर आज की यह वेदना दूसरे ही प्रकार की है जो अतुल है।

घर में राजदेव की बड़ी बहिन हैं। विधवा हो गईं तब से राजदेव के ही साथ रहती हैं। मां पहले ही मर गई थी सो पिता ने दीदी के विधवा हो जाने पर अपने यहां बुला लिया। तब से दीदी मायके में ही रह रही हैं। ससुराल में पति के बाद था ही अपना कहने को कौन? देवर हैं, उन्हें जैसे दीदी की कोई चिन्ता ही न हो। ऐसे ही कभी साल में एक-आध पत्र डाल दिया तो डाल दिया।

जिस समय दीदी आईं थीं राजदेव बहुत छोटा था। दीदी ने ही उसका पालन-पोषण किया और फिर पिता के मरने के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बाद तो दीदी ने ही उसे पढ़ाया-लिखाया है। राजदेव भी दीदी के इस उपकार को मानता है। घर में उन्हीं का एक प्रकार से राज्य है।

नलिनी बैठी सोच रही थी तो दीदी उधर से आ निकलीं। उसे बैठी देख कर पूछा—'क्या बात है बहू कैसी तबीयत है ?'

'लेटे-लेटे जी ऊब रहा था दीदी, सो उठकर बैठ गई।' नलिनी ने उत्तर दिया।

दीदी निकट आकर खड़ी हो गईं तो नलिनी की आंखों में आंसू देख पूछा—'रोती क्यों हो बहू ? क्या राजू ने कुछ कहा क्या ?'

राजदेव को दीदी राजू ही कहती है।

नलिनी ने कहा—'नहीं दीदी। ऐसे ही सिर में पीड़ा थी सो आंसू आगए।'

पर दीदी जानती हैं कि बहू को बड़ी व्यथा है। राजदेव को कई बार समझा भी चुकी हैं पर राजदेव अपने तरीक़े को बदलना जैसे चाहता ही नहीं। बहुधा वे नलिनी को ही समझाया करती हैं।

माथा छू कर देखा तो बोलीं—'अरे बहू तुम्हें तो बहुत ज्वर है। लेट कर ओढ़ लो नहीं हवा लग जायगी।'

नलिनी को इस घर में दीदी का ही स्नेह मिला है। सो लेट कर उसने दुशाला अपने शरीर पर डाल लिया। दीदी सिरहाने बैठ कर उसका सिर दाबने लगीं तो नलिनी ने कहा—'रहने दो दीदी तुम्हें अभी पूजा आदि भी करना है। क्यों व्यर्थ में ही कष्ट उठा रही हो।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'इसमें कष्ट काहे का बहू ? तुम्हारे सुख-दुःख में भी मैं न साथ दूँ तो फिर आखिर लाभ क्या मेरे यहां होने से ।'

नलिनी ने कोई उत्तर न दिया; क्षण भर वह सोचती रही फिर बोली—'अच्छा दीदी तुम जाओ पूजा-पाठ करो । महरिन को भेज दो वह सिर दबा देगी ।'

दीदी चली गईं तो नलिनी सोचती लेटी रही ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—छ—

नौकरानी सिर दाबती बैठी रही पर नलिनी को नींद नहीं आई। उसकी व्यथा जैसे बढ़ती जा रही हो। अधिक देर हो गई तो उसने नौकरानी से कहा—रहने दो लक्ष्मी यह जो विथा हो रही है शायद यह कभी जाने की नहीं।

लक्ष्मी अभी नलिनी की ही आयु की है; सो अपनी मालकिन के प्रति उसका अधिक स्नेह है। अपने इतने से जीवन में वह बहुत कुछ देख चुकी है। माता-पिता ने उसको एक व्यक्ति से ब्याह दिया था। यौवन का प्रथम प्यार लक्ष्मी ने उसके चरणों पर सौंप दिया पर वह था अभागा। लक्ष्मी ऐसी सुन्दर पत्नी पाकर भी उसे बाहर से अवकाश न मिलता। लक्ष्मी ने इसकी शिकायत जब पति से की तो कुछ दिन तक तो वह इधर-उधर करता रहा फिर बात खुल गई। अब तो सब प्रगट से होने लगा। लक्ष्मी को पति के यह सब ढंग अच्छे न लग रहे थे। उसने उसे रोका, समझाया तो उस पर मार पड़ने लगी।

भला लक्ष्मी यह सब कैसे सहती! फिर भी, जीवन को वह प्यार करती थी। सहती गई; एक-एक करके उसके आभूषण, जिन्हें उसके पिता ने अपनी गाढ़ी कमाई के एक-एक पैसे जुटा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर बनवा दिए थे, जीवन ने लुटा दिये। वह कुछ न बोली। सब सहती गई। फिर जब घर में खाने को एक दाना न रहा तो कलह होने लगी।

एक दिन जीवन थक गया इस जीवन से; तो जाने कहाँ चला गया। लक्ष्मी पति के लिए बहुत रोई। कुछ भी सुख उसने लक्ष्मी को न दिया हो पर था आखिर उसका पति न।

पिता आये; लक्ष्मी से अपने घर चलने को कहा पर वह न गई। किसी के द्वार पर रह कर वह दो रोटी अब नहीं खायेगी। पिता से उसने कह दिया, अब वह मेहनत मजदूरी करके अपना गुजर कर लेगी।

और तभी उसे नलिनी के यहाँ नौकरी मिल गई। नलिनी ने लक्ष्मी के दुःख से सहानुभूति प्रगट की। धीरे-धीरे दिन बीते और अब वह ननकू की पत्नी हो गई है।

ननकू अच्छा है; उसे प्यार करता है; सुख से रखता है। कई बार उसने कहा कि नौकरी छोड़ कर घर में रह तेरे खाने भर को तो मैं पैदा करता ही हूँ पर लक्ष्मी न मानी। इन मर्दों का कौन विश्वास ! जब तक हाथ-पाँव चलते हैं वह किसी के भरोसे नहीं रह सकती।

नलिनी यह सब जानती है। सहसा वह पूँछ पड़ी—लक्ष्मी तुझे अपने पहले पति की याद कभी नहीं आती ?

लक्ष्मी ने एक लम्बी उसाँस ली; फिर बोली—आती क्यों नहीं बहू जी, पर जब उसी ने मुझे छोड़ दिया तो क्या करती !

'जब वह चला गया होगा तब तो तुम्हें बहुत विथा हुई होगी।' नलिनी ने प्रश्न किया !

'बहू जी विथा की क्या कहती हैं। कलेजे में एक घाव हो गया है। घाव !' लक्ष्मी ने हृदय पर हाथ रख कर कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'लक्ष्मी हृदय का घाव चाहे कितना बड़ा हो पर समय उसे अच्छा कर ही देता है।'

'कर देता है बहू जी पर जब कभी पूर्व-स्मृति की पुरवैया बहती है तो वह घाव फिर हरा होकर दर्द जो देने लगता है।'

नलिनी चुप रही। उसकी आंखों के सम्मुख कितने ही चित्र आये और चले गए। उमेश उस समय बी० एस-सी० का साधारण विद्यार्थी था; उसको पढ़ाने के लिये आता था और अनजाने में ही वह उमेश को प्रेम करने लगी थी। उमेश भी उसे प्रेम करता था पर कभी उसने प्रगट न किया; उसकी प्रेम याचना को भी कर्तव्य की वेदी पर उस ने ठुकरा दिया। पर क्या वह उसे आज तक भुला सका ? आज तक अविवाहित वह अपने यौवन के सुन्दर वर्षों को रोगियों के बीच बिता रहा है—जैसे उसके जीवन में कुछ शेष रह ही न गया हो। कितनी व्यथा उसके जीवन में है ?

अभी उस दिन उसने सुना कि नलिनी बीमार है तो बिना बुलाये ही दौड़ा आया; नलिनी की परीक्षा की, दवा लिख दी और फिर क्षण भर उसकी ओर देख कर कहा—नलिनी जीवन में जो मिले उससे संतोष करके रहना चाहिए। अपने स्वास्थ्य का ध्यान तुम रखा करो।

नलिनी ने कोई उत्तर न दिया; वह अपना बेग उठा कर जाने लगा तो नलिनी ने कहा—बैठिए न, डाक्टर साहब ! थोड़ी देर !

निकट ही एक कुर्सी ले वह बैठ गया। तो नलिनी ने पूछा—डाक्टर साहब आपने अपना विवाह क्यों नहीं अभी तक किया ?

'हो-हो' करके डाक्टर हँसा फिर बोला—'नलिनी विवाह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करके होना ही क्या ? अपने जीवन में बहुत कुछ करना है; व्याह करके एक जिम्मेदारी मैं बढ़ाना नहीं चाहता।'

नलिनी चुप रही तो डाक्टर ने फिर कहा—'नलिनी व्याह करके लोग सुखी अनुभव अपने को चाहे करें पर मैंने कभी ऐसा नहीं सोचा। अपने इस एकाकी जीवन से मुझे संतोष है।'

'पर डाक्टर यह तो तुम्हारा एक अपूर्ण जीवन है न ?'

डाक्टर ने प्रश्न का उत्तर नहीं दिया; सहसा जाने क्या सोचता हुआ वह बैठा रहा फिर कह उठा—नलिनी, तुम्हें इस जीवन में सुख है !

'डाक्टर, तुम्हारा यह प्रश्न ही व्यर्थ है।'

'जानता हूँ किन्तु एक बार पूछना चाहता हूँ।'

'डाक्टर, जीवन में क्या कोई कभी सुखी हुआ है। एक न एक अभाव, एक न एक दुःख तो हम सभी के जीवन में उभर कर रहना चाहता है। फिर कोई सुखी कैसे रह सकता है। डाक्टर !'

'हूँ ! किन्तु मेरा मतलब यह है कि क्या अपने वैवाहिक जीवन से तुम्हें सुख है।'

'सुख हो या न हो पर मैं अपने को सुखी ही समझती हूँ।' नलिनी ने उदासीनता से उत्तर दिया।

'देखो, नलिनी, समझने से हमारे कुछ नहीं होता। जो दुःख है वह तो होता ही है। फिर उससे हम आँख कैसे मूँद लें। पर कभी-कभी मैं सोचता हूँ इस दुःख की जिम्मेदारी तो आखिर हमारे ऊपर ही है। यदि उस समय मैंने अपना वास्तविक कर्तव्य समझा होता, यदि समाज के प्रति अपने झूठे कर्तव्य के भ्रम में न पड़ गया होता; तो मुझे विश्वास है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हें आज इस प्रकार दुःखी देखने का अवसर मुझे न मिलता और—

'डाक्टर' उन पुरानी बातों को फिर दुहरा कर जी दुःखी न करो।' नलिनी ने आहत होकर कहा।

डाक्टर चुप रहा; फिर अपना बेग उठा कर चलते हुए कहा—'जब कभी आवश्यकता हो बुला लेना नलिनी।'

नलिनी ने कोई उत्तर न दिया; केवल डाक्टर को जाते हुए देखती रही।

नलिनी के इस दुःख का उत्तरदायी अपने को मान कर ही यह डाक्टर जीवन से इस प्रकार उदासीन हो गया है; यह बात नलिनी को बार-बार चुभ सी रही थी।

और आज जब राजदेव ने उसे कह दिया कि डाक्टर को इसलिए रोज़ बुलाने का बहाना करती है क्योंकि वह उसे प्रेम करती है तो उसे बड़ी व्यथा लगी। नलिनी ने सदैव ही पति के प्रति सच्ची रहने का प्रयत्न किया है। डाक्टर को वह स्वयं नहीं बुलाती पर जब वह बीमार पड़ जाती है तो जाने कैसे डाक्टर को खबर हो जाती है और वह आकर उसे देख जाता है; उसे दवा भिजवा देता है। आख़िर नलिनी करे क्या? उस दिन के बाद उसने डाक्टर से कभी दो बात भी तो नहीं की पर किसी के संदेह को मिटाने के लिए वह कर ही क्या सकती है?

नलिनी को विचार-मग्न देख लक्ष्मी ने कहा—'क्या सोच रही हो बहू जी? बीमारी की हालत में बहुत सोचना ठीक नहीं होता।'

नलिनी ने एक सर्द आह खींचकर उत्तर दिया—'लक्ष्मी सोच

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रही थी यह आकाश दिन और रात को बराबर अपने हृदय में छिपाये रहता है, रात में इसका हृदय तारों से ऐसा छिद जाता है जैसे छलनी हो गया हो, फफोले से ये तारे उभर आते हैं। कितनी व्यथा यह आकाश अपने में छिपाये रहता है पर फिर भी यह रहता ऐसा ही है।'

लक्ष्मी क्या उत्तर दे; जानती है कि बहू जी कभी-कभी बड़ी भावुक हो जाती हैं। पर उसके जीवन में भावुकता को स्थान ही कहाँ अधिक है ? सो चुप ही रही। बात का विषय बदलने के लिए बोली—'बहू जी खाना आप इस समय क्या खायेंगी ? दीदी से कह दूँ।'

'नहीं, जो बनायेगी दीदी वही खा लूँगी लक्ष्मी मेरे लिए कुछ विशेष नहीं बनेगा।'

तभी दीदी आईं नलिनी को इस प्रकार उदास देख बोलीं—'बहू, तुम सदैव कुछ न कुछ सोचा ही करती हो इसीलिए तो बीमार रहती हो। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखो। यह सब जग की चिन्ता छोड़ दो।'

'कुछ तो नहीं सोच रही थी दीदी, ऐसे लेटे-लेटे जी ऊब गया तो लक्ष्मी से बातें कर रही थी।' नलिनी ने उत्तर दिया।

क्या कहे लक्ष्मी कि कैसी बात नलिनी कर रही थी अभी तक।

'चलो जो मन हो खालो;' दीदी ने कहा।

नलिनी उठ कर भीतर गई। दीदी ने खाना परोस दिया तो थोड़ा भोजन कर वह उठ आई। दीदी ने बहुत कहा पर उसे भूख जो नहीं है। तो खाये कैसे।

कमरे में आ वह फिर लेट गई। तो दीदी ने दवा निकाल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर उसे पिला दी। फिर उसे चादर उढ़ा कर लिटा दिया और मसहरी डाल दी। फिर बोलीं—'अच्छा बहू, अब कुछ सोच-विचार न करो; सो जाओ नहीं तो तबीयत और खराब हो जायगी।'

छोटे बालक की भाँति आखें नलिनी ने बन्द कर लीं तो दीदी रसोई घर की ओर चली गईं। जानती हैं राजदेव रात का खाना कभी घर में शायद ही करे सो जा कर भोजन किया और अपने कमरे में जा लेट रहीं।

नलिनी कमरे में जलते हुए बिजली के बल्ब को देखती रही; अपना जीवन भी क्या है ? कभी सुख उसे नहीं मिला। राजदेव उसका पति है पर क्या कभी उसके हृदय ने स्वीकार किया कि वह उसका पति है। कितनी बार उसने प्रयत्न किया कि अपने अंतर का प्यार वह उसे दे दे पर राजदेव चाहता जो नहीं। फिर कैसे नलिनी ही उसे प्रेम कर सकती है। जानती है नलिनी कि राजदेव का अधिकांश समय वेश्याओं के साथ बीतता है। पर उसने इसकी उससे कभी शिकायत नहीं की; करना चाहती भी नहीं। पर इतना अवश्य ही चाहती है कि राजदेव उसे भी प्रेम करे कम से कम पत्नी के अधिकार से उसे वंचित न करे।

नारी जब विवाह के पश्चात् पति के घर में आती है तो वह आशा करती है कि उसे पति का समस्त प्रेम प्राप्त हो जायगा। पर जब वह उसका तनिक सा भी प्रेम न प्राप्त कर सके तो आखिर कैसे वह संतोष करे। राजदेव को देख उसके हृदय में कभी-कभी एक वेदना उत्पन्न हो उठती है तो उसके अन्तर की नारी विद्रोह कर उठती है। सोचती है जब वह उसे उसके अधिकारों से वंचित रखते हैं तो फिर क्यों वह उन्हें देवता मान कर अपना जीवन नष्ट करती रहे। वह विद्रोह करना चाहती

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

है परन्तु जीवन के संस्कार उसे रोक देते हैं उसका हाथ पकड़ कर जैसे कोई रोक लेता है।

नलिनी ने करवट बदली। एक निश्वास खींची तभी लक्ष्मी ने आ कर कहा—'बहू जी नींद न आ रही हो तो बिजली बुझा दूँ।'

'बुझा दे।' नलिनी ने उत्तर दिया और सोने का प्रयत्न करने लगी।

—:❀❀❀:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—सात—

डाक्टर उमेश अपनी डिस्पेन्सरी में बैठे हुए थे। आज एक अधिक आवश्यक रोगी को देखना था, इस लिए वह अभी तक बैठे हुए थे। अन्यथा वह नौ बजे के बाद डिस्पेन्सरी में नहीं बैठते।

कम्पाउंडर ने आकर कहा—'डाक्टर साहब अब आप जा सकते हैं।'

किन्तु उमेश उठा नहीं, आज उसका जी कुछ उदास सा हो रहा था। संध्या समय जब वह घर से आ रहा था तभी जाने किस अज्ञात आशंका से उसका हृदय काँप उठा था। सो बोला—'तुम दूकान बंद करो मैं भी अभी जाता हूँ।'

कम्पाउंडर चला गया तो डाक्टर ने उठ कर अपना कोट पहना और बाहर निकल मोटर पर बैठ गया। सीधे घर न जा कर वह मोटर ले कर शहर के बाहर जाने वाली सड़क पर मुड़ गया। उसकी मोटर आगे बढ़ती जा रही थी और वह सोचता जा रहा था। शहर के बाहर की खुली हवा ने उसकी कल्पना-शक्ति में जैसे पर लगा दिए हों।

शहर से बाहर जिधर को सूरज निकलता है उधर ही एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पार्क है। डाक्टर ने पार्क के निकट जा मोटर रोक दी और उतर कर सड़क के किनारे बैठ गया।

हरे हरे खेतों में चाँदनी छिटकी हुई थी। डाक्टर प्रकृति के इस सौंदर्य को देखता रहा। उसके मस्तिष्क में अनेक प्रकार के विचार आ रहे थे। आज पिता का पत्र आया है, लिखते हैं कि अब उसे विवाह कर लेना चाहिए। कहीं बात उन्होंने निश्चित भी कर ली है। कितने ही बार पिता ने विवाह करने के लिए आग्रह किया परन्तु उमेश सदैव ही टालता आया है। निर्धन माता-पिता की संतान होकर भी उसने थोड़े से वर्षों में अतुल सम्पत्ति और मान प्राप्त किया है। नगर के प्रसिद्ध डाक्टरों में आज उसका नाम गिना जाता है, कितने ही रोगी अच्छे हो कर उसके लिए प्रार्थना करते हैं। उसके बाहरी जीवन को देख कर लोग समझते होंगे कि वह अत्यन्त सुखी है परन्तु उसके अन्तर में जो एक वेदना रहती है उससे किसी का परिचय नहीं है।

डाक्टर का जीवन एकाकी हो उठा है। डिस्पेन्सरी में बैठने के पश्चात वह अपने बंगले में पड़ा रहता है। कहीं न आना न जाना। एक नौकर है जो उसका खाना बना देता है; वही उस की देख-रेख करता है। बस। यही उसका जीवन है। न कहीं गति है और न कहीं आकर्षण!

उस दिन नलिनी ने उससे कहा था कि वह विवाह क्यों नहीं कर लेता। कितनी भोली है यह नलिनी। जब वह बी० एस-सी० का विद्यार्थी था; तभी नलिनी उसके जीवन में आई और तब से कुछ ऐसा उभर कर वह उसके जीवन में रहना चाहती है कि कई बार उसने सोचा कि वह विवाह करके दूसरे लोगों की भाँति वैवाहिक जीवन व्यतीय करे परन्तु उसका साहस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं हुआ। और जब नलिनी के पति बदल कर यहाँ आगए तो उसे एक सन्तोष हो गया। कभी-कभी नलिनी को देख लेता है यही क्या कम है ?

किन्तु पिता को वह क्या उत्तर दे ? आखिर उनकी भी तो इच्छायें हैं। कितनी ही बार वे कह चुके। पिता की आज्ञा वह टालना नहीं चाहता किन्तु आखिर वह करे क्या ?

दूसरी ओर से एक मोटर आ रही थी। हार्न सुन डाक्टर की विचार धारा रुक गई। उसकी मोटर किनारे पर खड़ी थी; उठ कर वह कार के निकट आया। मोटर स्टार्ट की और घर की ओर चल पड़ा।

सामने से आते हुए हवा के झोके में उसके बाल उड़ रहे थे और सामने पड़ी हुई थी शून्य निर्जन सी सड़क जिसके किनारे बिजली के खंभो से लटकते हुए बल्बों से प्रकाश की रेखायें सड़क पर बिखर रही थीं।'

डाक्टर घर पहुँचा ही था कि किसी ने पुकारा। उसी प्रकार कपड़े पहने वह बाहर आया; देखा तो राजदेव का ड्राइवर खड़ा था।

डाक्टर को उसे इतनी रात को देख आश्चर्य हुआ। ग्यारह बज चुका है। क्या नलिनी की तबीयत अधिक खराब हो गई ? अभी सुबह तो उसने नौकर भेज कर दवा मँगवाई थी; तब कहा था; आज तबियत कुछ अच्छी है फिर इतनी रात को क्या आवश्यकता पड़ गई। पूछा, 'क्या है जी ? बहू जी की तबीयत अधिक खराब हो गई क्या ?'

'नहीं बहू जी तो वैसी ही हैं किन्तु बाबू जी—'

अधिक डाक्टर ने सुना नहीं, कहा—'चलो' और अपना बेग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लेकर वह बाहर आ मोटर पर बैठ गया। राह में ड्राइवर ने बताया कि शाम को राजदेव मोटर लेकर कहीं घूमने गए हुए थे, रात को लौट रहे थे तो मोटर लड़ गई। वर्मा जी को तो कम चोट आई किन्तु राजदेव को काफ़ी चोट आई है। वहाँ से एक अंगरेज उनको अपनी मोटर पर बिठा कर घर पर छोड़ गया है।

डाक्टर सुनता रहा। मोटर रुकी तो वह बिना किसी की प्रतीक्षा किए भीतर चला गया। नलिनी हाल में ही थी, डाक्टर को देख रो पड़ी; तो डाक्टर ने कहा—रोओ नहीं नलिनी, अभी ठीक हो जाँयगे।

नलिनी उन्हें लेकर जब राजदेव के पास पहुँची तो उसे देख कर डाक्टर का हृदय काँप उठा। तुरन्त ही उसने ड्राइवर से कहा—डिस्पेन्सरी के पीछे कम्पाउंडर रहता है उसे तुरन्त बुला लाओ। साथ में कहना बैन्डेज का समान भी लाये।

ड्राइवर चला गया तो डाक्टर ने राजदेव के घावों की परीक्षा की। सिर का घाव संघातक जान पड़ रहा था, अधिक देर तक किसी प्रकार की चिकित्सा न होने के कारण बहुत अधिक रक्त बह गया था। राजदेव बेहोश था।

कम्पाउंडर आ गया तो डाक्टर ने बड़ी सावधानी से राजदेव के घावों पर पट्टी बाँधी। रात भर के अधिक परिश्रम के पश्चात राजदेव को प्रातः होश आया। डाक्टर को अपने निकट देख वह पीड़ा से कराह उठा फिर नलिनी की ओर देख उसके अधर फड़क उठे, क्रोध की एक रेखा उसकी आखों में छा गई तो उसने कहा—'तुम्हें यहाँ किसने बुलाया? क्या नगर के सब डाक्टर मर गए थे?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नलिनी भय से काँप उठी पर डाक्टर उसी प्रकार अचल बना रहा—बोला, मुझे किसी ने नहीं बुलाया मिस्टर राजदेव, रात जब आप इस दशा में यहाँ आये तो डाक्टर के कर्तव्य ने मुझे यहाँ आने को बाध्य किया ?

सान्त्वना देते हुए डाक्टर ने कहा—मिस्टर राजदेव, चोटें आपकी संघातक हैं; आप शान्त रहें तो अच्छा है। यहाँ पर मैं एक डाक्टर के अतिरिक्त कुछ नहीं हूँ। किन्तु अब आप दूसरे डाक्टर को बुलवा सकते हैं। जब तक आप खतरे को पार न कर ले जाँय तब तक एक डाक्टर का बराबर आपके निकट रहना आवश्यक है।

यह कह कर डाक्टर ने अपना बेग उठाया; और चलते हुए कहा—नमस्ते मिस्टर राजदेव, आवश्यकता पड़ने पर आशा है आप अवश्य मुझे बुलायेंगे।

राजदेव उसी प्रकार पड़ा रहा; एक मूर्च्छा सी मस्तिष्क पर छा रही थी। बरामदे में आकर डाक्टर ने देखा नलिनी खड़ी है। अधरों पर मुस्कान लाते हुए डाक्टर ने कहा—'नलिनी मैंने अपना कर्तव्य कर दिया अब किसी और डाक्टर को बुला लेना। मैं नहीं चाहता कि मेरे आने से तुम पर संदेह किया जाय। यदि मुझे यह ज्ञात होता तो शायद मैं कल ही न आता।

नलिनी क्षण भर चुप रह डाक्टर की ओर देखती रही; फिर पूँछा—'डाक्टर उनकी हालत कैसी है।'

'कुछ कह नहीं सकता नलिनी, तुम्हें अंधकार में भी नहीं रखना चाहता। चोट उनकी अत्यन्त संघातक है। बच भी सकते हैं और मृत्यु भी हो सकती है।' डाक्टर ने उदासीनता से उत्तर दिया।

नलिनी रो पड़ी तो डाक्टर ने फिर कहा—'नलिनी इस

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रकार निराश होने की आवश्यकता नहीं है। यदि ध्यानपूर्वक इलाज किया गया तो अच्छे हो जाने में संदेह नहीं।'

डाक्टर क्षण भर सीढ़ियों पर खड़ा रहा फिर कहा—'अच्छा नलिनी चलूँ। तुम्हारी इतनी सेवा कर सका यही क्या कम है।'

नलिनी की अन्तर की वेदना उभर आई, कंठ रुँध गया तो उसने कहा—'डाक्टर तुमने उनकी बातों को बुरा न माना होगा।'

'बुरा मानने की बात क्या थी नलिनी; उनका मस्तिष्क इस समय ठीक नहीं। फिर उनकी बात का बुरा कोई मान ही कैसे सकता है?'

'तो जब मैं बुलाऊँगी तुम आओगे।'

'डाक्टर किसी के बुलाने पर जाने से इन्कार नहीं कर सकता। फिर तुम्हारे बुलाने पर तो इन्कार का प्रश्न ही नहीं उठता।'

डाक्टर जाकर मोटर पर बैठ गया। जब तक उसकी मोटर बंगले से बाहर न चली गई, नलिनी खड़ी देखती रही।

और डाक्टर उस दिन डिस्पेन्सरी न गया। उसकी तबीयत भारी सी हो रही थी। चाय पीकर वह हाल में चला आया और बैठा रहा कुछ सोचता हुआ सा।

——

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—आठ—

दिन में राजदेव की दशा और भी चिन्ता-जनक हो गई। बेहोशी उसकी जो आई वह फिर न जा सकी। तो नलिनी ने डाक्टर मेहता को बुलाया उमेश को वह बुला न सकी। डाक्टर मेहता आये। उन्होंने राजदेव की परीक्षा की कहा—'इनकी दशा बहुत ही खतरनाक है। 'बचने की कोई आशा मुझे नहीं है।' आप किसी और डाक्टर की सहायता लें।'

नलिनी के सम्मुख जैसे अन्धकार छा गया हो; वह बेहोश होकर शैय्या पर गिर पड़ी। जब होश आया तो देखा दीदी उसके माथे पर हाथ फेर रही हैं—नलिनी को आंखें खोले देख पूछा—'कैसी तबीयत है बहू।'

'ठीक है' कहती हुई नलिनी ने उठने का प्रयत्न किया। उसकी आंखों से झर-झर आंसू गिरने लगे तो दीदी अपनी वेदना न रोक सकीं। वे भी रो पड़ीं और सान्त्वना भरे शब्दों में बोलीं—'बहू, जो भाग्य में लिखा होगा वह तो मिट नहीं सकता पर इस तरह हाथ पर हाथ धर कर बैठ जाना भी तो ठीक नहीं।'

'फिर क्या करूँ दीदी ?' नलिनी रो पड़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तुम डाक्टर उमेश को ही क्यों नहीं बुलालेतीं ? सारी रात बेचारे ने जी तोड़ परिश्रम किया है।' दीदी ने राय दी।

नलिनी रो पड़ी। डाक्टर उमेश को बुलाने की तो उसकी इच्छा थी पर बुला जो वह नहीं सकती। उन्हें उमेश से चिढ़ है। उस पर संदेह है। फिर उसे ही वह क्यों बुलावे और फिर उमेश का यदि उन्होंने अपमान कर दिया, कुछ उन्हें कह दिया तो ? पर यह सब नलिनी दीदी को कैसे समझाये।

कहा—दीदी, उन्हें बुला तो लूँ पर इनको जो उन पर विश्वास नहीं है; कैसे करूँ ?

'विश्वास नहीं है ! भला विश्वास क्यों नहीं है ? कौन डाक्टर रात भर जाग इस तरह मेहनत करता ?' दीदी ने आश्चर्य से पूछा।

नलिनी ने कहा—दीदी, जब मैं पढ़ती थी तो यही डाक्टर एक ग़रीब विद्यार्थी थे, पिता जी ने मुझे पढ़ाने के लिए इन्हें रख दिया था। उन्हें इसीलिए डाक्टर पर संदेह है। कल जो मैं रो रही थी तो इसीलिए। कल पहली ही बार उन्होंने अपना संदेह प्रगट किया था।'

दीदी चुप रहीं कहतीं क्या ? राजदेव के स्वभाव से वे परिचित हैं। किन्तु फिर सोच कर बोलीं—'कुछ भी हो, वह राजू तो है पागल ! इस समय उसके प्राणों का मामला है। तुम उन्हीं डाक्टर को बुलाओ।'

नलिनी कुछ देर तक सोचती रही फिर बोली—'अच्छी बात है; उन्हें ही बुलाती हूँ।'

नौकर जाकर डाक्टर उमेश को बुला लाया। उमेश ने राजदेव के घावों की परीक्षा की; चिन्ता की एक रेखा उसके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मस्तक पर खिंच गई। बचाना अब इसका असम्भव है डाक्टर ने यह समझ लिया परन्तु नलिनी के लिए सब कुछ करना होगा।

दिन भर डाक्टर उपचार में लगा रहा परन्तु कुछ लाभ होता न दिखाई दिया। बेहोशी जा ही न रही थी। दिन भर से डाक्टर ने कुछ भी न खाया था परन्तु आज वह अपने में एक अदम्य शक्ति का अनुभव कर रहा था।

शाम दीदी ने खाना बनाया तो कहा—डाक्टर साहब आप दिन भर से इसी प्रकार हैं कुछ थोड़ा सा खालें।

डाक्टर ने मुस्करा कर उत्तर दिया—मुझे भूख नहीं है।

दीदी नें जब बहुत आग्रह किया तो उसने थोड़ा सा भोजन कर लिया और फिर आकर हाल में बैठ सिगरेट पीने लगा।

डाक्टर को विश्वास हो गया कि अब वह राजदेव की रक्षा नहीं कर सकता; चोट उसकी सांघातिक है परन्तु चाहता वह यह है कि एक बार वह उसकी बेहोशी को दूर कर दे जिससे वह क्षण भर ही सही कुछ कह सुन ले।

इसी प्रयत्न में वह लगा रहा। दूसरे दिन प्रातः राजदेव को होश आया। मृत्यु के पूर्व उसके हृदय का कलुष जैसे धुल कर साफ़ हो गया हो। डाक्टर को अपने निकट देख वह बोला—डाक्टर, तुमने मेरे लिए बहुत कुछ किया। मेरे कटु वाक्यों को सुन कर भी तुम उसी प्रकार मेरी परिचर्या में लगे रहे। अब मेरा अन्तिम समय है; मेरी बातों को तुम क्षमा करना।

'आप अच्छे हो जाँयगे; निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं।' डाक्टर ने कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

राजदेव के अधरों पर एक पीड़ा विमिश्रित मुस्कान खेल गई धीमे स्वर में उसने कहा—डाक्टर, जब मृत्यु आती है तब उसका आगमन मनुष्य को स्पष्ट ज्ञात हो जाता है। तुम मुझे झूठ में संतोष नहीं दे सकते। जानता हूँ मैं कि मृत्यु का अंधकार प्रति-क्षण मेरे निकट आता जा रहा है।

डाक्टर ने कोई उत्तर न दिया तो राजदेव ने नलिनी को अपने निकट बुलाया। उसकी आँखों से आँसू बह कर उसके कपोलों पर आ रहे थे। राजदेव ने उसकी ओर कातर दृष्टि से देखते हुए कहा—नलिनी मैंने तुम्हें बहुत कष्ट दिया, बहुत उपेक्षा की किन्तु तुमने सब कुछ बिना कुछ कहे सह लिया। अन्त समय मैंने तुम पर संदेह किया जिसकी पीड़ा से मैं आज स्वयं ही व्यथित हूँ और शायद मृत्यु के क्षण तक यह वेदना मेरे अंतर को जलाती रहेगी। किन्तु अब वह सभी संदेह मेरे हृदय से जाता रहा है। नलिनी अब मृत्यु के क्षणों में मेरे पास केवल पश्चात्ताप है; उसे ही लेकर मैं जा रहा हूँ। नलिनी क्या तुम मुझे क्षमा कर सकोगी।

नलिनी फफक कर रो पड़ी। अपना सिर उसने राजदेव के चरणों पर रख दिया और फूट-फूट कर रोने लगी।

राजदेव ने आँखें बन्द कर लीं ऐसा जान पड़ता था उसके प्राण मृत्यु की यंत्रणा से तड़प रहे थे। डाक्टर ने कितने ही व्यक्तियों को मरते देखा है; वह समझ गया कि राजदेव अब केवल कुछ क्षणों का ही अतिथि है सो वहाँ से वह बाहर आकर एक कुर्सी पर बैठ गया।

उसके मस्तिष्क में भाँति-भाँति के विचार आ रहेथे। तभी सहसा उसने सुना नलिनी चीख मार कर रो पड़ी। घर में से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रोने की आवाज़ उठ कर आकाश का अंतर चीरने लगी। डाक्टर ने समझ लिया कि सब कुछ समाप्त हो गया। वह कुछ देर तक उसी प्रकार बैठा सा रहा फिर भीतर जा कर उसने देखा नलिनी बेहोश पड़ी है!

उस दिन डाक्टर बहुत उदास रहा; जी उसका किसी काम में लग नहीं रहा था। रह-रह कर उसकी आँखों के सम्मुख नलिनी की वे वेदना भरी आँखें नाच जातीं। कितना दुःखमय नलिनी का जीवन हो गया है। यह बेचारी नलिनी जीवन में सुख शायद पाने के लिए उत्पन्न ही नहीं हुई। जब से ब्याह कर राजदेव के पास आई उसने सुख का एक भी तो क्षण नहीं देखा। सदैव ही वह अन्तर की वेदना में घुलती रही है।

पाँच वर्ष पूर्व की नलिनी का चित्र उसकी आँखों के सम्मुख आ कर नाच गया; कितनी सुन्दर दीख पड़ती थी वह उस समय और अब उसका सौन्दर्य बिखर गया है; जैसे किसी ने अधखिले पुष्प को मसल दिया हो।

संध्या हो गई तो उसने नौकर से चाय लाने को कहा। इस समय वह डिस्पेन्सरी में जायगा। कई दिन से दवाखाने में नहीं गया। उसके कितने ही मरीज़ आ कर लौट जाते होंगे आख़िर उसे उनका भी तो ध्यान रखना चाहिए।

चाय पी कर घर से निकला तो सहसा जी में आया राजदेव की मृत्यु के पश्चात् वह कई दिन से नलिनी के यहाँ नहीं गया। नलिनी के यहाँ जाने का जाने क्यों उसे साहस नहीं होता पर क्या कहती होगी नलिनी बेचारी? इतना बड़ा दुख पड़ा है और वह उसको अपने शब्दों से सान्त्वना भी तो नहीं दे रहा है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सोचता हुआ वह नलिनी के बँगले पर पहुँचा। बाहर सब सुनसान था। डाक्टर ने बरामदे में पैर रखा ही था कि लक्ष्मी बाहर आ गई। डाक्टर ने पूछा—बहू जी कहाँ हैं?

लक्ष्मी ने उत्तर दिया—उनकी तो उसी दिन से तबीयत ख़राब है अपने कमरे में पड़ी रहती है।

डाक्टर बिना कुछ उत्तर दिए हाल पार करता हुआ नलिनी के कमरे में चला गया। देखा तो नलिनी का शरीर कंकाल हो गया है। पलङ्ग पर वह जीवित शव की भाँति पड़ी हुई है। दीदी निकट ही बैठी थीं। डाक्टर को देख कर दीदी उठ खड़ी हुईं बोलीं—आ गए भैया तुम!

'हाँ दीदी।' कह कर डाक्टर नलिनी की नाड़ी देखने लगा।

पूछा—कब से इनकी यह दशा है।

'उसी दिन से।' दीदी ने उत्तर दिया।

'तो आपने मुझे ख़बर क्यों न दी।'

तुम्हारी दुकान पर तो कई बार आदमी भेजा पर ज्ञात हुआ तुम्हारी कुछ तबीयत ख़राब है सो दूकान पर नहीं बैठते। फिर क्या करती।' दीदी ने उत्तर दिया।

डाक्टर क्षण भर चुप रहा फिर कहा—मैं बीमार नहीं था पर हाँ, जी कुछ ठीक नहीं था। खबर मिलती तो अवश्य ही आता।

नलिनी सो रही थी। डाक्टर के स्पर्श से वह जग पड़ी। करुण दृष्टि से एक बार डाक्टर की ओर देखा फिर करवट ले कर आँखें बन्द कर ली?

डाक्टर ने पूछा—'कैसी तबीयत है नलिनी।'

नलिनी की आँखों से आँसू बह रहे थे। बोली—अच्छी हूँ डाक्टर, जिसके जीवन में कोई आकर्षण शेष न रह गया हो उसके लिए मृत्यु ही भली होती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाक्टर दुःखी हो उठा बोला—नलिनी जीवन में यदि हम इस प्रकार निराश हो जाँय तो हमारा काम तो नहीं चल सकता। जो कुछ हमें अदृश्य प्रदान करता है वह तो हमें स्वीकार करना ही होगा। अपने स्वास्थ्य का तुम्हें ध्यान देना चाहिए।

'ध्यान तो देती हूँ डाक्टर! सब यही कहते हैं पर मैं नहीं समझती कि मैं क्या करूँ?'

डाक्टर चुप रहा; दीदी की ओर उसने देखा तो दीदी की आँखों में आँसू भर रहे थे।

उठते हुए डाक्टर ने कहा—खैर मैं दूकान जा रहा हूँ दवा भिजवा दूँगा। शीघ्र ही यह ठीक हो जायगी। हाँ, अपने चित्त को प्रसन्न रखे।

नलिनी चुप रही। डाक्टर उठ कर धीरे-धीरे कमरे से बाहर चला गया। डिस्पेन्सरी उसकी दूर पड़ती है पर आज उसने अपनी कार न ली थी।

टहलता हुआ वह जिस समय दूकान पर पहुँचा कम्पाउंडर को इस प्रकार डाक्टर को आते देख आश्चर्य हुआ। डाक्टर कभी इतने उदास नहीं दिखाई पड़ते थे। जान पड़ता था, जैसे महीनों की बीमारी के पश्चात् उठे हों।

अपने स्थान पर बैठ कर डाक्टर ने नलिनी की दवा का नुस्ख़ा लिखा; फिर दवा तैयार करा कर नौकर के हाथ भेज दी।

मरीज़ जैसे जानते हों कि डाक्टर आज दूकान पर आयेगा, ताँता सा लग गया और डाक्टर यंत्र सा सब की परीक्षा करता और नुस्ख़ा लिखता रहा।

रात दूकान से लौट रहा था तो जी में आया नलिनी को देखता चले परन्तु फिर सोचा रात अधिक हो गई है इस समय

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जाना ठीक न होगा पर जब उसका बँगला सामने आया तो अनजान में ही डाक्टर आ कर नलिनी के बरामदे में खड़ा हो गया। नौकर ने आ कर सलाम किया तो डाक्टर को ध्यान आया कि वह कहाँ आ गया है। पूछा—बहू जी का जी कैसा है।

'अभी तो ठीक थीं; खबर कर दूँ।' नौकर ने कहा।

'नहीं। कोई आवश्यकता नहीं।' डाक्टर ने कहा और फिर बँगले से बाहर हो गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—नौ—

उमेश ने नलिनी की चिकित्सा प्रारम्भ कर दी। दोनों समय वह नलिनी को देखने जाता है परन्तु उसकी दशा में कुछ सुधार नहीं दिखाई पड़ता। आज जब डाक्टर आया तो बाहर दीदी बैठी हुई थी। डाक्टर को देख उठ खड़ी हुई एक कुर्सी खिसका कर बैठने को कह बोली—डाक्टर साहब, आखिर बहू को हो क्या गया है जो चारपाई से उठ नहीं पा रही हैं।

डाक्टर ने उत्तर दिया—यही तो मैं स्वयं ही सोच रहा हूँ; इतना प्रयत्न करता हूँ, परन्तु नलिनी की बीमारी कुछ घटती दृष्टि गोचर नहीं हो रही है। इसका सब से बड़ा कारण यह है कि वह दिन रात सोचती रहती हैं। हृदय को उनके एक भारी धक्का लगा है और उस धक्के को सहन करने में वे असमर्थ हैं।

दीदी क्षण भर सोचती रहीं फिर बोलीं—डाक्टर जीवन में दुःख जब आते हैं तो सहना ही पड़ता है; मुझी को देखो जीवन में जाने कितना दुःख समेट कर रखा है पर क्या करूँ!

डाक्टर चुप सुनता रहा फिर उठ कर नलिनी के कमरे में गया तो देखा नलिनी लेटी हुई कुछ सोच रही है। डाक्टर को देख कर नलिनी ने अधरों पर मुस्कान लाने का प्रयत्न किया। सिरहाने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बैठते हुए डाक्टर ने कहा—नलिनी तुम अपने स्वास्थ्य का ध्यान तनिक भी नहीं रखती। इस तरह तो तुम कभी अच्छी न हो सकोगी।

'जब तुम मेरे स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए हो तो फिर मैं और अधिक ध्यान क्या रख सकती हूँ। मृत्यु ने तो मुझे आ घेरा था पर तुमने मरने नहीं दिया बरबश मुझे मृत्यु के मुँह से खीच कर बाहर कर लिया है।'

'मेरे रहते मृत्यु तुम्हारे निकट आ नहीं सकती नलिनी यह तो मैं जानता हूँ पर इस तरह बिछौने पर पड़े रहना भी तो ठीक नहीं। जब तक तुम अपने मन को प्रसन्न करने का प्रयत्न नहीं करोगी तुम कभी अच्छी न हो सकोगी।'

'चाहती तो मैं हूँ डाक्टर! अपने निकट जब तुम्हें देखती हूँ तो एक बार सारा दुःख जैसे भूल जाता है पर यह व्यथा जो मेरे अन्तर में बस गई है यह जाती जो नहीं। कुछ अपने से दुःखी मैं नहीं रहती।'

डाक्टर चुप रहा। वह ध्यान से नलिनी को देख रहा था।

उस दिन डाक्टर नलिनी के पास बहुत देर तक बैठा रहा जब घर पहुँचा तो बहुत देर हो गई थी। डाक्टर कुर्सी पर लेटा बड़ी देर तक नलिनी के सम्बन्ध में सोचता रहा। जाने क्यों इधर कुछ दिनों से वह नलिनी के प्रति बहुत अधिक आकर्षित होता जा रहा है। उसे अपनी इस प्रवृत्ति पर स्वयं ही आश्चर्य होता है परन्तु किसी अज्ञात शक्ति द्वारा वह उसकी ओर खिचता जा रहा है। अब तक डाक्टर को गर्व था कि वह अपने हृदय पर विजय प्राप्त कर सकता है परन्तु अब वह अनुभव कर रहा है कि यह उसकी भूल है। वह चाहता है कि वह अधिकांश

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समय नलिनी के निकट बैठ कर काट दे। परन्तु क्या यह कभी सम्भव हो सकता है। जाने क्यों अब वह अनुभव करने लगा है कि बिना नलिनी के अब वह नहीं रह सकता; नलिनी को अपना लेने की एक प्रबल आकांक्षा उसके हृदय को उत्तेजित करती है। इसी लिए उसने नलिनी के निकट अधिक बैठना छोड़ दिया। वह नहीं चाहता कि कभी उसके मुँह से ऐसी कोई बात निकल जाय जिससे उसे कष्ट हो। सोचते हुए उसकी वेदना जब फैलने लगी तो उसने मन बहलाने के लिये आलमारी पर से एक पुस्तक उठा ली; पढ़ने लगा पर अक्षर जैसे उसे दिखाई न पड़ रहे थे सारी पुस्तक में जैसे काली-काली कुछ रेखाये खिंच गई हों। पुस्तक उसने बन्द करके मेज पर रख दी और पलँग पर जाकर लेट रहा।

नलिनी अब अच्छी हो गई है परन्तु कमजोरी अभी बहुत अधिक है। दिन भर वह बँगले में ही रहती है। आज शाम को डाक्टर आया तो नलिनी ने थोड़ी दूर घूम आने का प्रस्ताव किया। डाक्टर जानता है कि थोड़ी दूर टहलने से नलिनी का मन बदल जायगा सो बोला—चलो थोड़ी दूर टहल आयें।

बँगले से आगे चल कर जो चौराहा है उधर को एक नाली पड़ती है। ऊपर का पत्थर उसका टूट गया है। उसे पार करने लगी तो डाक्टर ने नलिनी का हाथ पकड़ लिया और फिर वह उसका हाथ पकड़े ही रहा।

नलिनी को जैसे यह सब अच्छा लग रहा हो डाक्टर के स्पर्श से वह एक अजीब स्फूर्ति का अनुभव कर रही थी सो उसी प्रकार चलती रही।

डाक्टर ने कहा—नलिनी, तुम्हें इस प्रकार साथ ले चलने

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

में मुझे एक अनिवर्चनीय सुख का अनुभव होता है। चाहता हूँ कि सदैव मैं तुम्हारे साथ रहूँ।

'डाक्टर !' नलिनी ने कहा फिर वह चुप हो गई शायद कुछ कहना चाहती थी पर फिर वह चुप रह गई।

डाक्टर अधिक भावुक हो उठा था। नलिनी का सामीप्य उसे वास्तविक संसार से कहीं दूर ले जा चुका था। उसने कहा - नलिनी तुम्हारी रुग्णा अवस्था में जब मैं तुम्हें देखता था तब एक बार वह क्षण स्मरण हो आता था जब तुमने मुझे आत्म समर्पण करना चाहा था परन्तु उस समय मैं कर्तव्य की मिथ्या भावना के आवेश में तुम्हें स्वीकार न कर सका और अब जीवन भर उस एक भूल का प्रायश्चित्त कर रहा हूँ।

'डाक्टर जीवन के कुछ क्षण ही जीवन के लिए उत्तरदायी बन जाँय यह तो कदापि ठीक नहीं।'

'समझता हूँ नलिनी, किन्तु एक स्थान जो तुमने बना लिया है वहाँ कोई दूसरा जो पहुँच ही नहीं सका तो आख़िर इसमें मेरा अपराध ही क्या ?'

नलिनी क्षण भर चुप रही फिर बोली—डाक्टर उस समय तुम एक नवयुवक थे देखती हूँ तब तुम में जो कर्तव्य का ज्ञान था वह अब अवस्था पाकर जाता रहा है।

नलिनी की बात डाक्टर को चुभ सी गई पर फिर उसने कहा—वह ज्ञान चला नहीं गया नलिनी हाँ उसमें अब अनुभव का पानी अवश्य चढ़ गया है।

'उस क्षण को भूल जाओ डाक्टर; उस समय मैंने तुम को देखा था; अपने अन्तर का प्रथम प्यार तुम्हारे ऊपर बिखेर दिया था; तुमने उसे स्वीकार न किया तो तुम्हें पाने के लिए

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैंने वह उपाय ग्रहण किया था। पर जो भाग्य में हमारे नहीं है उसे हम पा ही कैसे सकते हैं।'

डाक्टर ने नलिनी के हाथ को उठा कर हृदय पर रख लिया। नलिनी ने उसका विरोध नहीं किया। सड़क पर एक आध आदमी आ जा रहे थे उनकी छाया बिजली के प्रकाश में भूतों की भाँति खिसकती हुई जान पड़ी।

सड़क के तिराहे पर एक तिकोना सा पार्क बन हुआ है। नलिनी थक गई थी तो पार्क में पड़ी एक बेंच पर जाकर बैठ गई। डाक्टर भी उसके निकट बैठ गया।

थोड़ी देर वे चुप रहे। आकाश में चन्द्रमा नहीं था परन्तु तारे बिखरे हुए थे। धीमी-धीमी हवा में बाग़ के किनारे लगी हुई मेंहदी की पत्तियाँ हिल रही थीं। डाक्टर यह सब जैसे न देख रहा हो उसका सारा ध्यान नलिनी की ओर था। इतना एकान्त और सामीप्य डाक्टर को नलिनी के साथ नहीं प्राप्त हुआ था इसलिए उसके जी में आ रहा था कि वह आज अपना हृदय खोलकर नलिनी के सम्मुख रख दे परन्तु वाणी उसकी जैसे मूक हो गई हो; हृदय में जो एक दर्द वह वर्षों से दबा कर रखता आया है वह उभर कर जैसे कंठ तक आकर उसे मूक किए दे रहा था।

नलिनी डाक्टर की परिस्थिति का अनुभव कर रही थी वह जानती थी कि डाक्टर इस समय हृदय की यंत्रणा में छटपटा रहा है परन्तु वह नहीं चाहती कि डाक्टर उसके सम्मुख अपना हृदय बिखेर दे। इतना बड़ा भार वह सह जो नहीं सकती। डाक्टर के लिए वह कुछ भी तो देने से इन्कार नहीं कर सकती; एक बार उसने स्वयं ही तो डाक्टर को वह देना चाहा था जिसे आज डाक्टर उससे माँगना चाहता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

क्षण भर तक वह उसी प्रकार बैठी रही फिर बोली—डाक्टर अब चलो घर चलें। मुझे थकान मालूम हो रही है।

डाक्टर ने कुछ उत्तर न दिया। नलिनी को साथ ले वह घर की ओर चल पड़ा। रास्ते भर उसका हृदय जैसे मथा जा रहा हो। बँगले के निकट पहुँच डाक्टर ने कहा – नलिनी, एक बात कहूँ स्वीकार करोगी।

'क्या ?' गम्भीर होकर नलिनी ने कहा।

'क्या तुम कभी-कभी मेरे साथ इसी तरह टहलने चला करोगी।' डाक्टर के शब्दों में याचना थी।

क्षण भर तक नलिनी सोचती रही फिर बोली—डाक्टर तुम कुछ भी कहोगे वह मुझे स्वीकार है जानती हूँ कि तुम जो कुछ भी कहोगे मेरे हित के लिए ही कहोगे। पर यदि हम एक दूसरे से दूर ही रहें तो अच्छा होगा।

'नलिनी !' डाक्टर ने पीड़ा—मिश्रित स्वर में कहा !

'हाँ डाक्टर, हम अपने हृदय पर विजय नहीं प्राप्त कर सकते।' नलिनी उसी प्रकार गम्भीर बनी रही।

डाक्टर क्षण भर चुप रहा फिर कहा—नलिनी आज मैं अधिक भावुक हो गया था पर तुम्हें मैं विश्वास दिलाता हूँ कि भविष्य में तुम मुझे ऐसा न पाओगी। मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार कर लो नलिनी।

'डाक्टर तुम्हारे लिए मैं सब कुछ कर सकती हूँ।' नलिनी ने सिर नीचे किए हुए उत्तर दिया।

डाक्टर के मुख पर प्रसन्नता की रेखा खेल गई, बोला वह—तो कल शाम को तुम मेरी कार से चलो तो शहर के बाहर तक हम लोग घूम आयें। बाहर की खुली हवा तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक भी होगी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'अच्छी बात है।' नलिनी ने उत्तर दिया।

बँगला आ गया था। नलिनी भीतर जाने लगी तो डाक्टर ने कहा—अच्छा नलिनी मैं चलता हूँ कल फिर शाम को आऊँगा।

'अच्छा।' नलिनी ने कहा और नमस्ते कर भीतर चली गई तो डाक्टर अपने घर की ओर लौट पड़ा।

आज वह अत्यधिक प्रसन्न था; नलिनी के साथ के सुख की आशा से उसका मन अत्यधिक प्रसन्न हो रहा था।

और नलिनी जाकर अपने पलँग पर लेट गई। उसके हृदय में इस समय एक तूफान सा उठ रहा था। वह नहीं जानती कि डाक्टर की बात को स्वीकार करके उसने उचित किया है या नहीं परन्तु यह वह अवश्य ही अनुभव कर रही है कि वह जिस मार्ग पर जा रही है वह अंत में उनके लिये दुःखदायी हो जायगा परन्तु डाक्टर के हृदय को वह दुःखी भी तो नहीं करना चाहती। वह नहीं चाहती कि डाक्टर निराश हो, उसके लिए वह बड़ा से बड़ा त्याग करने को उद्यत है। और वह अनुभव भी करती है डाक्टर बिना उसके नहीं रह सकता किन्तु क्या कर सकती है वह।

सोचती हुई वह पड़ी रही। दीदी उसके निकट आकर खड़ी हो गई इसका उसे पता ही न था। दीदी ने कहा—बहू, थक गई क्या ?

तो उसने उत्तर दिया—हाँ दीदी, अभी बड़ी कमज़ोरी महसूस करती हूँ पर टहलने से जी बहल गया अवश्य !

'तो रोज थोड़ा घूम टहल लिया करो बहू' दीदी ने कहा और फिर उसे सोने को कह, अपने कमरे में चली गईं।

—:❀❀❀:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—दस—

दूसरे दिन संध्या समय डाक्टर कार ले कर आया। नलिनी अपने कमरे में बैठी एक उपन्यास पढ़ रही थी। डाक्टर को देख कर उसने पुस्तक बन्द करके रख दी। डाक्टर निकट ही एक कुर्सी पर बैठ गया। उपन्यास उसने उठा लिया देखा—'इडियट' था।

नलिनी को 'इडियट' की नायिका बहुत पसन्द है। कितनी ही बार वह इस उपन्यास को पढ़ चुकी है पर उसे जैसे तृप्ति नहीं होती।

डाक्टर ने कहा—यह उपन्यास तुम्हें बहुत प्रिय है नलिनी।

'हाँ, आज बहुत दिनों बाद इसे पढ़ रही थी।'

डाक्टर ने उपन्यास मेज़ पर रख दिया और बोला—इन उपन्यासों में जिस जीवन का चित्रण यह लेखक करते हैं वास्तविकता से कितनी दूर होता है यदि यह लेखक इसे समझ सकते तो शायद कहीं अच्छी चीज़ यह संसार को प्रदान कर सकते।

नलिनी ने कहा—जीवन में जो असंतोष है उसे मनुष्य कल्पना द्वारा पूरा करने का प्रयत्न करता है और उसका यही प्रयास तो साहित्य में अपनी व्यञ्जना प्राप्त करता है। जीवन की वास्तविकता से पलायन ही तो साहित्य की सृष्टि करता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाक्टर को साहित्य का अध्ययन करने का कभी अधिक अवसर नहीं मिला। कभी-कभी अवश्य मन बहलाने के लिए वह उपन्यास कहानियाँ पढ़ लिया करता है इसलिए उसने नलिनी की बातों का उत्तर नहीं दिया।

क्षण भर चुप रह उसने कहा—नलिनी चलो तैयार हो ?

नलिनी ने डाक्टर की ओर देखा और फिर उठ कर भीतर चली गई। डाक्टर ने एक सिगरेट निकाली और उसे सुलगा कर पीने लगा।

नलिनी कपड़े पहन कर जब निकली तब डाक्टर की सिगरेट प्रायः समाप्त हो चुकी थी उसने सिगरेट की अंतिम कश ले कर उसे खिड़की से बाहर फेंक दिया और उठ खड़ा हुआ।

नलिनी कार पर आ कर पीछे की सीट पर बैठ गई। डाक्टर ने एक बार नलिनी को देखा फिर मोटर स्टार्ट कर दी।

मोटर शहर के बाहर की ओर तीव्र गति से जा रही थी। बाहर की ताज़ी हवा, खेतों की हरियाली और अपने-अपने नीड़ों को लौटते हुए पक्षियों के कलरव ने नलिनी के हृदय में एक नई स्फूर्ति भर दी। वह प्रकृति में बिखरे हुए मधु का निरीक्षण कर रही थी। आज इसे ऐसा जान पड़ रहा था जैसे वह एक दूसरी ही दुनिया में विचर रही हो।

शहर से दूर एक पुलिया के निकट डाक्टर ने मोटर रोक दी। नलिनी उतर पड़ी। बाहर आकाश में संध्या का धूमिल प्रकाश फैल रहा था। दूर तक फैले हुए हरे भरे खेत जैसे उसे अपनी ओर आने का इङ्गित कर रहे हों। लहराते हुए धानों की बालें संध्या के प्रकाश में सुनहली सी फहरा रही थीं। नलिनी खेतों के बीच चाँदी की रेखा सी पगडंडी पर चलने लगी तो डाक्टर भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

थोड़ी दूर जाकर एक छोटे से टीले पर नलिनी बैठ गई। डाक्टर भी उसके निकट बैठ गया। नलिनी प्रकृति के इस आकर्षक रूप को मुग्ध सी निहार रही थी। डाक्टर उसकी ओर अनिमेष देख रहा था। उसके अधर इस समय अधिक लाल हो उठे, उनमें एक निमन्त्रण झाँक रहा था उसकी आँखें नीली तथा आकर्षक थीं; उसका शरीर जैसे वासना को जगा रहा था।

डाक्टर मुग्ध सा यह सब देखता रहा। वह सोच रहा था नलिनी अभी युवती है सुन्दर है असमय में ही विधवा हो गई परन्तु नहीं उसे यौवन के सुख से वंचित करने का समाज को अधिकार नहीं है। वह नलिनी से की गई अपनी प्रतिज्ञा को भूल गया।

सहसा नलिनी की अँगुलियाँ उसके हाथ से छू गई। डाक्टर ने अनुभव किया जैसे बिजली छू गई हो। उसने नलिनी के हाथ को अपने हाथ में ले लिया। उसका सारा शरीर जैसे काँप रहा था।

डाक्टर का स्पर्श पा नलिनी का ध्यान जैसे भङ्ग हो गया उसने डाक्टर की ओर देखा। आँखों से आँखें टकरा गई तो डाक्टर को जान पड़ा जैसे उसका कुछ खो गया हो। नलिनी की आँखों में मद छलक रहा था। क्षण भर तक वह नलिनी की ओर देखता रहा फिर उसने नलिनी को अपनी ओर खींच लिया नलिनी ने डाक्टर के इस कृत्य का विरोध नहीं किया। विरोध करने की शायद उसमें शक्ति ही शेष नहीं रह गई थी।

डाक्टर ने उसे अपने हृदय से कस कर चिपका लिया और उसके काँपते हुए अधरों को चूमने लगा। उसे ऐसा लग रहा था

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जैसे संसार की समस्त निधि उसे मिल गई हो; वह अपने को, समस्त संसार का जैसे भूल गया था। नलिनी उसके अङ्क में उसी प्रकार पड़ी रही जैसे भयभीत कबूतरी अपने नीड़ में जा छिपती है।

कितनी देर तक वे इसी प्रकार पड़े रहे इसका किसी को ज्ञान नहीं; फिर जैसे सहसा नलिनी को ध्यान आगया। डाक्टर के बाहुपाश से अपने को मुक्त करती हुई उसने एक बार उसकी ओर कातर दृष्टि से देखा; फिर कहा—तुम कहोगे इसके लिए तुम्हें मैंने उत्साहित किया।

डाक्टर हत्बुद्धि सा नलिनी की ओर देखता रहा। वह क्या कह रही है, यह जैसे वह समझ ही न पा रहा हो। नलिनी ने उसकी ओर देखते हुए कहा—डाक्टर, यह तुमने अच्छा नहीं किया।

डाक्टर को जैसे अपने कृत्य पर लज्जा आ रही हो। वह सिर नीचे डाले खड़ा रहा। नलिनी पल भर उसे देखती रही फिर वह रोने लगी तो डाक्टर की ज्ञान शक्ति जैसे लौटी। नलिनी का हाथ पकड़ वह मोटर में ले आया तो पिछली सीट पर गिर नलिनी ज़ोर से फूट-फूट कर रो पड़ी।

डाक्टर ने उसे धीरज बँधाते हुए कहा—नलिनी, इसमें इस प्रकार दुःखी होने की क्या बात है? आखिर हमने कौन सा ऐसा बुरा काम किया जिसके लिये तुम इस प्रकार रो रही हो? हम एक दूसरे को प्रेम करते हैं फिर इस प्रकार दुःखी होने का क्या कारण!

'डाक्टर काश, तुम मेरे हृदय को समझ सकते।' नलिनी ने अपने आँसुओं को पोंछते हुए कहा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'समझता हूँ नलिनी, पर तुम अपने हृदय पर अत्याचार कर रही हो। मैं जानता हूँ कि तुम मुझे सदैव ही प्रेम करती रही हो फिर उसे अस्वीकार करने से लाभ !'

'प्यार मैं तुम्हें करती रही हूँ डाक्टर और सदैव ही करूँगी परन्तु मैंने तुम्हें हृदय से प्रेम किया है। हृदय पर सदैव ही तुम्हारा अधिकार रहेगा परन्तु यह शरीर मैं तुम्हें प्रदान नहीं कर सकती डाक्टर ! आज इस शरीर का उपभोग करके तुमने मेरे साथ घोर अन्याय किया है।

डाक्टर ने कुछ उत्तर न दिया; केवल वह नलिनी की ओर देखता रहा फिर कहा—नलिनी मैं तुमसे विवाह करने को उद्यत हूँ। जानता हूँ इसमें समाज की अड़चन है परन्तु मैं समाज को ठुकरा दूँगा। जानती हो नलिनी, केवल तुम्हीं हो जो मेरे जीवन को सुखमय बना सकती हो। जब तक तुम्हारे पति जीवित थे मैंने एक क्षण के लिये भी तुम्हारे जीवन में आने का प्रयत्न नहीं किया परन्तु अब तुम स्वतंत्र हो तो मैंने तुमसे यह प्रस्ताव करने का साहस किया है।

नलिनी जैसे आश्चर्य से चकित हो रही हो; बोली—डाक्टर तुम आज कह क्या रहे हो ?

'नलिनी आज मैं वही कह रहा हूँ जो मैं बहुत दिनों से अपने हृदय में रखे रहा हूँ, जिसके कहने के लिए मैं उपयुक्त अवसर खोज रहा था।' डाक्टर ने नलिनी की ओर याचना-पूर्ण दृष्टि से देखते हुए उत्तर दिया।

'पर डाक्टर यह सम्भव नहीं।' नलिनी ने उत्तर दिया; उसके स्वर में दृढ़ निश्चय था।

'क्यों सम्भव नहीं नलिनी ?'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'कुछ भी हो डाक्टर, पर यह सम्भव नहीं।'

'तो क्या नलिनी तुम मेरे जीवन को इसी प्रकार नष्ट होते देखना पसन्द करती हो ?'

'नहीं, मैं चाहती हूँ डाक्टर, कि तुम अपने जीवन को सुखी बनाओ पर मैं तुमसे क्षमा चाहती हूँ। तुम्हारे प्रेम का प्रतिदान देने में मैं असमर्थ हूँ। तुम्हें मैं सुखी करूँ यह सम्भव नहीं है डाक्टर।'

डाक्टर की आशा पर तुषार-पात हो गया। किन्तु सँभल कर उसने कहा—तो नलिनी क्या मैं यह समझ लूँ कि तुम मुझे प्रेम नहीं करतीं।'

'प्रेम ! डाक्टर, प्रेम तो मैंने जीवन में केवल तुम्हें ही किया और तुम्हें ही करूँगी परन्तु मुझे बाध्य न करो डाक्टर ! तुम्हारे लिए कुछ भी इन्कार करने में मेरे हृदय के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।'

डाक्टर क्षण भर चुप रहा फिर बोला—नलिनी केवल एक बात तुमसे पूछना चाहता हूँ। आखिर तुम मुझसे विवाह कर क्यों नहीं सकती ?

यह तुम न समझ सकोगे। यह संस्कार है। मैं स्त्री हूँ। वैधव्य का जीवन मैं काट लूँगी; अपने अरमानों की बलि देने में ही मैं सुख अनुभव करूँगी।' नलिनी ने जोश के साथ उत्तर दिया।

डाक्टर चुप रहा। मन में वह सोचता रहा क्या नारी के निकट संस्कार का इतना मूल्य है या नलिनी उसे धोखा दे रही है। उसने नलिनी से इस सम्बन्ध में अधिक बात करना उचित न समझा; मोटर स्टार्ट करते हुए उसने कहा—अच्छी बात है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नलिनी, तुम्हारे निर्णय का विरोध करने की शक्ति मुझ में नहीं है। सोचा था, एक बार अपना जीवन भी मधुमय बन सकेगा परन्तु जब भाग्य ने दिया ही नहीं तो उसकी शिकायत ही क्या ?

रास्ते भर डाक्टर विचारों में उलझा रहा। नलिनी के बँगले पर पहुँच कर उसने मोटर रोक दी। नलिनी उतर कर अन्दर जाने लगी तो डाक्टर ने कहा—और नलिनी आज के यह क्षण हमारे जीवन में उभर कर रहेंगे।

'भूल जाओ इन क्षणों को डाक्टर !' नलिनी ने उत्तर दिया और वह बँगले के अन्दर चली गई तो डाक्टर की मोटर शून्य की ओर बढ़ चली।

विक्षित से डाक्टर ने अपने कमरे में प्रवेश किया। इस समय उसका मस्तिष्क ठीक नहीं था। जाकर वह पलँग पर लेट गया। उसकी विचार-धारा चल रही थी। यह नलिनी भी अजीब है। कहती है मुझे वह प्रेम करती है, परन्तु समाज का भय उसे कितना है। संस्कार की आड़ में उसने डाक्टर की सारी दुनिया बरबाद कर दी। काश, नलिनी ने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया होता किन्तु यह न हो सका।

डाक्टर को जीवन से घृणा सी हो उठी है। चाहता था कि उसके जीवन को सँजो कर कोई रखता, पर कोई ऐसा उसे न मिला। जिसके निकट उसे आशा थी आज वहाँ से भी निराश होकर वह जैसे शून्य में खड़ा हो। अपना नीड़ डाक्टर बना नहीं सका।

नौकर ने आकर पूछा—आप खाना नहीं खायेंगे क्या ?

'नहीं ?' डाक्टर ने उसी प्रकार लेटे-लेटे उत्तर दिया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौकर को मालिक की आवाज़ कुछ भारी जान पड़ी तो निकट आकर उसने पूछा—आपकी कुछ तबीयत खराब है क्या ?

'नहीं। मेज़ पर से सिगरेट और दियासलाई उठा देना।'

नौकर ने सिगरेट और दियासलाई दे दी तो डाक्टर पड़ा हुआ एक के बाद दूसरा सिगरेट फूँकता रहा; पर जैसे उसे तृप्ति न हो रही थी।

— —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—ग्यारह—

प्रातःकाल जब डाक्टर उठा तो उसका हृदय हल्का था, रात्रि के जागरण के कारण उसकी आँखें लाल हो गई थीं और वह शारीरिक थकान का अनुभव कर रहा था। नौकर को बुला कर उसने चाय तैयार करने को कहा और हाल में आकर सिगरेट सुलगा कर पीने लगा।

उसे इस समय अपने ऊपर हँसी आ रही थी। रात की घटना बार-बार उसकी आँखों के सम्मुख नाच जाती। अपने जीवन के कितने ही वर्ष उसने व्यर्थ में गवाँ दिए। स्त्री को समझना एक पहेली है, यह डाक्टर ने कल अनुभव किया। यह नलिनी केवल उसके जीवन के साथ खेल करना चाहती है; चाहती है कि उसे प्रेम का कोई रूपक भर अपना जीवन नष्ट करता रहे। शायद स्त्री यही चाहती भी है। वह तो चाहती है केवल यह अनुभव करना कि कोई उसे प्रेम करता है।

सो डाक्टर नलिनी को जीवन की एक घटना मात्र मानता है। आखिर उन दोनों के बीच था ही क्या, चन्द चुम्बन, प्रेम की दो बातें और अधिक क्या? इतने के लिए ही तो कोई पुरुष अपना जीवन नष्ट नहीं कर सकता! उसने निश्चय कर लिया कि अब वह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नलिनी से नहीं मिलेगा। यही नहीं, नलिनी की स्मृति को वह अपने हृदय से सदा के लिए निकाल देगा।

नौकर चाय रख गया तो उसने चाय का एक घूँट पी लिया, और फिर दूसरी सिगरेट जला कर पीने लगा। चाय समाप्त डाक्टर ने छड़ी उठाई और टहलने के लिए निकल गया।

अपने विचारों में उलझा हुआ वह चला जा रहा था कि उसने देखा सामने से नलिनी दीदी के साथ चली आ रही है। डाक्टर को देख कर नलिनी ने नमस्कार किया। उसके अधरों पर एक मुस्कान खेल गई और फिर उसने गम्भीरता पूर्वक अपना सिर हिला कर आँखें नीची कर ली।

डाक्टर ने नलिनी की ओर देखा, फिर बोला—टहल कर आ रही हैं आप लोग! अच्छी बात है प्रातः का टहलना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभ-दायक है।

फिर क्षण भर पश्चात् कहा—अच्छा, चलें आप लोग। मैं भी चला!

बिना उत्तर की प्रतीक्षा किए वह आगे बढ़ गया। नलिनी ने एक बार उसकी ओर मुड़ कर देखा, अनुभव किया जैसे डाक्टर उससे दूर, बहुत दूर चला जा रहा हो। उसके हृदय में एक टीस उठी और फिर वह उदास सी दीदी के साथ चलने लगी।

डाक्टर जब टहल कर लौटा तो आठ बज चुके थे। दूकान पर जाने के पहले डाक्टर नाश्ता करता है, सो नौकर ने तुरन्त ही नाश्ता लाकर रख दिया। जी आज उसका बहुत प्रसन्न था। मालिक को इतना प्रसन्न नौकर ने बहुत कम देखा है। नाश्ता करके डाक्टर ने मोटर निकाली और दूकान पर चला गया।

जीवन में कभी-कभी ऐसी घटनाएँ घट जाती हैं जो हमारे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जीवन को एक प्रकार से बिल्कुल ही बदल देती हैं। डाक्टर को अब अपने जीवन से असंतोष हो उठा था। अब तक उसने कभी स्त्री का अभाव अनुभव नहीं किया था परन्तु आज वही अभाव उसके हृदय में उभर उठा है। कई दिन से वह सोच रहा है कि पिता को लिख दें कि उसे विवाह करना स्वीकार है; किसी भी स्त्री को वह प्रेम कर सकता है, ऐसी अब उसकी धारणा हो गई है। पहले सोचा था कि वह इसी प्रकार अविवाहित रह कर जीवन काट देगा; किन्तु जब राजदेव की मृत्यु हो गई तब उसके हृदय में एक नई आशा का जन्म हुआ। सोचा, नलिनी अब स्वतन्त्र हो गई है। माना कि नलिनी से विवाह करके वह भारी क्षति उठाता; उसके सम्मान को भारी आघात पहुँचता; सम्भव है उसके पेशे पर भी इसका प्रभाव पड़ता परन्तु यह सब सहन करने के लिए वह तैयार था।

किन्तु जब कल नलिनी से उसे निराशा मिल गई तो उसने निश्चय कर लिया कि शीघ्र ही वह किसी न किसी से विवाह कर लेगा।

सोचता हुआ कुर्सी पर बैठा ही था कि टेलीफ़ोन बज उठा, 'रिसीवर' उसने तुरन्त उठा लिया। राय साहब रमाकान्त के यहाँ का 'काल' था। उनकी लड़की बीमार हो गई है उसी को देखने के लिए बुलाया है। राय साहब डाक्टर के पुराने ग्राहक हैं। एक प्रकार से वह उनका 'फेमेली डाक्टर' हो गया है।

तुरन्त उसने कम्पांउडर से कहा—राय साहब के यहाँ मरीज़ देखने जा रहा हूँ।

'अच्छा साहब।' कम्पाउंडर ने उत्तर दिया।

और डाक्टर की मोटर सड़क की भीड़ में विलीन हो गई।

राय साहब की लड़की है लिली; यहाँ बी० ए० में पढ़ती है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कल रात यूनीवर्सिटी में नाटक था। लिली ने उसमें पार्ट किया था। सो रात देर से घर लौटी। तभी से उसकी तबीयत ख़राब हो गई और प्रातः जब माँ ने देखा उसे ज्वर था।

डाक्टर ने परीक्षा की और कहा—कोई विशेष बात नहीं है केवल अधिक परिश्रम के कारण ज्वर आ गया है। मैं दवा भिजवाये देता हूँ; कल तक ठीक हो जायगा। इन्हें आराम की आवश्यकता है।

'प्रेस्क्रिपशन' डाक्टर ने तुरन्त ही लिख दिया। चलते हुए उसने एक बार लिली को फिर देखा। कितनी सुन्दर युवती है। बड़ी-बड़ी आँखें, कृश शरीर, सोने का सा तपा हुआ रङ्ग, गालों पर जैसे किसी ने अँगूरी शराब ढुलका दी हो। आँखों में एक अजीब सी चञ्चलता है। क्षण भर डाक्टर यह सब देखता रहा जैसे इसके पूर्व उसने लिली को कभी न देखा था।

मार्ग में वह सोच रहा था; लिली कितनी सुन्दर है, अपने जाति की है। क्या राय साहब उसके साथ लिली को ब्याहने को तैयार न होंगे। वह कुछ निश्चय न कर सका।

दिन भर वह लिली के सम्बन्ध में सोचता रहा। दूसरे दिन राय साहब का नौकर आया तो डाक्टर ने पूछा—कहो लिली अब कैसी हैं।

'आज तो उनकी तबीयत बिल्कुल ठीक है। कालेज जाने के लिए ज़िद कर रही थीं पर राय साहब ने रोक दिया।'

'नहीं आज उन्हें और आराम करना चाहिए। उसने दवा का 'प्रेस्क्रिपशन' देखा, फिर उस में कुछ लिख कर वापस करते हुए कहा—उधर मुझे आज एक मरीज़ को देखने जाना है। शायद मैं आऊँ।

नौकर दवा लेकर चला गया तो डाक्टर फिर रोगियों में

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अपने को भूल गया। लिली के यहाँ जाने की बात उसे याद ही न रही। दूकान का काम समाप्त करके उठा तो ग्यारह बज रहे थे। उसे ज़ोर की भूख लग रही थी। परन्तु तभी ध्यान आया उसने राय साहब के नौकर से कह दिया है कि वह लिली को देखने के लिए आयेगा।

मोटर उसने राय साहब के बँगले की ओर घुमा दी। राय साहब उस समय हाल में थे। डाक्टर को देख उन्होंने उसका स्वागत किया—बोले—आज तो लिली बिल्कुल ठीक है डाक्टर साहब।

'हाँ नौकर से मैंने पूछा था। पर अभी एक मरीज़ देख कर इधर ही से जा रहा था, सोचा, आप के यहाँ भी होता चलूँ।' डाक्टर ने हौले से कहा।

'बड़ी कृपा की। तो शायद अब आप घर ही जा रहे थे।'

'जी हाँ।' डाक्टर ने उत्तर दिया।

फिर कुछ रुक कर पूछा—मिस लिली कहाँ है, ज़रा देखूँ उन्हें।

राय साहब ने लिली को आवाज़ दी तो वह तुरन्त ही हाल में आ गई। हलके हरे रङ्ग की साड़ी पहन रखी थी; बालों की एक लट उसके अधर पर लटक रही थी। आकर एक कुर्सी खिसका कर बैठ गई; डाक्टर ने पूछा—कहिए अब आप कैसी हैं!

'अब तो अच्छी हूँ बिल्कुल।'

डाक्टर ने लिली के हाथ को अपने हाथ में ले लिया; नाड़ी देखता रहा। लिली का स्पर्श आज उसे एक अजीब सुख दे रहा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

था। लिली डाक्टर की ओर देख रही थी जैसे वह उसके हृदय के भावों को पढ़ने का प्रयत्न कर रही हो।

डाक्टर ने हाथ छोड़ दिया तो लिली ने उसे अपनी ओर खींच लिया। डाक्टर ने कहा—अब यह बिल्कुल अच्छी हैं पर आज इन्हें और आराम करना चाहिए।

लिली हँस पड़ी।

रायसाहब ने कहा—यह तो आज कालेज जा रही थीं पर मैंने ही रोक दिया।

'अच्छा किया आपने; युवावस्था में मनुष्य को अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रहता।'

तभी नौकर आ गया बोला—सरकार खाना तैयार है।

डाक्टर ने उठते हुए कहा—अच्छा राय साहब मैं चला।

और फिर लिली की ओर निहार कर बोला—मिस लिली आज आप और आराम करें फिर कल से कालेज जा सकती हैं।

'धन्यवाद।' लिली ने धीरे से कहा। तभी रायसाहब ने कहा—डाक्टर साहब आप भी आज यहीं खाना खाइये।

डाक्टर हँस पड़ा! बोला—एक ही बात है रायसाहब घर पर भी नौकर खाना तैयार किए बैठा होगा।

'किन्तु आज आप यहीं खाना खाँय।'

उत्तर की बिना प्रतीक्षा किये उन्होंने लिली से कहा—बेटी डाइनिंग रूम में डाक्टर साहब के लिए भी थाली लगवाओ।

डाक्टर रायसाहब के इस अनुरोध को टाल न सका। रायसाहब और डाक्टर खाना खा रहे थे और लिली नौकर को चीजें लाने का आदेश दे रही थी। डाक्टर को आज का

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भोजन अधिक मधुर लगा। राय साहब की लच्छेदार बातों में उसे यह पता ही न लगा कि वह कितना खा चुका।

भोजन के उपरान्त जब डाक्टर चलने लगा तो राय साहब ने उसकी फीस उसकी ओर बढ़ाई। डाक्टर ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा, फिर कहा—राय साहब यह तो मेरा 'प्रोफेशनल काल' नहीं था।

राय साहब ने बहुत अनुरोध किया परन्तु उसने रुपया न स्वीकार किया तो राय साहब ने रुपया रख लिया। डाक्टर जब घर पहुँचा तो उसका जी बहुत प्रसन्न था। नौकर को बुला कर उसने कहा—खाना मैं नहीं खाऊँगा। और रुपया देकर एक पैकट सिगरेट लाने को कहा।

सिगरेट आ गई तो डाक्टर सोफ़े पर पड़ा एक के बाद दूसरा सिगरेट पीता रहा। उसे अपने जीवन में एक नई स्फूर्ति का अनुभव हो रहा था।

पड़ोस में एक वकील साहब रहते हैं। डाक्टर से उनकी बड़ी मित्रता है। बहुधा आकर जो शतरंज खेलने बैठ जाते हैं तो समय का ध्यान नहीं रहता। आज कोर्ट की छुट्टी थी। सो खा-पी कर आगए। डाक्टर पड़ा हुआ सिगरेट पी रहा था। उन्हें देखते ही वह उठ बैठा। वकील साहब आकर उसकी बगल में बैठ गए बोले—कहो डाक्टर आज बड़े प्रसन्न दिखाई पड़ रहे हो।

डाक्टर हँस पड़ा—मेरे जीवन में तो सदैव ही मधुमास रहता है। मिस्टर कपूर; उदास मैं कब रहता हूँ ?

कपूर ने डाक्टर का लक्ष्य समझ लिया। उनकी पत्नी सदैव ही उन पर संदेह किया करती हैं। कपूर का स्वभाव कुछ अजीब है। घर में अधिक देर वह रह नहीं सकता। प्रातः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुअक्किलों के मारे उसे अवकाश नहीं और शाम को वह क्लब चला जाता है। परन्तु मिसेज कपूर को अपने पति पर सदैव ही संदेह रहता है।

कपूर ने डाक्टर की बात सुन कर मुस्करा दिया; बोला—आज कुछ शतरंज-वतरंज नहीं जमेगी क्या ?

'हाँ हाँ' डाक्टर ने कहा और शतरंज के मोहरे बिछ गए। हार और जीत की बाज़ी चलने लगी।

———

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—बारह—

कई दिन हो गए डाक्टर राय साहब के यहाँ नहीं जा सका। कोई कारण था नहीं और बिना किसी बहाने के जाना डाक्टर को अच्छा नहीं लगता। प्रातः वह बैठा हुआ चाय पी रहा था कि नलिनी का नौकर आ गया। एक लिफाफा उसने डाक्टर के सामने रख दिया।

डाक्टर क्षण भर लिफ़ाफे को देखता रहा। फिर चाय का एक घूँट लेकर उसने लिफाफा उठा लिया। नलिनी ने लिखा था—

डाक्टर,।

उस दिन के बाद तुम फिर नहीं आये। क्या बुरा मान गए? तुम्हारी नलिनी का जीवन यों ही दुःखमय है। उसे इस प्रकार और दुःखी बना कर तुम क्या पाओगे।

क्या मैं आशा करूँ कि आज दूकान से लौटते हुए आओगे। भोजन भी यहीं करना।

तुम्हारी—नलिनी।

डाक्टर ने पत्र पढ़ा। क्षण भर सोचता रहा। आखिर यह नलिनी क्या चाहती है। उस दिन की घटना के पश्चात डाक्टर ने नलिनी का ध्यान बिल्कुल ही छोड़ दिया; वह नहीं चाहता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कि अब वह फिर नलिनी से मिले पर नलिनी उसे क्यों इस प्रकार प्रलोभन दिया करती है।

डाक्टर का मुख कठोर हो गया। उसने तुरन्त ही कलम उठाई और लिख दिया—

नलिनी,

मुझे खेद है कि मैं तुम्हारे आदेश का पालन न कर सकूँगा। जब हम एक नहीं हो सकते तो अधिक अच्छा है कि हम परस्पर दूर ही दूर रहें। सदैव चाहूँगा कि तुम सुखी रहो।

—उमेश।

पत्र लिफाफे में बन्द करके नौकर को दे दिया, जब नौकर चला गया तो डाक्टर सोचता रहा क्या उसने उचित किया है; क्या नलिनी को उससे ऐसी आशा रही होगी और आज यह पत्र पाकर उसे कितना कष्ट होगा परन्तु क्या करे डाक्टर! यह सब आखिर नलिनी ने ही तो किया है।

उसने एक सिगरेट जलाई और पीता हुआ कमरे में टहलता रहा।

शहर में नुमाइश हो रही थी सो डाक्टर ने सोचा शाम को चलो वहीं चलें कुछ देर मन ही बहल जायगा। यह सोच वह दूकान से शाम को जल्दी ही लौट आया। नौकर ने खाना तैयार कर रखा था पर डाक्टर को भूख नहीं थी। एक प्याला चाय पीकर वह प्रदर्शनी देखने चल पड़ा।

डाक्टर को प्रदर्शनी से कोई आकर्षण नहीं है।। सिगरेट पीता हुआ वह टहल रहा था कि सहसा पीछे से आकर किसी ने मधुर-कंठ में कहा—नमस्ते डाक्टर साहब!

डाक्टर ने चौक कर पीछे देखा तो लिली खड़ी मुस्करा रही थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाक्टर के हाथ उठ गए पूछा—रायसाहब भी आये हैं ?

'नहीं मैं अकेली ही आई हूँ।' लिली ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

डाक्टर के शरीर में रोमांच हो आया। बोला—आज मैं भी एकाकी महसूस कर रहा था सो इधर चला आया परन्तु कैसे इस भीड़ में आपने मुझे पहचान लिया !

लिली मुस्करा दी बोली—आप के निकट से कोई जाय और आप को न देखे यह असम्भव है; ऐसा कुछ आप का व्यक्तित्व ही है और फिर जो आप को पहचानते हैं वे तो आप को दूर से देख कर भी पहचान सकते हैं।

डाक्टर ने मुस्करा दिया।

टहलते हुए वे 'मृत्युकूप' के निकट आ गए। डाक्टर ने पूछा–आप देखेंगी।

'नहीं मुझे ऐसे साहस के काम देख कर भय लगता है।'

डाक्टर हँस पड़ा—'इसमें भय की क्या बात है ?' 'आप डाक्टर हैं; आप का हृदय कठोर हो गया है इसलिए आप को भय कैसे लग सकता है ?'

डाक्टर ने हँसते हुए कहा—इसमें संदेह नहीं मिस लिली कि हमारा पेशा बहुत ही कठोर है परन्तु इससे यह न समझो कि हमारा हृदय भी कठोर हो जाता है। हम भी औरों की भाँति दया, प्रेम, करुणा के शिकार होते हैं।

'पर मुझे तो विश्वास नहीं होता डाक्टर।' लिली ने हंसते हुए उत्तर दिया।

भीड़ अधिक थी तो उसकी उँगलियाँ मेरे हाथ से छू गईं। शरीर में एक बिजली सी प्रवेश कर गई। डाक्टर के मस्तिष्क में विचार की धारा तीव्रता के साथ बह रही थी। डाक्टर की शिक्षा

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ही इस प्रकार की हुई थी कि किसी काम को करने के पूर्व वह उस पर तर्क कर लेता है। उसने सोचा, लिली युवती है, नई सभ्यता में पली हुई है; उसमें अपने विचार प्रगट करने का साहस है; फिर उसने लिली के शब्दों के अर्थ समझने का प्रयत्न किया।

अनजाने में ही उसने लिली के हाथ को अपने हाथ में ले लिया। लिली ने कुछ विरोध न किया; तो वह उसके हाथ को क्षण भर उसी प्रकार लिए रहे। धीरे से उसने उन पतली अँगुलियों को अपने हाथों में दबा दिया।

लिली उसी प्रकार डाक्टर के साथ चलती रही; डाक्टर का सारा शरीर काँप सा रहा था; उसका कंठ रुँध सा गया था।

तभी डाक्टर ने कहा—मिस लिली, देर बहुत हो गई है अब हमें घर पर खाना न मिलेगा! आओ, कुछ खालें।

लिली ने कोई उत्तर न दिया तो डाक्टर उसका हाथ पकड़े एक होटल में चला गया। नौकर ने लाकर खाना रख दिया तो डाक्टर ने लिली से कहा—खाओ मिस लिली।

लिली ने एक बार डाक्टर की ओर देखा और फिर खाने लगी।

खाकर जब वे बाहर आये तो डाक्टर ने कहा—कल हम लोग कहीं संध्या को घूमने चलें तो कैसा।

लिली ने डाक्टर की ओर देखा फिर सहसा हँस पड़ी बोली—डाक्टर तुम बड़े 'डैशिंग' हो। सच, पहले जब मैंने देखा था तो सोचा था कि तुम किसी भी लड़की के लिए किसी काम के नहीं हो सकते। पर देखती हूँ मेरा वह अनुमान गलत सिद्ध हो रहा है।

डाक्टर चुप रहा। तो लिली ने फिर कहा—तुम मुझे बुरा समझ सकते हो पर मैं बड़ी स्पष्ट-वादिनी हूँ। मैंने जब से

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हें देखा सोचा, तुम्हारे निकट पहुँच सकूँ; परन्तु तुम ने सदैव ही उपेक्षा की। कहते हैं, लोग लड़कियों के सम्बन्ध में जितना ही कम जानते हैं उतना ही वे उनकी ओर आकर्षित होते हैं।

डाक्टर हँस पड़ा बोला—किन्तु मेरे सम्बन्ध में यह सिद्धान्त सही नहीं उतरता। मैं जितना ही किसी लड़की के सम्बन्ध में जानता हूँ उतना ही उसकी ओर आकर्षित होता हूँ।

लिली हँस पड़ी।

देर अधिक हो चुकी थी; प्रदर्शनी ग्राउंड में भीड़ कम हो चली थी लिली ने अपनी कलाई की घड़ी को देखा, बोली—अरे, ग्यारह बज गये! हमें अब चलना चाहिए।

वे बाहर आगए। लिली तागे में आई थी। डाक्टर ने कहा—मेरी कार है; यदि कहो तो तुम्हें पहुँचा दूँ।

लिली ने स्वीकार कर लिया। डाक्टर की बगल में वह बैठ गई।

कार धीरे-धीरे चल रही थी। डाक्टर इस समय जाने कैसा अनुभव कर रहा था। सहसा सड़क एक गड्ड़े में कार की अगली पहिया चली गई। एक धक्का लगा। लिली डाक्टर के ऊपर झुक गई तो डाक्टर ने उसे अंक में भर लिया। क्षण-भर तक लिली उसी प्रकार डाक्टर के अंक में पड़ी रही; उसके अधर हिल रहे थे; सांस उसकी ज़ोर-ज़ोर से चल रही थी, आंखों में जादू भरी मुस्कान थी।

डाक्टर यह सब देखता रहा, फिर उसने झुक कर उसके अधरों को चूम लिया।

लिली उठकर बैठ गई। मुस्कराती हुई बोली—यह अधिकार तुम्हें किसने दिया?

डाक्टर मुस्करा रहा था बोला—तुमने!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मैंने तो नहीं कहा था।' उसकी आँखों में कृत्रिम क्रोध की रेखा झलक रही थी।

डाक्टर ने उसे अपनी ओर खींच लिया कहा—तुम्हीं ने तो यह अधिकार दिया है लिली, तुम्हारे यह रूप-यौवन मुझे आमंत्रित करते रहे हैं। और आज जब उनका नशा मेरे सहन के बाहर हो गया तो तुम्हें चूम लिया। आखिर इसमें मेरा दोष क्या? लिली, मुझे इस समय ऐसा जान पड़ता है जैसे मेरा सारा ज्ञान लुप्त हो गया हो!

'तुम बड़े प्यारे हो।' उसने मुस्कराते हुए कहा और अपने सिर को डाक्टर के कंधों पर रख दिया। डाक्टर के अधर उसके कपोलों पर टिक गए तो उसने अपनी भुजायें डाक्टर के गले में डाल दीं। डाक्टर को जान पड़ रहा था जैसे वह स्वर्ग का सुख अनुभव कर रहा था। चाहता था इसी प्रकार वह निर्जन पथ पर कार चलाता रहे।

राय साहब का बँगला आ गया; डाक्टर ने मोटर रोक दी। लिली उतर पड़ी तो डाक्टर ने कहा—कल के सम्बन्ध में तुमने क्या निश्चय किया लिली?

'क्या!' लिली को जैसे कुछ स्मरण न रहा हो।

'कल संध्या को हम लोग कहीं घूमने चलें।'

'ओह, अच्छा कल देखा जायगा।'

'नहीं मुझे अभी बता दो।'

'मैं तुम्हें कल कहला दूँगी।' लिली ने कहा।

'अच्छी बात है।' डाक्टर ने उत्तर दिया।

लिली नमस्ते करके बँगले में चली गई तो डाक्टर की कार सूनी सड़क को चीरती हुई आगे बढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तुम्हें देखा सोचा, तुम्हारे निकट पहुँच सकूँ; परन्तु तुम ने सदैव ही उपेक्षा की। कहते हैं, लोग लड़कियों के सम्बन्ध में जितना ही कम जानते हैं उतना ही वे उनकी ओर आकर्षित होते हैं।

डाक्टर हँस पड़ा बोला—किन्तु मेरे सम्बन्ध में यह सिद्धान्त सही नहीं उतरता। मैं जितना ही किसी लड़की के सम्बन्ध में जानता हूँ उतना ही उसकी ओर आकर्षित होता हूँ।

लिली हँस पड़ी।

देर अधिक हो चुकी थी; प्रदर्शनी ग्राउंड में भीड़ कम हो चली थी लिली ने अपनी कलाई की घड़ी को देखा, बोली—अरे, ग्यारह बज गये! हमें अब चलना चाहिए।

वे बाहर आगए। लिली तागे में आई थी। डाक्टर ने कहा—मेरी कार है; यदि कहो तो तुम्हें पहुँचा दूँ।

लिली ने स्वीकार कर लिया। डाक्टर की बगल में वह बैठ गई।

कार धीरे-धीरे चल रही थी। डाक्टर इस समय जाने कैसा अनुभव कर रहा था। सहसा सड़क एक गड्ड़े में कार की अगली पहिया चली गई। एक धक्का लगा। लिली डाक्टर के ऊपर झुक गई तो डाक्टर ने उसे अंक में भर लिया। क्षण-भर तक लिली उसी प्रकार डाक्टर के अंक में पड़ी रही; उसके अधर हिल रहे थे; सांस उसकी जोर-जोर से चल रही थी, आंखों में जादू भरी मुस्कान थी।

डाक्टर यह सब देखता रहा, फिर उसने झुक कर उसके अधरों को चूम लिया।

लिली उठकर बैठ गई। मुस्कराती हुई बोली—यह अधिकार तुम्हें किसने दिया?

डाक्टर मुस्करा रहा था बोला—तुमने!

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'मैंने तो नहीं कहा था।' उसकी आँखों में कृत्रिम क्रोध की रेखा झलक रही थी।

डाक्टर ने उसे अपनी ओर खींच लिया कहा—तुम्हीं ने तो यह अधिकार दिया है लिली, तुम्हारे यह रूप-यौवन मुझे आमंत्रित करते रहे हैं। और आज जब उनका नशा मेरे सहन के बाहर हो गया तो तुम्हें चूम लिया। आखिर इसमें मेरा दोष क्या? लिली, मुझे इस समय ऐसा जान पड़ता है जैसे मेरा सारा ज्ञान लुप्त हो गया हो!

'तुम बड़े प्यारे हो।' उसने मुस्कराते हुए कहा और अपने सिर को डाक्टर के कंधों पर रख दिया। डाक्टर के अधर उसके कपोलों पर टिक गए तो उसने अपनी भुजायें डाक्टर के गले में डाल दीं। डाक्टर को जान पड़ रहा था जैसे वह स्वर्ग का सुख अनुभव कर रहा था। चाहता था इसी प्रकार वह निर्जन पथ पर कार चलाता रहे।

राय साहब का बँगला आ गया; डाक्टर ने मोटर रोक दी। लिली उतर पड़ी तो डाक्टर ने कहा—कल के सम्बन्ध में तुमने क्या निश्चय किया लिली?

'क्या!' लिली को जैसे कुछ स्मरण न रहा हो।

'कल संध्या को हम लोग कहीं घूमने चलें।'

'ओह, अच्छा कल देखा जायगा।'

'नहीं मुझे अभी बता दो।'

'मैं तुम्हें कल कहला दूँगी।' लिली ने कहा।

'अच्छी बात है।' डाक्टर ने उत्तर दिया।

लिली नमस्ते करके बँगले में चली गई तो डाक्टर की कार सूनी सड़क को चीरती हुई आगे बढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस दिन रात में विस्तर पर पड़ा हुआ डाक्टर लिली के सम्बन्ध में सोच रहा था। कितनी सुन्दर लड़की है; कितना प्रेम करती है! डाक्टर को जान पड़ा जैसे उसने नलिनी के लिए अपने यौवन के इन वर्षों को नष्ट कर भारी भूल की है। उसने जीवन के सुखमय क्षण खो दिए।

लिली की एक-एक बात उसे स्मरण हो रही थी। उसने निश्चय किया कि कल वह लिली से विवाह का प्रस्ताव करेगा और उसे विश्वास है कि लिली उसके प्रस्ताव को अस्वीकार न करेगी।

इन्हीं सब विचारों में उलझे हुए उसे नींद आगई। प्रातः-काल जब वह जगा तो काफ़ी धूप निकल आई थी। डाक्टर जल्दी से तैयार हुआ और तुरन्त ही दूकान की ओर चल पड़ा।

दूकान का रास्ता नलिनी के बँगले की ओर से ही जाता है। आज जब वह नलिनी के बँगले के सामने से निकला तो उसने देखा बँगला सुनसान पड़ा है। डाक्टर को आश्चर्य हुआ। उसने कार रोक दी, ध्यान पूर्वक बँगले को देखता रहा। कहीं कोई भी तो नहीं दिखाई पड़ रहा था।

डाक्टर को आश्चर्य हो रहा था। मोटर से उतर कर वह बँगले में गया। देखा तो ताला बन्द था। तो क्या नलिनी कहीं चली गई। वह थोड़ी देर तक बरामदे में खड़ा रहा फिर धीरे-धीरे अपनी कार की ओर चला।

तभी बँगले का चौकीदार आगया। डाक्टर को देख उसने सलाम किया; डाक्टर ने पूछा—कहो चौकीदार, यह लोग कहीं गए क्या?

'जी हाँ, आज प्रातः की गाड़ी से बहू जी अपने मायके चली गईं और दीदी दिल्ली।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'हुँ' डाक्टर कुछ सोचता रहा। फिर पूछा—'कब तक आयेंगी ?'

'अब तो शायद न आयेंगी। बहू जी की तबीयत कल यहाँ से सहसा उचट गई। तो उन्होंने कहा कि अब वे इस शहर को छोड़ कर चली जाँयगी। सामान अभी बंद है। पर कहा है शीघ्र ही मँगा लेंगी।'

डाक्टर कुछ देर तक सोचता रहा; फिर आकर अपनी कार स्टार्ट करते हुए मन में कहा—चलो नलिनी का यहाँ से चला जाना अच्छा ही हुआ।

और मोटर सर-सर करती सड़क पर बढ़ चली।

——

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—तेरह—

दूसरे दिन संध्या समय डाक्टर राय साहब के यहाँ पहुँचा तो ज्ञात हुआ राय साहब कहीं गए हुए हैं। उसने नौकर से पूछा—'और लिली क्या कर रही है।

डाक्टर जब कभी आते हैं, लिली को नहीं पूछते; पर आज जो सहसा आकर उसे पूछा तो नौकर को आश्चर्य हुआ—कहीं बीबी जी की तबियत खराब तो नहीं। अभी थोड़ी देर पहले ही तो उसने देखा था; बाहर बैठी अपनी सहेली मिस मित्रा से बातें कर रहीं थीं। पर सम्भव है, बड़े लोगों की बातें हैं। तनिक देर में ही तो तबीयत खराब हो जाती है और डाक्टर बुला लिया जाता है। वह वर्षों से यहाँ नौकर है; रोज़ ही तो वह लिली की इस कोमलता को देखा करता है।

क्षण भर में उसके मस्तिष्क में यह सभी बातें घूम गईं। उसने सहमें हुए से उत्तर दिया—अभी तो बाहर बैठी थीं उनकी एक सहेली थीं। फिर अपने कमरे में चली गईं हैं; देखता हूँ।

'कह देना डाक्टर आये हैं।' डाक्टर ने थोड़ा रुक कर कहा। आज उसे जाने क्यों राय साहब के नौकर से बात करने में भी संकोच हो रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौकर भीतर चला गया तो डाक्टर बरामदे में टहलता रहा। उसे एक अजीब संकोच सा महसूस हो रहा था। जब तक नौकर बाहर न आया वह जैसे निश्चय-अनिश्चय, आशा-निराशा के बीच झूल रहा था।

नौकर ने आकर कहा—जी कह दिया, आती हैं।

डाक्टर उसी प्रकार खड़ा रहा तो नौकर ने कहा—आप चल कर हाल में बैठें न। उन्होंने कहा अभी आती हैं।

'कोई हर्ज नहीं मैं यहीं खड़ा हूँ। राय साहब कहाँ गए?' डाक्टर ने उत्तर दिया।

'आज उन्हें किसी मीटिंग में जाना था; वहीं गए हैं, चार बजे से।' नौकर ने उत्तर दिया।

क्षण भर तक डाक्टर चुप रहा। बातें करने का कोई विषय उसे मिल नहीं रहा था। बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता रहा फिर बाहर ही पड़ी एक कुर्सी पर बैठ गया तो नौकर से पूछा—क्या कर रहीं थीं मिस लिली।

'पता नहीं जी अपने कमरे में थीं। मैं बाहर ही रहा तो बोलीं—बिठाओ अभी आती हूँ।'

पर इतनी देर तो हो गई। डाक्टर सोचता रहा फिर नौकर की ओर देखकर कहा—बड़ी देर हो गई।

नौकर को भी आश्चर्य था कि अभी लिली बाहर नहीं आई पर क्या करे वह।

तभी लिली बाहर निकली। देखा तो डाक्टर बरामदे में बैठा हुआ था। लिली को देख वह उठ खड़ा हुआ। इस समय वह अधिक सुन्दर लग रही थी। डाक्टर ने उसे देखते ही समझ लिया कि वह अभी तक अपना शृङ्गार कर रही थी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

इसी लिए आने में इतनी देर हुई। हलके बादामी रङ्ग की रेशमी साड़ी और पीले रङ्ग का ब्लाउज़ उसने पहन रखा था। केश किन्यास में डाक्टर ने देखा आज विशेष आकर्षण था। जैसे लिली ने सचेत हो किसी के लिए अभिसार किया हो। तो क्या यह सौभाग्य डाक्टर को ही प्राप्त होगा। अनिमेष वह लिली के रूप-सौंदर्य को देख रहा था, जैसे आखों की राह यौवन की इस सुधा को वह पी लेना चाहता हो। स्थिति का ज्ञान उसे रह न गया था।

तभी मुस्कराते हुए लिली ने कहा—अरे डाक्टर, आप यहीं बैठे हैं; अन्दर क्यों नहीं बैठे ?

डाक्टर के उत्तर की बिना प्रतीक्षा किये उसने नौकर की ओर देखा; भौहों पर बल पड़ गए तो नौकर ने समझ लिया कोई भूल हो गई। बोला—तुझसे मैंने बिठाने को कहा था तो यही जगह है किसी को बिठाने की ?

नौकर ने अपराधी की भाँति उत्तर दिया—मैंने तो आप से कहा था अन्दर बैठने के लिए पर—.

लिली ने बीच में ही बात काट ली–चुप रह। क्रोध से उसका मुख लाल हो गया था। डाक्टर जैसे सचेत हो उठा हो बोला—इस बेचारे का तो कोई अपराध नहीं है मिस लिली। इसने तो मुझ से कहा था हाल में बैठने के लिए पर मैं ही यहाँ बैठा रहा।

लिली का क्रोध कुछ शांत हुआ तो अधरों पर मुस्कान बिखेर बोली—यह है ही बड़ा बेवकूफ। बहुत आपने कह दिया तो इस का तो कर्तव्य था कि आप को भीतर ले जाकर बिठाए। पर कभी किसी भले आदमी के यहाँ जैसे इसने नौकरी ही नहीं की। हर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बात हमें कहनी पड़ती है। और मुश्किल यह कि वर्षों से यहा नौकर है पर अक़्ल कुछ न आई।

फिर मुस्कराती हुई डाक्टर से बोली—अच्छा अब तो आप आवें।

कह उसने हाल के पर्दे को हाथ लगाया ही था कि डाक्टर ने कहा—पर अब हम—

'हाँ-हाँ' मुझे स्मरण है पर क्या दो क्षण आप मेरे घर पर बैठ नहीं सकते।' कह वह बड़ी ज़ोर से हँस पड़ी तो डाक्टर अप्रतिभ हो उठा।

कुछ न कह वह लिली के पीछे-पीछे हाल में जा एक कोच पर बैठ गया। लिली निकट ही बैठ गई, बोली—एक बात तो आप से यह कहनी है कि मैं अब आप के साथ नहीं जा सकती।

डाक्टर जैसे आसमान से गिर गया हो। आशा के कितने ही महल बनाये थे। उसे इस समय ऐसा जान पड़ रहा था जैसे वह महल उसकी आँखों के सम्मुख ही ढह रहे हों। लिली की ओर वह आश्चर्य से देखता रहा; आँखें उसकी फैल-फैल सी रहीं थीं। लिली उसी प्रकार मधुर-मधुर मुस्कराती रही, जैसे उसे डाक्टर की इस व्यथा से सुख मिल रहा हो।

कौन सा अपराध हो गया है उससे, यह डाक्टर स्वयं नहीं समझ पा रहा है। अपने को संभाल उसने अबोध बालक की भाँति पूछा—पर क्यों ?

लिली को डाक्टर की इस विवशता पर हँसी आ गई; बोली—तुमसे मुझे बड़ी शिकायत है।

'शिकायत !' डाक्टर को आश्चर्य हो रहा था। लिली को वह शिकायत का अवसर कदापि नहीं दे सकता पर—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूछा उसने—क्या ? यदि भूल में मुझसे कोई अपराध हो भी गया हो उसे तुम क्षमा तो करोगी ही।

डाक्टर की वाणी लड़खड़ा रही थी।

लिली ने मुस्कराते हुए कहा—क्या अब भी तुम्हें मिस लिली कहने की आवश्यकता है ? क्या तुम मुझे लिली नहीं कह सकते ?

डाक्टर क्षण भर उसकी ओर देखता रहा फिर सहसा उसे स्मरण हो आया अभी बाहर जब वह बरामदे में था तो उसे मिस लिली कह कर सम्बोधन किया था।

मुस्कराकर उसने लिली की ओर देखा; उसकी आँखों का मद छलक कर जैसे गिर जाना चाहता हो—डाक्टर के अधरों पर।

लिली ज़ोर से हँस पड़ी तो डाक्टर ने कहा—और तुम इसीलिए मुझे इतनी बड़ी सजा दे रही हो कि हमारे सारे प्रोग्राम नष्ट कर रही हो।

लिली कुछ न बोली, उठकर डाक्टर के निकट आ खड़ी हो गई।

डाक्टर आँखें ऊपर किए उसकी ओर देखता रहा—क्षण भर तक उसको जैसे सब भूल गया हो, फिर बोला—वह तो मैंने नौकर के सामने होने के कारण कहा था।

डाक्टर को लिली के शरीर की सुगंध बदहोश सा बना रही थी। उसने लिली के हाथों को अपने हाथों में लिया तो लिली अपना हाथ खींचकर हट गई बोली—चलिए अब मैं आपका यह सब नहीं पसंद करती। आप तो बाहर बैठे रहे जैसे यहाँ इनको आने का अधिकार ही नहीं; फिर—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाक्टर मुस्कराता रहा, बोला—पर मेरी लिली तो मुझे क्षमा करेगी। अब जो आऊँगा तो बिना किसी से पूछे तुम्हारे कमरे में चला जाया करूँगा।

लिली एक कुर्सी पर बैठ गई; बोली—अभी ही मैं नहा-धोकर तैयार हुई हूँ। मेरी एक मित्र हैं मिस मित्रा; वे आ गई थीं। घंटों दिमाग़ चाट गईं। सहसा मुझे तुम्हारा ध्यान आया तो मैंने उन्हें किसी प्रकार तबीयत ख़राब होने का बहाना कर टाला।

'ओह' लिली तुम्हें मेरा कितना ध्यान रहता है ?' प्रेम के आवेश में डाक्टर के नयन अर्धोन्मीलित हो उठे।

'तो, हम लोग चाय पी लें तो चलें।' लिली ने प्रस्ताव किया।

'हाँ, हाँ: यद्यपि मैं चाय घर से पीकर चला हूँ, पर तुम्हारे साथ चाय पीने का अवसर मैं कदापि नहीं छोड़ना चाहता।' डाक्टर ने मुस्करा कर उत्तर दिया। लिली ने कुछ उत्तर न दिया। वह उसी प्रकार चुप रही; फिर नौकर को बुला कर चाय लाने को कहा।

नौकर भीतर चला गया तो लिली ने डाक्टर की ओर देखते हुए प्रश्न किया—तो डाक्टर हम कहाँ चलेंगे?

'जहाँ तुम्हारी आज्ञा हो।'

'ओह, तो आपको मेरी आज्ञा की आवश्यकता है।'

'और क्या ?'

'तो मेरी आज्ञा है कि हम कहीं न जायँ।'

डाक्टर चुप रहा। कुछ उत्तर उसने नहीं दिया। यह लिली अजीब लड़की है! पर इसकी बातों में एक आकर्षण सा, एक मधु सा डाक्टर को मिल रहा था।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उसके अधरों पर मुस्कान खेल गई तो लिली ने फिर कहा - सच बताओ—क्या सोचा है तुमने !

'मैंने वैसा तो कुछ सोचा नहीं। इधर काम के मारे अवसर नहीं मिलता था और अपने जीवन में जब कोई आकर्षण नहीं होता तो आदमी केवल काम करना चाहता है। मैं तो इस शहर में एक प्रकार अपरिचित ही हूँ। जब कभी जी बहुत ऊबा तो शहर के बाहर चला जाता हूँ और घूमकर फिर वापस आ जाता हूँ।'

'मेरे विचार से इस प्रकार बिना किसी अभिप्राय के घूमना तो व्यर्थ होगा।'

'फिर जो तुम कहो।'

'तुम्हें क्या बाहर घूमना ही पसन्द है ?'

'तुम्हारे साथ मुझे सब पसन्द है।' डाक्टर ने उत्तर दिया।

'तो मैं समझती हूँ हम घूमने न चलकर सिनेमा चलें।'

डाक्टर क्षण भर सोचता रहा। शहर से बाहर घूमने का प्रस्ताव उसने इसी लिए किया था कि वह नहीं चाहता कि कोई उसके साथ लिली को देखकर किसी प्रकार का संदेह करे। और फिर वह ठहरा डाक्टर ! शहर के प्राय: सभी लोग उसे पहचानते हैं।

डाक्टर को सोचते देख लिली ने कहा—डाक्टर, किस सोच में पड़ गए ?

डाक्टर जैसे जग पड़ा हो; बोला—'कुछ नहीं, पर सोच रहा था; मेरे साथ देख कर लोग तुम्हें बदनाम न करें। सिनेमा में बहुत से लोग.....।'

लिली हँस पड़ी। बोली—डाक्टर, तुम हो बड़े कायर ! इसमें डरने की क्या बात !

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'डरता नहीं लिली पर तुम्हारी बदनामी का मुझे ध्यान है।'

'और अपनी !' कह लिली हँस पड़ी।

'मेरी तो कुछ नहीं; इस प्रकार की बदनामी से मेरे जीवन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।' डाक्टर ने निश्चिन्तता से उत्तर दिया।

लिली क्षण भर सोचती रही फिर बोली—इसमें तो मैं कोई ऐसी बात नहीं देखती।

डाक्टर ने जैसे इतनी देर में निश्चय कर लिया हो, कहा—अच्छी बात है।

तभी नौकर चाय लेकर आ गया। उसने 'ट्रे' सामने रख दी। तो लिली चाय बनाने लगी। डाक्टर ने कहा—आज की चाय अधिक मधुर होगी ?

तभी चीनी चम्मच में ले लिली ने कहा—चीनी आप कितनी लेते हैं।

'जितनी भी दे दो ! मैं कोई विशेष रुचि नहीं रखता।'

'किन्तु अधिक मधुर चाय की आशा जो आप करते हैं।'

'वह बनाने वाले के मधु के कारण।'

लिली हँस पड़ी। क्षण भर वह सोचती रही डाक्टर ने इतना शीघ्र ही अपना हृदय उसके सम्मुख क्यों उड़ेल दिया।

चाय पीते-पीते डाक्टर ने कहा—सच कहता हूँ लिली, जीवन में चाय इतनी अच्छी मुझे कभी नहीं प्राप्त हुई।

'नौकरों के हाथ की चाय आप पीते हैं इसलिए शायद ऐसा अनुभव कर रहे हैं। पर यह चाय मेरी चाची ने बनाई है। मेरे लिए चाय वे ही बनाती हैं।'

लिली की एक रिश्ते की एक विधवा चाची है। जिन्हें बहुत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दिनों से राय साहब ने अपने यहाँ रख लिया है। लिली को बचपन में उन्होंने ही पाला है; सो माँ का सा स्नेह करती हैं; उसके लिये चाय सदैव वही बनाती हैं; खाना उसे अपने सामने बिठाल कर खिलाती हैं।

डाक्टर ने कोई उत्तर न दिया। वह जानता है कि यह लिली सब समझ कर भी इस प्रकार उत्तर देती है। फिल्म शुरू होने में अभी बहुत देर थी; इसलिए चाय पीने का समय भी जैसे बढ़ गया हो।

चाय समाप्त हो गई, तो लिली ने कहा—अभी तो फिल्म प्रारम्भ होने में काफ़ी देर है। न हो चलो, तब तक पार्क में बैठें।

डाक्टर उठ खड़ा हुआ। बँगले के पीछे पार्क में कुछ कुर्सियाँ पड़ी रहती हैं। वहीं जा लिली बैठ गई। डाक्टर भी बैठ गया तो लिली ने उसकी ओर देखते हुए पूछा—डाक्टर, आज तुमने बड़ी देर से सिगरेट नहीं पी।

'सोचा' शायद इससे तुम्हें कोई कष्ट हो!'

'मुझे भला क्या कष्ट होगा। मुझे तो किसी को सिगरेट पीते देख अच्छा लगता है।'

मुस्करा कर डाक्टर ने जेब से सिगरेट केस और दियासलाई निकाली। एक सिगरेट निकाल कर होठों से दबा लिया। तभी लिली निकट आ गई; डाक्टर के हाथ से दियासलाई ले ली। डाक्टर उसकी ओर देखता रहा तो लिली ने मुग्धा की भाँति कहा—तुम्हारा सिगरेट मैं जला दूँ।

'हाँ हाँ।' डाक्टर ने प्रसन्नता से कहा।

एक सलाई बाहर निकाल उसने खींच दिया, एक

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लौ उठ सलाई को जलाने लगी तो उसने उसे डाक्टर के अधरों से दबे सिगरेट से लगा दिया।

सिगरेट पीते-पीते डाक्टर ने कहा—लिली हम जीवन के कुछ ही क्षणों में एक दूसरे के कितने निकट आ गए हैं क्या इस पर तुमने कभी विचार किया है ?

'आवश्यकता क्या डाक्टर !' मुस्कराते हुए लिली ने उत्तर दिया।

'आवश्यकता इस लिए है कि क्या इससे यह नहीं प्रगट होता कि इस स्नेह-बन्धन को अधिक दृढ़तर होना है।' डाक्टर ने आशा-पूर्ण दृष्टि से लिली की ओर देखा।

क्षण भर वह चुप रही, फिर बोली—डाक्टर पर मैं इस परिचय को इतने अल्पकाल का नहीं समझती। तुम चाहे समझो पर मैंने तो जब पहली बार ही तुम्हें देखा थी तभी—

लिली का मुँह इस बार लज्जा से लाल हो उठा, डाक्टर ने देखा। उसके लज्जा विमिश्रित चेहरे से एक विशेष प्रकार का सौंदर्य प्रगट हो रहा है। बोला—लिली, यह मेरी ही भूल है कि मैं तुम्हारे इस भाव को अब तक समझ न सका था।

'तुम तो कभी न समझ सकते शायद; यदि डाक्टर इस मर्ज़ के भी 'सिम्टम' समझने लगें तब फिर क्या ?'

डाक्टर हँस पड़ा। तभी लिली फिर गम्भीर हो गई; बोली—डाक्टर तुमने अभी तक विवाह क्यों नहीं किया ?

डाक्टर क्षण भर चुप रहा; फिर बोला—लिली, यौवन के प्रारम्भ में जब मैं बी० एस-सी० का एक साधारण विद्यार्थी था तभी मैंने एक लड़की को प्रेम किया था। परन्तु अपने संकोची स्वाभाव के कारण मैं उससे कभी बात भी न कर सका।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

उस घटना के पश्चात् मैंने निश्चय किया था कि तीस वर्ष की अवस्था के बाद विवाह करूँगा।'

'तो अभी तुम कितने दिन विवाह न करोगे।' लिली ने पूँछा। उसकी आँखें डाक्टर पर लगी थीं।

डाक्टर उसी प्रकार बैठा रहा, बोला—परन्तु अब मैं अनुभव कर रहा हूँ कि बिना तुम्हारे मैं एक क्षण भी नहीं रह सकता। लिली सच जानो अपने जीवन का एक भी क्षण मैं अब तुम्हारे से अलग काटने को तैयार नहीं।

लिली चुप रही। उठ कर वह टहलने लगी। गुलाब की झाड़ी में रंग-बिरंगे फूल खिले थे। लिली उन फूलों को अपनी अंगुलियों से स्पर्श करने लगी तो डाक्टर भी उठ कर उसके निकट चला आया। क्षण भर लिली के निकट वह खड़ा फूलों को देखता रहा। तभी लिली ने कहा - कितने प्रकार के फूल उगे हैं ?

'बहुत !' डाक्टर ने उत्तर दिया। इस समय वह फूलों के बीच खिली लिली के सौंदर्य को देखने में लगा था।

लिली उसी प्रकार गम्भीर रही, बोली—पर इनका यह सौंदर्य जो क्षण भर के लिए है उसको भी प्राप्त करने के लिए इन अँगुलियों को इन काँटों से बिंध लाल लालसा कुछ बहा देना पड़ता है।

डाक्टर कुछ सोच रहा था कि सहसा लिली थी। बात सुन चौक पड़ा।

मन में सोचता रहा आखिर लिली के लिए वह क्या नहीं कर सकता। उसने एक निश्वास खींची, तो लिली ने सिर उठा कर डाक्टर की ओर देखा; डाक्टर उदास सा दीख पड़ा, लिली ने कहा—डाक्टर तुम किस सोच में पड़ गए ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

16 pages missing (229) 23.5.56.

लिली ने मिस मित्रा को देखा तो प्रसन्नता से उसका मुख खिल उठा; उठकर उसने उसे गले से लगा लिया बहुत दिनों के पश्चात् मिलने का स्नेह उसके अंतर से उभर कर आ रहा था। बोली—'तुम तो मित्रा जैसे भूल ही गईं आज कितने दिन हुए मुझे आये और तुम्हें एक क्षण के लिए भी आने को जैसे समय नहीं।'

'कितने दिन हुए तुम्हें आये जरा बताना तो।'

'एक सप्ताह ! होगा एक सप्ताह ! पर मुझे तो अभी परसों दिल दिल ने बतलाया तब मुझे मालूम हुआ कि तुम आ गई।' और फिर रुक कर कहा 'और' यदि तुम इतनी जल्दी आ गई थीं तो फिर तुम स्वयं ही क्यों नहीं आई मेरे यहाँ।'

'मैं आती तुम्हारे यहाँ ! कह रही हो। अरे, अब मैं विवाहिता हूँ मुझे समय नहीं मिलता।'

हँस कर फिर मित्रा एक कुर्सी पर बैठ गईं। सामने मेज़ पर फूलों का गुलदस्ता रक्खा हुआ था मिस मित्रा ने देखा—उसमें लिली की रुचि के फूल सजाये गए हैं।

मुस्करा कर कहा—तो यह सब अब तुम्हारे सक्ति से हो रहा है।

मेरी सक्ति नहीं तो फिर क्या ! पहले का रूप देखतीं तो कहतीं तुम कि यह डाक्टर आखिर इस घर में रहता कैसे है।' कह लिली हँस पड़ी।

'अच्छा।'

'जी, बड़ा अस्त व्यस्त जीवन था उनका जैसे किसी वस्तु की ओर से उन्हें कोई आकर्षण ही नहीं था।

'और अब।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'अब, अबतो उन्हें मुझसे भी अधिक इन सब बातों का ध्यान रहने लगा है।'

मिस मित्रा हँसने लगी, बोलीं—क्यों न हो हमारी लिली का प्रभाव तो आख़िर पड़ना ही चाहिए।

'जी, वह तो मेरी इच्छा के अनुसार ही सारा काम करते हैं।'

लिली तुम ने पति अपने मन का तो पा लिया!'

'मन का क्या? मित्रा मैंने तो उनका सा कोई व्यक्ति ही नहीं देखा। मेरी इच्छाओं का वे इतना ध्यान रखते हैं कि कुछ न पूछो। जो कुछ भी मैं कहती हूँ सभी कुछ करने के लिए तैयार रहते हैं।'

मित्रा क्षण भर सोचती रही फिर बोली—इस समय डाक्टर हैं नहीं क्या?

'नहीं, डिस्पेन्सरी गए।

मिस मित्रा ने कहा—डाक्टर का समय बड़ा ही विचित्र होता है। सुबह शाम उन्हें अपने मरीजों से अवकास नहीं। घर की देख भाल भला वे क्या कर सकते हैं।

'घर की देख भाल करने की उन्हें आवश्यकता ही नहीं है। पर हाँ, कभी-कभी मैं एकाकी अवश्य ही महसूस करती हूँ। अभी उस दिन उनसे कहा तो कहने लगे कि कहो तो शाम को डिस्पेन्सरी जाना बंद कर दूँ।'

मित्रा हँस पड़ी। बोली—तो तुम्हारे लिए वे इतना तक करने को तैयार हैं।

लिली हँसती रही। नौकरानी को बुलाकर लिली ने कहा—चाय बनाओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौकरानी लिली ने नई रखी है अभी उसे क्या करना चाहिए इसका अभ्यास नहीं है। इसलिए लिली स्वयं उठकर अन्दर गई; उसने नौकरानी को समझाया; और फिर बाहर आकर मिस मित्रा के पास बैठ गई बातें होती रहीं।

चाय आगई तो मिस मित्रा ने मेज अपनी ओर खिसका ली बोली—यह तुम्हारी हनीमून के उपलक्ष में चाय मिल रही है।

लिली हँस पड़ी, बोली—यह नहीं; मैंने तो कई दिन सोचा कि एक दिन सबको पार्टी दूँ पर अभी कुछ ठीक नहीं कर सकी। घर का सारा प्रबंध ही नए सिरे से करना पड़ रहा है, इसलिये अभी नहीं कर सकी।

मित्रा हँसती रही, बोली—अच्छी बात है तो अभी एक दिन और आशा है!

लिली कुछ न बोली; चाय का प्याला लेकर वह पीने लगी; तभी बँगले में मोटर की आवाज सुनाई दी! लिली चौंक पड़ी। कौन आया है मोटर पर! चाय का प्याला उसने ट्रे में रख दिया और उठ कर बाहर आई; देखा तो डाक्टर मोटर से उतर रहा था। उसका चेहरा उतरा हुआ था।

लिली निकट आ गई। हाथ से हैट लेते हुए उसने डाक्टर से कहा—क्यों क्या बात है। आज जल्दी ही चले आये।

'हाँ' डाक्टर ने संक्षिप्त में उत्तर दिया।

लिली उसकी ओर देखने लगी तो लगा डाक्टर आज बहुत उदास है। इसलिए पूछा आज तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है। तबीयत खराब है क्या?

डाक्टर ने कुछ धीरे से कहते हुए कमरे में प्रवेश किया। लिली उसकी बात सुन नहीं सकी। हैट एक ओर रखते हुए वह डाक्टर की ओर बढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाक्टर ने मिस मित्रा को देखा तो दोनों हाथ नमस्कार करने के लिए ऊपर उठा दिए पर मुँह से बोला वह कुछ नहीं।

मिस मित्रा डाक्टर को देखते ही उठकर खड़ी हो गई तो डाक्टर ने कहा आप बैठें !

और वह स्वयं भी एक कुर्सी खिसका बैठ गया। लिली भी उसके निकट बैठ गई तो डाक्टर ने कहा लिली चाय बनाओ।

लिली चाय बनाने लगी ता उसे ध्यान आया उसने डाक्टर का मिस मित्रा से परिचय नहीं कराया। सो बोली अरे मैंने तुम्हारा मित्रा से परिचय नहीं कराया। भूल हो गई। यह है मिस सरोजिनी मित्रा। मेरी सहपाठिनी रही हैं। बहुत दिनों तक !

डाक्टर के अधरों पर मुस्कान खेल गई, विवाह से जैसे उसके अधर धुल से गये हों। डाक्टर ने मिस मित्रा की ओर देखते हुए कहा—आप से मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई। विवाह में तो आपको देखा था।

'जी पर उस समय हम सब इतनी थीं कि आपसे किसी का परिचय प्राप्त करने का समय कहाँ था।

'हाँ, यही तो बात है।'

डाक्टर चुप हो गया। लिली ने चाय का प्याला उसकी ओर बढ़ा दिया तो पीने लगा।

मिस मित्रा बहुत देर तक बैठीं रहीं जब वे चली गईं तो डाक्टर कपड़े उतार कर अपने कमरे में चला गया। लिली भी उसके साथ कमरे में पहुँची। डाक्टर चारपाई पर लेट गया तो लिली को आश्चर्य हुआ। निकट आ पूछा—तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है क्या ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तबीयत तो ठीक है लिली पर—'

'पर क्या ?' लिली चिन्तित हो उठी।

'लिली, मैंने तुमसे बहुत कुछ छिपाया है पर आज देखता हूँ कि तुमसे सब कह दूँ। आज मेरे अंतर में एक कथा भर उठी है। सोचता हूँ जब तक सब तुमसे कह न दूँगा तब तक मुझे संतोष न होगा।

लिली डाक्टर के सिरहाने बैठ उसके माथे पर हाथ फेरने लगी। उसे आज डाक्टर की बातों पर आश्चर्य हो रहा था। डाक्टर को वह बहुत अधिक प्रेम करती है। उससे भी डाक्टर ने कुछ छिपा कर रख छोड़ा है यह सुन जैसे चोट सी लगी। उसने कहा—मुझसे तुम्हें कुछ छिपा कर इस प्रकार व्यथित होने की आख़िर आवश्यकता ही क्या है। मैं जो तुम्हें प्रेम करती हूँ तो क्या तुम्हारी कोई भी बात मुझे कभी कष्ट दे सकती है।

डाक्टर को जैसे पीड़ा हो रही थी। वह कराह उठा। उसने कमीज की जेब से एक लिफाफ़ा निकाल कर लिली की ओर बढ़ा दिया।

लिली ने उसे ले लिया; खोल कर पढ़ा। लिखा था—मेरे प्रिय डाक्टर !

इस समय मैं मृत्यु शैया पर हूँ। पता नहीं किस क्षण मेरी मृत्यु हो जाय। उस दिन तुमने मेरे बुलाने पर आने से इन्कार कर दिया था। उसे मैं बुरा भी नहीं मानती। इतना थोड़ा समय ही यदि मुझे जीवित रहना था तो क्या मैं तुम्हारी बात मानकर एक भारी भूल न करती।

पर, अब तो वह बात ही जाती रही। अंतिम बार तुम्हें तुम्हारी पत्नी के साथ देखना चाहती हूँ। सच जानो, इससे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे एक आन्तरिक शान्ति प्राप्त होगी। यदि हो सके तो अंतिम बार दर्शन दे दो। तुम्हारी नलिनी फिर कभी तुमसे अब प्रार्थना नहीं करेगी।

तुम्हारी ही—
नलिनी

पत्र पढ़ते समय लिली के चेहरे पर रेखायें खिंच रही थीं और वह सोच रही थी डाक्टर को पत्र लिखने वाली यह नलिनी कौन है। उसे स्मरण है डाक्टर ने उससे एक बार कहा था कि उसने बहुत प्रारम्भ में एक लड़की को प्रेम किया था परन्तु उससे कभी ऐसी बात कहने का अवसर ही नहीं आया।

पति की ओर वह देखने लगी फिर जैसे अपने को संभाल कर उसने कहा—'तो इसमें क्या है। यदि उनकी यही इच्छा है तो हम वहाँ चल सकते हैं'।

डाक्टर ने लिली की ओर आश्चर्य से देखा यह लिली इतनी उदार है। क्षण भर चुप रह उसने कहा—'लिली, यह नलिनी मेरे जीवन में आशा बन कर आई; विषाद बन कर चली और तूफ़ान की भाँति मुझे छिन्न-भिन्न करके चली गई। जब मैं तुमसे पहली बार मिला था तब नलिनी ने मुझे निराश कर दिया था और उसी आवेश में मैंने यह समझा था कि नलिनी के लिए मेरे हृदय में कुछ भी अब शेष नहीं है। अपनी इस भूल को सत्य समझ कर ही मैंने तुम्हें प्यार किया तुम्हें अपनी पत्नी बनाया और यदि नलिनी का पत्र आज न आता तो शायद मैं अब तक प्रेम में ही पड़ा रहता। पर आज मुझे यह अनुभव हो रहा है कि मेरे हृदय में नलिनी के लिए अब भी स्थान है लिली!' और डाक्टर की आँखों से आँसू बह चले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिली को डाक्टर की कातर मुद्रा देख बड़ी व्यथा हुई। डाक्टर उसे जितना प्यार करता है उसी से वह संतुष्ट है। वह उसके अतीत से अपरिचित ही रहना चाहती है। इसीलिए तो उसने कभी यह प्रयत्न नहीं किया, उसके अतीत की कोई बात उसने कभी नहीं पूछीं। पर आज जब डाक्टर ने यह पत्र दिया तो उसे प्रतीत हो रहा है कि डाक्टर के अतीत के वे पृष्ठ उसके सम्मुख खुलेंगे ही।

डाक्टर का हाथ अपने हाथ में ले वह बोली—'तुम व्यर्थ ही इतनी चिन्ता करते हो। अरे इसमें कौन सी बड़ी बात है। मुझे तुम जितना प्यार करते हो वही क्या कम है?'

'पर लिली, मुझे यह दुःख जैसे छोड़ जो नहीं रहा है।'

'अजी हटाओ भी यह बात! उठो! हम चलने के सम्बन्ध में निश्चय करेंगे।'

उसने डाक्टर को उठा कर बिठा दिया तो डाक्टर को आश्चर्य हो रहा था। यह लिली भी विचित्र है। ईर्ष्या तो जैसे उसे छू नहीं गई। इतनी उदार! उसे लगा जैसे उसने एक देवी ही पत्नी के रूप में पा ली है।

डाक्टर कहने लगा—'लिली, आज तुम्हें सब बताऊँगा तभी मुझे शायद शांति प्राप्त होगी।'

'यदि तुम्हें उसी से शांति मिले तो मैं सुनने को तैयार हूँ पर तुम बचन दो कि तुम दुःखी नहीं होगे।'

'दुःखी नहीं हूँगा तुम्हारी इस उदारता के पश्चात भी यदि मैं दुःखी होऊँ तो यह होगी लिली! इस नलिनी को मैंने अपने यौवन के पहले वर्षों में ही प्यार किया था पर उस समय तक मुझे स्वयं अपने इस प्रेम का पता नहीं था। किन्तु जब नलिनी का विवाह निश्चित हो गया तब वह मेरे पास आई। बोली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे वह प्रेम करती है और वह विवाह नहीं करेगी। मैं नलिनी को पढ़ाता था। उस समय मुझे ज्ञात हुआ कि मैं उसे प्रेम करने लगा हूँ पर उस समय मुझ में कर्तव्य का ज्ञान जागृत हो उठा और मैंने उसे समझाया कि इस प्रकार विवाह से इनकार करना उसका कर्तव्य नहीं है। उसे चाहिए कि वह इस सम्बन्ध में अपने माता पिता की आज्ञा का उल्लंघन करके उसकी भी बदनामी न करावे।'

नलिली ने कोई उत्तर न दिया। वह चली गई। उसके विवाह में भी वह नहीं गया। यही नहीं, उसके बाद फिर कभी उससे मिलने का अवसर उसे प्राप्त नहीं हुआ और उसके बाद ही उसे डाक्टरी पढ़ने का अवसर मिल गया और वह वहाँ से सदा के लिए चला आया। वर्ष बीतते गए और फिर आकर उसने यहां पर अपनी प्रेक्टिस प्रारम्भ की। नलिनी के पति की भी बदली हो गई और उसे इसका पता तब लगा जब नलिनी बीमार पड़ी और उसने उसे ही बुलाया।

नलिनी को देख उसके जीवन में एक बार एक तूफान आ उठ खड़ा हुआ परन्तु उसे अपने कर्तव्य का ज्ञान सदैव रोकता रहा। किसी भी विवाहित स्त्री के प्रति किसी प्रकार के भाव लाना उसने उचित न समझा।

लिली ने बीच में ही प्रश्न किया—'तो नलिनी यहाँ थी ?'

'हाँ, उसके कुछ दिन पहले राजदेव इंजीनियर की मृत्यु का समाचर तुमने पढ़ा होगा। वह उन्हीं की पत्नी थी। नलिनी की बीमारी बढ़ती गई तो उसका उसके यहाँ जाना भी बढ़ता गया। धीरे-धीरे राजदेव को नलिनी और उसके अतीत के सम्बन्ध का कुछ पता लग गया और उसे उस पर सन्देह होने लगा। यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं नलिनी के यहाँ एक डाक्टर के रूप में ही जाता था किन्तु—

'ओह !' लिली के मुख से निकल गया।

डाक्टर क्षण भर रुक कर उसकी ओर देखता रहा फिर बोला—'राजदेव जब उस दिन रात को दुर्घटना का शिकार हो गया तो नलिनी ने उसे ही बुलाया। राजदेव को शराब पीने का वेश्याओं के यहाँ जाने की बुरी लत थी उसी के कारण उसकी मृत्यु हो गई। उसे बचाने के लिए उसने सारे प्रयत्न किये परन्तु बचा न सका और नलिनी के मस्तक का सिन्दूर धुल गया, अदृश्य ने उसे धो दिया।'

क्षण भर रुक कर उसने फिर कहना शुरू किया—'उसके बाद नलिनी बीमार पड़ी। उसकी चिकित्सा करता रहा। इस प्रकार उसके अधिक निकट आने का मुझे अवसर मिला तो जिस भावना को अब तक मैं दबाये हुए था वह फिर उभर आई। विधवा नलिनी के जीवन के प्रति मुझे एक सहानुभूति सी अनुभव होने लगी और मैंने उससे विवाह करने का निश्चय किया। यद्यपि वह मेरी सजातीय नहीं थी फिर भी मुझे आशा-थी कि मेरे प्रस्ताव को वह अस्वीकार नहीं करेगी। किन्तु मेरी आशा मिथ्या प्रमाणित हुई। उसने विवाह करने से इन्कार कर दिया कहा—स्त्री के संस्कार हैं। वह अपने स्वर्गीय पति के प्रति विश्वासघात नहीं कर सकती।'

बस उसी क्षण से उसके प्रति मेरे हृदय के भाव सहसा बदल गए और उन्हीं दिनों तुमसे परिचय हो गया। एक स्थान जो रिक्त हो गया था उसकी पूर्ति तो होनी ही थी सो मैं तुम्हारी ओर आकर्षित हो गया। नलिनी ने एक दिन मुझे बुलाया भी पर मैं नहीं गया। और उसके बाद सुना कि वह लखनऊ चली गई। नौकरी से विश्राम पा उसके पिता आज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कल वहीं रहते हैं फिर मैंने उसकी कोई खोज खबर नहीं ली पर आज जब यह पत्र आया तो मैंने अनुभव किया—

लिली ने बीच में ही बात काटी,—'जो तुम्हें इतना प्रेम करती थी उसे भी तुम नहीं समझ सके। स्त्री प्रेम कर सकती है पर शरीर एक बार किसी को दे चुकने पर वह सदा उसी की होकर रहना चाहती है।'

'हाँ, यह मैं अब समझ सका। विधवा-विवाह मैं बुरा नहीं समझता पर आज अनुभव करता हूँ कि स्त्री विधवा होकर भी समाज में क्यों घुलती रहती है।'

लिली क्षण भर चुप रही फिर बोली—'तो तुम्हें उनकी अन्तिम इच्छा की अवहेलना नहीं करनी चाहिए।'

डाक्टर ने एक निश्वास लेकर कहा—'अवहेलना करने की सामर्थ्य आज मैं अपने में पा जो नहीं रहा हूँ।'

'तो हम कल लखनऊ चलें।' लिली ने कहा।

'हाँ।'

डाक्टर के हृदय का भार उतर गया पर लिली सोचती रही—'नारी त्याग की देवी है अपने पति के लिए वह सब कुछ उत्सर्ग कर सकती है। डाक्टर के लिए वह सब कुछ ही तो देख रही है। नलिनी को उन्होंने प्रेम किया। उन पर पहले नलिनी का अधिकार है। उसके रिक्त स्थान की पूर्ति ही लिली के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।'

पति की बातों से उसे कुछ ईर्ष्या नहीं हो रही थी। पर एक बार उसने सोचा अवश्य कि किसी का इतना प्रेम पाना भी कितने सौभाग्य की बात है। यह डाक्टर आज तक उसे भूल न सका।

लिली उठ कर भीतर चली गई तो डाक्टर पड़ा सोचता रहा।

—:❀❀❀:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—सोलह—

डाक्टर दूसरे दिन लिली के साथ लखनऊ पहुँचा। मन उसका उदास ही था। लिली बराबर उसे प्रसन्न रखने का प्रयत्न कर रही थी पर डाक्टर के मन में जो व्यथा थी। उसे वह निकाल नहीं पा रहा था। ज्यों-ज्यों ट्रेन लखनऊ स्टेशन के निकट आती-जाती थी उसका हृदय जैसे बैठा जा रहा हो। उसे मरणासन्न नलिनी की मूर्ति आँखों के सामने नाचती सी दिखाई पड़ रही थी। डाक्टर सोच रहा था कि नलिनी की मृत्यु का उत्तरदायित्व जैसे उसी पर था। नलिनी को समझने में उसने कितनी भूल की। उसके प्रेम के ही लिए जैसे नलिनी अब जी रही थी और अब-जब वह निराश हो गई तो मृत्यु ने उसे आ घेरा। उससे निराश हो कर नलिनी लखनऊ चली गई थी। परन्तु उसने कभी न सोचा था कि नलिनी इस प्रकार अपनी मृत्यु बुला लेगी। नलिनी के कहने से ही तो उससे दूर हो गया था। यदि नलिनी चाहती तो उस समय उससे सब कुछ करने के लिए कह सकती। काश, अपने हृदय की बात उस समय स्पष्ट रूप से उससे कह देती। परन्तु वह तो भूल बनी रही और डाक्टर उसको समझ न सका। एक भूल जो हो गई उसका परिमार्जन अब हो नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकता था। फिर भी अभी वह एक आशा अपने हृदय में लिए हुए था। नलिनी को बचाने का वह प्रयत्न करेगा। यदि नलिनी बच गई तो—

तो वह क्या करेगा। लिली की ओर देख उसका हृदय करुणा से भर गया। लिली उसकी बगल में बैठी खिड़की से बाहर पेड़ों का भागना देख रही थी। बाहर से आती हुई हवा के झोके से उसकी केशराशि बिखर उठी थी एक लट उसके कपोलों के साथ अठखेलियाँ कर रही थीं। डाक्टर उसे देखता रहा। एक बार उसने नलिनी को एक जटिल पहेली समझा था और आज यह लिली भी उसके लिए एक जटिल पहेली बन रही थी।

लिली ने मुँह फेर कर डाक्टर की ओर देखा तो वह उसकी ओर देख रहा था। लिली ने अधरों पर मुस्कान लाते हुए कहा—'बहुत दिनों बाद आज गाँवों का यह दृश्य देखने को मिला रहा है। सो देख रही थी।'

'हाँ,' डाक्टर ने कहा।

लिली चुप रही फिर बोली—'आप व्यर्थ ही इतने चिन्तित हो रहे हैं। एक डाक्टर को अन्त समय तक आशा नहीं त्यागनी चाहिए।'

डाक्टर ने कहा—'लिली, आशा मैं नहीं छोड़ रहा हूँ। पर आज न जाने क्यों मुझे विश्वास सा हो रहा है कि नलिनी अब नहीं बच सकेगी।'

लिली चुप रही। क्या उत्तर दे वह!

डाक्टर ने फिर कहा—'इस नलिनी की मृत्यु का उत्तरदायित्व जैसे मेरे ऊपर हो।'

लिली चौंक पड़ी, फिर बोली—'तुम्हारे ऊपर क्यों? तुम तो आखिर उससे विवाह करने को तैयार थे।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तैयार था ! पर शायद उसे आशा थी कि मैं—'

'कि तुम आजन्म के लिए अविवाहित रहोगे। यही न ! मैं कहती हूँ तुमने नलिनी को अभी तक नहीं समझा। जो स्त्री अपने जन्म गति संस्कार के लिए इतना सब त्याग कर सकती है क्या वह अपने प्रेमी को जीवन भर एक व्यथा में घुलते देख सकती है। वह चाहेगी कि उसका प्रेमी सुखी रहे।'

लिली ने कहा पर डाक्टर चुप रहा। थोड़ी देर बाद लिली ने फिर कहा—'स्त्री को त्याग करने से ही सुख मिलता है स्त्री जीवन भर त्याग ही करती रहती है। किसी से कुछ पाने की आवश्यकता नहीं करती पर अपना सब कुछ वह दे देना चाहती है।'

डाक्टर ने एक निश्वास ली। कहा—'यह तो देख ही रहा हूँ लिली। नलिनी ने जीवन भर त्याग किया पर उसे मैं नहीं समझ सका और अब देखता हूँ तुम कितना बड़ा त्याग करने जा रही हो। यह मैं अनुभव करता हूँ।'

लिली चुप रही। आपके लिए तो वह बड़ा से बड़ा त्याग कर सकती है। यह कौन ऐसा त्याग है यह लिली की समझ में न आया। बोली—'मैं त्याग क्या कर रही हूँ। कोई भी व्यक्ति किसी मरणासन्न व्यक्ति की अंतिम इच्छा की पूर्ति के लिए इतना कर सकता है। और नलिनी तो अपनी ही है।'

'अपनी ही है !' डाक्टर को आश्चर्य हुआ। पर लिली नलिनी को अपनी ही कैसे समझती है। जानती है कि नलिनी उसके अधिकार से वंचित कर रही है। फिर भी लिली उसे अपनी ही समझती है। उसके लिए इतना सब कुछ करने को तैयार है।

डाक्टर ने कहा—'लिली तुम्हारी इन बातों से मुझे जो शान्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्राप्त होती है उसे मैं अपने निकट बहुमूल्य समझता हूँ। कोई भी पत्नी शायद इतना न कर सकती।'

'नहीं' प्रत्येक पत्नी इससे भी अधिक करती है। लिली ने गर्व के साथ कहा।

डाक्टर चुप रहा। स्टेशन निकट आ रहा था। डिब्बे के साथी अपना सामान समेट रहे थे। डाक्टर उसे देखता रहा। उसे आश्चर्य हो रहा था इतनी जल्दी क्या है। जब वह ट्रेन पर बैठा था तो चाहता था कितनी जल्दी लखनऊ स्टेशन आ जाय और वह नलिनी के पास पहुँच जाय पर अब जब स्टेशन निकट आ गया तो उसे लग रहा है कि वह बहुत शीघ्र लखनऊ आ गया।

लिली ने कहा—'स्टेशन आ रहा है।'

डाक्टर लिली की बात सुन जैसे चौंक पड़ा। उठ कर वह सामान समेटने लगा, यंत्रवत।

जिस समय वह नलिनी के पिता के घर पहुँचे प्रातः की सूर्य-किरणें उतप्त हो चुकी थीं। नलिनी के पिता बैठक में ही बैठे थे। डाक्टर को देख वे उठ खड़े हुए; स्वागत करते हुए कहा—'अच्छा तुम बहुत ठीक समय से आये। नलिनी तुम्हारी बड़ी याद कर रही थीं।'

डाक्टर ने कोई उत्तर न दिया; उसके पैर चलने से इन्कार कर रहे थे। वह एक कुर्सी पर ढह-सा पड़ा। नलिनी के पिता ने लिली से बैठने को कह नौकर को बुला सामान रखवाने का आदेश दिया।

डाक्टर क्षण भर बैठा रहा फिर उठ खड़ा हुआ। नलिनी के पिता भीतर समाचार देने चले गये थे। डाक्टर ने उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आने की प्रतीक्षा नहीं की; बैठक पार कर उसने भीतर प्रवेश किया। लिली भी उसके साथ-साथ भीतर चली।

तभी नलिनी के पिता आँगन में आगए। डाक्टर को आते देख कहा—'आइए।'

डाक्टर भी चुपचाप उसके पीछे-पीछे एक कमरे के द्वार पर जा रुक गया। अन्दर का जो दृश्य देखा तो उसका हृदय रो उठा पर उस समय वह अपनी व्यथा प्रकट कर मरणासन्न नलिनी को अधिक कष्ट नहीं देना चाहता था। अपने को सँभाल वह नलिनी के पलँग के निकट गया।

नलिनी का कंकाल मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसका शरीर सूख कर केवल हड्डियों का एक ढाँचा रह गया जिससे दो आँखें उसकी ओर देखती हुई इस प्रकार चमक रही थी जैसे रात्रि के शून्य में दो तारे।

बिना कुछ कहे सुने डाक्टर नलिनी के निकट आकर खड़ा हो गया। नलिनी ने आँखें उठाकर उसे देखा; शायद उसने डाक्टर की वेदना को पढ़ लिया।

वह उसी प्रकार पड़ी रही तो डाक्टर अपनी व्यथा को सँभाल न सका; बोला—'नलिनी तुमने मुझे पहले क्यों न सूचना दी।'

आँखों से आँसू बह निकले।

नलिनी के अधरों पर मुस्कान की एक रेखा खिल गई। उसने कहा—'डाक्टर! तुम्हें बुलाकर ही क्या करती। उनका बुलावा था; तो मुझे जल्दी जाना जो चाहिए।'

और फिर लिली को उसी प्रकार खड़ी देखकर बोली—'बैठ जाओ, बहिन।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकट ही एक कुर्सी पड़ी थी। लिली बैठ गई। उसके हृदय में अनेक प्रकार के भाव आ रहे थे। उसने सोचा था सम्भव है नलिनी को देखकर उसकी नारी जन्य ईर्ष्या जग उठे पर यहाँ वह कुछ भी नहीं पा रही है। देखती है पर नलिनी जैसे उसे अपनी ओर खींचे ले रही है।

डाक्टर का डाक्टरी ज्ञान जागृत हो गया। अब तक उसने अपनी मनोव्यथा पर अधिकार पा लिया था। उसने निकट खड़े नलिनी के पिता से पूछा—'और दवा किस की हो रही है।'

नलिनी के पिता ने उत्तर दिया—'पर डाक्टर अब जवाब दे चुके हैं।'

नलिनी मुस्करा उठी। पिता को जैसे यह व्यथा सहन न हो रही थी सो वे बाहर चले गए।

नलिनी ने कहा—'डाक्टर, तुम क्या सोच रहे हो? सोचते होगे अभी नलिनी बच सकती है। कितनी ही बार तुमने मृत्यु से लड़कर मेरी रक्षा की है। पर इस बार तुम भी मुझे नहीं बचा सकते।'

'नलिनी तुम व्यर्थ ही निराश हो रही हो। अभी तुम्हारी दशा इतनी खराब नहीं देख रहा हूँ कि निराश होकर बैठ जाया जाय।'

'डाक्टर, तुम कितने भ्रम में हो? नलिनी के सूखे अधरों पर मुस्कान खेल गई।'

क्षण भर रुक उसने कहा—'तुम्हें मैंने अन्त समय देखना चाहा था सो देख लिया। एक इच्छा थी वह पूरी हो गई। जीवन में सदैव ही चाहा था कि तुम सुखी रहो। आज देखती हूँ कि तुम सुखी हो। एक अभाव था उसकी भी पूर्ति तुमने कर ली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिली ने मिस मित्रा को देखा तो प्रसन्नता से उसका मुख खिल उठा; उठकर उसने उसे गले से लगा लिया बहुत दिनों के पश्चात् मिलने का स्नेह उसके अंतर से उभर कर आ रहा था। बोली—'तुम तो मित्रा जैसे भूल ही गईं आज कितने दिन हुए मुझे आये और तुम्हें एक क्षण के लिए भी आने को जैसे समय नहीं।'

'कितने दिन हुए तुम्हें आये जरा बताना तो।'

'एक सप्ताह ! होगा एक सप्ताह ! पर मुझे तो अभी परसों दिल दिल ने बतलाया तब मुझे मालूम हुआ कि तुम आ गई।' और फिर रुक कर कहा 'और' यदि तुम इतनी जल्दी आ गई थीं तो फिर तुम स्वयं ही क्यों नहीं आई मेरे यहाँ।'

'मैं आती तुम्हारे यहाँ ! कह रही हो। अरे, अब मैं विवाहिता हूँ मुझे समय नहीं मिलता।'

हँस कर फिर मित्रा एक कुर्सी पर बैठ गईं। सामने मेज़ पर फूलों का गुलदस्ता रक्खा हुआ था मिस मित्रा ने देखा—उसमें लिली की रुचि के फूल सजाये गए हैं।

मुस्करा कर कहा—तो यह सब अब तुम्हारे सक्ति से हो रहा है।

मेरी सक्ति नहीं तो फिर क्या ! पहले का रूप देखतीं तो कहतीं तुम कि यह डाक्टर आखिर इस घर में रहता कैसे है।' कह लिली हँस पड़ी।

'अच्छा।'

'जी, बड़ा अस्त व्यस्त जीवन था उनका जैसे किसी वस्तु की ओर से उन्हें कोई आकर्षण ही नहीं था।

'और अब।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'अब, अबतो उन्हें मुझसे भी अधिक इन सब बातों का ध्यान रहने लगा है।'

मिस मित्रा हँसने लगी, बोलीं—क्यों न हो हमारी लिली का प्रभाव तो आखिर पड़ना ही चाहिए।

'जी, वह तो मेरी इच्छा के अनुसार ही सारा काम करते हैं।'

लिली तुम ने पति अपने मन का तो पा लिया!'

'मन का क्या? मित्रा मैंने तो उनका सा कोई व्यक्ति ही नहीं देखा। मेरी इच्छाओं का वे इतना ध्यान रखते हैं कि कुछ न पूछो। जो कुछ भी मैं कहती हूँ सभी कुछ करने के लिए तैयार रहते हैं।'

मित्रा क्षण भर सोचती रही फिर बोली—इस समय डाक्टर हैं नहीं क्या?

'नहीं, डिस्पेन्सरी गए।

मिस मित्रा ने कहा—डाक्टर का समय बड़ा ही विचित्र होता है। सुबह शाम उन्हें अपने मरीजों से अवकास नहीं। घर की देख भाल भला वे क्या कर सकते हैं।

'घर की देख भाल करने की उन्हें आवश्यकता ही नहीं है। पर हाँ, कभी-कभी मैं एकाकी अवश्य ही महसूस करती हूँ। अभी उस दिन उनसे कहा तो कहने लगे कि कहो तो शाम को डिस्पेन्सरी जाना बंद कर दूँ।'

मित्रा हँस पड़ी। बोली—तो तुम्हारे लिए वे इतना तक करने को तैयार हैं।

लिली हँसती रही। नौकरानी को बुलाकर लिली ने कहा—चाय बनाओ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नौकरानी लिली ने नई रखी है अभी उसे क्या करना चाहिए इसका अभ्यास नहीं है। इसलिए लिली स्वयं उठकर अन्दर गई; उसने नौकरानी को समझाया; और फिर बाहर आकर मिस मित्रा के पास बैठ गई बातें होती रहीं।

चाय आगई तो मिस मित्रा ने मेज अपनी ओर खिसका ली बोली—यह तुम्हारी हनीमून के उपलक्ष में चाय मिल रही है।

लिली हँस पड़ी, बोली—यह नहीं; मैंने तो कई दिन सोचा कि एक दिन सबको पार्टी दूँ पर अभी कुछ ठीक नहीं कर सकी। घर का सारा प्रबंध ही नए सिरे से करना पड़ रहा है, इसलिये अभी नहीं कर सकी।

मित्रा हँसती रही, बोली—अच्छी बात है तो अभी एक दिन और आशा है!

लिली कुछ न बोली; चाय का प्याला लेकर वह पीने लगी; तभी बँगले में मोटर की आवाज सुनाई दी! लिली चौंक पड़ी। कौन आया है मोटर पर! चाय का प्याला उसने ट्रे में रख दिया और उठ कर बाहर आई; देखा तो डाक्टर मोटर से उतर रहा था। उसका चेहरा उतरा हुआ था।

लिली निकट आ गई। हाथ से हैट लेते हुए उसने डाक्टर से कहा—क्यों क्या बात है। आज जल्दी ही चले आये।

'हाँ' डाक्टर ने संक्षिप्त में उत्तर दिया।

लिली उसकी ओर देखने लगी तो लगा डाक्टर आज बहुत उदास है। इसलिए पूछा आज तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ है। तबीयत खराब है क्या?

डाक्टर ने कुछ धीरे से कहते हुए कमरे में प्रवेश किया। लिली उसकी बात सुन नहीं सकी। हैट एक ओर रखते हुए वह डाक्टर की ओर बढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

डाक्टर ने मिस मित्रा को देखा तो दोनों हाथ नमस्कार करने के लिए ऊपर उठा दिए पर मुँह से बोला वह कुछ नहीं।

मिस मित्रा डाक्टर को देखते ही उठकर खड़ी हो गई तो डाक्टर ने कहा आप बैठें !

और वह स्वयं भी एक कुर्सी खिसका बैठ गया। लिली भी उसके निकट बैठ गई तो डाक्टर ने कहा लिली चाय बनाओ।

लिली चाय बनाने लगी ता उसे ध्यान आया उसने डाक्टर का मिस मित्रा से परिचय नहीं कराया। सो बोली अरे मैंने तुम्हारा मित्रा से परिचय नहीं कराया। भूल हो गई। यह है मिस सरोजिनी मित्रा। मेरी सहपाठिनी रही हैं। बहुत दिनों तक !

डाक्टर के अधरों पर मुस्कान खेल गई, विवाह से जैसे उसके अधर धुल से गये हों। डाक्टर ने मिस मित्रा की ओर देखते हुए कहा—आप से मिल कर बड़ी प्रसन्नता हुई। विवाह में तो आपको देखा था।

'जी पर उस समय हम सब इतनी थीं कि आपसे किसी का परिचय प्राप्त करने का समय कहाँ था।

'हाँ, यही तो बात है।'

डाक्टर चुप हो गया। लिली ने चाय का प्याला उसकी ओर बढ़ा दिया तो पीने लगा।

मिस मित्रा बहुत देर तक बैठी रहीं जब वे चली गईं तो डाक्टर कपड़े उतार कर अपने कमरे में चला गया। लिली भी उसके साथ कमरे में पहुँची। डाक्टर चारपाई पर लेट गया तो लिली को आश्चर्य हुआ। निकट आ पूछा—तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है क्या ?

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तबीयत तो ठीक है लिली पर—'

'पर क्या ?' लिली चिन्तित हो उठी।

'लिली, मैंने तुमसे बहुत कुछ छिपाया है पर आज देखता हूँ कि तुमसे सब कह दूँ। आज मेरे अंतर में एक कथा भर उठी है। सोचता हूँ जब तक सब तुमसे कह न दूँगा तब तक मुझे संतोष न होगा।

लिली डाक्टर के सिरहाने बैठ उसके माथे पर हाथ फेरने लगी। उसे आज डाक्टर की बातों पर आश्चर्य हो रहा था। डाक्टर को वह बहुत अधिक प्रेम करती है। उससे भी डाक्टर ने कुछ छिपा कर रख छोड़ा है यह सुन जैसे चोट सी लगी। उसने कहा—मुझसे तुम्हें कुछ छिपा कर इस प्रकार व्यथित होने की आख़िर आवश्यकता ही क्या है। मैं जो तुम्हें प्रेम करती हूँ तो क्या तुम्हारी कोई भी बात मुझे कभी कष्ट दे सकती है।

डाक्टर को जैसे पीड़ा हो रही थी। वह कराह उठा। उसने कमीज की जेब से एक लिफाफ़ा निकाल कर लिली की ओर बढ़ा दिया।

लिली ने उसे ले लिया; खोल कर पढ़ा। लिखा था—मेरे प्रिय डाक्टर !

इस समय मैं मृत्यु शैया पर हूँ। पता नहीं किस क्षण मेरी मृत्यु हो जाय। उस दिन तुमने मेरे बुलावे पर आने से इन्कार कर दिया था। उसे मैं बुरा भी नहीं मानती। इतना थोड़ा समय ही यदि मुझे जीवित रहना था तो क्या मैं तुम्हारी बात मानकर एक भारी भूल न करती।

पर, अब तो वह बात ही जाती रही। अंतिम बार तुम्हें तुम्हारी पत्नी के साथ देखना चाहती हूँ। सच जानो, इससे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे एक आन्तरिक शान्ति प्राप्त होगी। यदि हो सके तो अंतिम बार दर्शन दे दो। तुम्हारी नलिनी फिर कभी तुमसे अब प्रार्थना नहीं करेगी।

तुम्हारी ही—
नलिनी

पत्र पढ़ते समय लिली के चेहरे पर रेखायें खिंच रही थीं और वह सोच रही थी डाक्टर को पत्र लिखने वाली यह नलिनी कौन है। उसे स्मरण है डाक्टर ने उससे एक बार कहा था कि उसने बहुत प्रारम्भ में एक लड़की को प्रेम किया था परन्तु उससे कभी ऐसी बात कहने का अवसर ही नहीं आया।

पति की ओर वह देखने लगी फिर जैसे अपने को संभाल कर उसने कहा—'तो इसमें क्या है। यदि उनकी यही इच्छा है तो हम वहाँ चल सकते हैं'।

डाक्टर ने लिली की ओर आश्चर्य से देखा यह लिली इतनी उदार है। क्षण भर चुप रह उसने कहा—'लिली, यह नलिनी मेरे जीवन में आशा बन कर आई; विषाद बन कर चली और तूफ़ान की भाँति मुझे छिन्न-भिन्न करके चली गई। जब मैं तुमसे पहली बार मिला था तब नलिली ने मुझे निराश कर दिया था और उसी आवेश में मैंने यह समझा था कि नलिनी के लिए मेरे हृदय में कुछ भी अब शेष नहीं है। अपनी इस भूल को सत्य समझ कर ही मैंने तुम्हें प्यार किया तुम्हें अपनी पत्नी बनाया और यदि नलिनी का पत्र आज न आता तो शायद मैं अब तक प्रेम में ही पड़ा रहता। पर आज मुझे यह अनुभव हो रहा है कि मेरे हृदय में नलिनी के लिए अब भी स्थान है लिली!' और डाक्टर की आँखों से आँसू बह चले।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिली को डाक्टर की कातर मुद्रा देख बड़ी व्यथा हुई। डाक्टर उसे जितना प्यार करता है उसी से वह संतुष्ट है। वह उसके अतीत से अपरिचित ही रहना चाहती है। इसीलिए तो उसने कभी यह प्रयत्न नहीं किया, उसके अतीत की कोई बात उसने कभी नहीं पूछीं। पर आज जब डाक्टर ने यह पत्र दिया तो उसे प्रतीत हो रहा है कि डाक्टर के अतीत के वे पृष्ठ उसके सम्मुख खुलेंगे ही।

डाक्टर का हाथ अपने हाथ में ले वह बोली—'तुम व्यर्थ ही इतनी चिन्ता करते हो। अरे इसमें कौन सी बड़ी बात है। मुझे तुम जितना प्यार करते हो वही क्या कम है?'

'पर लिली, मुझे यह दुःख जैसे छोड़ जो नहीं रहा है।'

'अजी हटाओ भी यह बात! उठो! हम चलने के सम्बन्ध में निश्चय करेंगे।'

उसने डाक्टर को उठा कर बिठा दिया तो डाक्टर को आश्चर्य हो रहा था। यह लिली भी विचित्र है। ईर्ष्या तो जैसे उसे छू नहीं गई। इतनी उदार! उसे लगा जैसे उसने एक देवी ही पत्नी के रूप में पा ली है।

डाक्टर कहने लगा—'लिली, आज तुम्हें सब बताऊँगा तभी मुझे शायद शांति प्राप्त होगी।'

'यदि तुम्हें उसी से शांति मिले तो मैं सुनने को तैयार हूँ पर तुम बचन दो कि तुम दुःखी नहीं होगे।'

'दुःखी नहीं हूँगा तुम्हारी इस उदारता के पश्चात भी यदि मैं दुःखी होऊँ तो यह होगी लिली! इस नलिनी को मैंने अपने यौवन के पहले वर्षों में ही प्यार किया था पर उस समय तक मुझे स्वयं अपने इस प्रेम का पता नहीं था। किन्तु जब नलिनी का विवाह निश्चित हो गया तब वह मेरे पास आई। बोली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मुझे वह प्रेम करती है और वह विवाह नहीं करेगी। मैं नलिनी को पढ़ाता था। उस समय मुझे ज्ञात हुआ कि मैं उसे प्रेम करने लगा हूँ पर उस समय मुझ में कर्तव्य का ज्ञान जागृत हो उठा और मैंने उसे समझाया कि इस प्रकार विवाह से इनकार करना उसका कर्तव्य नहीं है। उसे चाहिए कि वह इस सम्बन्ध में अपने माता पिता की आज्ञा का उल्लंघन करके उसकी भी बदनामी न करावे।'

नलिली ने कोई उत्तर न दिया। वह चली गई। उसके विवाह में भी वह नहीं गया। यही नहीं, उसके बाद फिर कभी उससे मिलने का अवसर उसे प्राप्त नहीं हुआ और उसके बाद ही उसे डाक्टरी पढ़ने का अवसर मिल गया और वह वहाँ से सदा के लिए चला आया। वर्ष बीतते गए और फिर आकर उसने यहां पर अपनी प्रेक्टिस प्रारम्भ की। नलिनी के पति की भी बदली हो गई और उसे इसका पता तब लगा जब नलिनी बीमार पड़ी और उसने उसे ही बुलाया।

नलिनी को देख उसके जीवन में एक बार एक तूफान आ उठ खड़ा हुआ परन्तु उसे अपने कर्तव्य का ज्ञान सदैव रोकता रहा। किसी भी विवाहित स्त्री के प्रति किसी प्रकार के भाव लाना उसने उचित न समझा।

लिली ने बीच में ही प्रश्न किया—'तो नलिनी यहाँ थी ?'

'हाँ, उसके कुछ दिन पहले राजदेव इंजीनियर की मृत्यु का समाचर तुमने पढ़ा होगा। वह उन्हीं की पत्नी थी। नलिनी की बीमारी बढ़ती गई तो उसका उसके यहाँ जाना भी बढ़ता गया। धीरे-धीरे राजदेव को नलिनी और उसके अतीत के सम्बन्ध का कुछ पता लग गया और उसे उस पर सन्देह होने लगा। यद्यपि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं नलिनी के यहाँ एक डाक्टर के रूप में ही जाता था किन्तु—

'ओह !' लिली के मुख से निकल गया।

डाक्टर क्षण भर रुक कर उसकी ओर देखता रहा फिर बोला—'राजदेव जब उस दिन रात को दुर्घटना का शिकार हो गया तो नलिनी ने उसे ही बुलाया। राजदेव को शराब पीने का वेश्याओं के यहाँ जाने की बुरी लत थी उसी के कारण उसकी मृत्यु हो गई। उसे बचाने के लिए उसने सारे प्रयत्न किये परन्तु बचा न सका और नलिनी के मस्तक का सिन्दूर धुल गया, अदृश्य ने उसे धो दिया।'

क्षण भर रुक कर उसने फिर कहना शुरू किया—'उसके बाद नलिनी बीमार पड़ी। उसकी चिकित्सा करता रहा। इस प्रकार उसके अधिक निकट आने का मुझे अवसर मिला तो जिस भावना को अब तक मैं दबाये हुए था वह फिर उभर आई। विधवा नलिनी के जीवन के प्रति मुझे एक सहानुभूति सी अनुभव होने लगी और मैंने उससे विवाह करने का निश्चय किया। यद्यपि वह मेरी सजातीय नहीं थी फिर भी मुझे आशा-थी कि मेरे प्रस्ताव को वह अस्वीकार नहीं करेगी। किन्तु मेरी आशा मिथ्या प्रमाणित हुई। उसने विवाह करने से इन्कार कर दिया कहा—स्त्री के संस्कार हैं। वह अपने स्वर्गीय पति के प्रति विश्वासघात नहीं कर सकती।'

बस उसी क्षण से उसके प्रति मेरे हृदय के भाव सहसा बदल गए और उन्हीं दिनों तुमसे परिचय हो गया। एक स्थान जो रिक्त हो गया था उसकी पूर्ति तो होनी ही थी सो मैं तुम्हारी ओर आकर्षित हो गया। नलिनी ने एक दिन मुझे बुलाया भी पर मैं नहीं गया। और उसके बाद सुना कि वह लखनऊ चली गई। नौकरी से विश्राम पा उसके पिता आज

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कल वहीं रहते हैं फिर मैंने उसकी कोई खोज खबर नहीं ली पर आज जब यह पत्र आया तो मैंने अनुभव किया—

लिली ने बीच में ही बात काटी,—'जो तुम्हें इतना प्रेम करती थी उसे भी तुम नहीं समझ सके। स्त्री प्रेम कर सकती है पर शरीर एक बार किसी को दे चुकने पर वह सदा उसी की होकर रहना चाहती है।'

'हाँ, यह मैं अब समझ सका। विधवा-विवाह मैं बुरा नहीं समझता पर आज अनुभव करता हूँ कि स्त्री विधवा होकर भी समाज में क्यों घुलती रहती है।'

लिली क्षण भर चुप रही फिर बोली—'तो तुम्हें उनकी अन्तिम इच्छा की अवहेलना नहीं करनी चाहिए।'

डाक्टर ने एक निश्वास लेकर कहा—'अवहेलना करने की सामर्थ्य आज मैं अपने में पा जो नहीं रहा हूँ।'

'तो हम कल लखनऊ चलें।' लिली ने कहा।

'हाँ।'

डाक्टर के हृदय का भार उतर गया पर लिली सोचती रही—'नारी त्याग की देवी है अपने पति के लिए वह सब कुछ उत्सर्ग कर सकती है। डाक्टर के लिए वह सब कुछ ही तो देख रही है। नलिनी को उन्होंने प्रेम किया। उन पर पहले नलिनी का अधिकार है। उसके रिक्त स्थान की पूर्ति ही लिली के जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।'

पति की बातों से उसे कुछ ईर्ष्या नहीं हो रही थी। पर एक बार उसने सोचा अवश्य कि किसी का इतना प्रेम पाना भी कितने सौभाग्य की बात है। यह डाक्टर आज तक उसे भूल न सका।

लिली उठ कर भीतर चली गई तो डाक्टर पड़ा सोचता रहा।

—:❀❀❀:—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

117 से 132 तक दो बार छप गये हैं
pages

—सोलह—

डाक्टर दूसरे दिन लिली के साथ लखनऊ पहुँचा। मन उसका उदास ही था। लिली बराबर उसे प्रसन्न रखने का प्रयत्न कर रही थी पर डाक्टर के मन में जो व्यथा थी। उसे वह निकाल नहीं पा रहा था। ज्यों-ज्यों ट्रेन लखनऊ स्टेशन के निकट आती-जाती थी उसका हृदय जैसे बैठा जा रहा हो। उसे मरणासन्न नलिनी की मूर्ति आँखों के सामने नाचती सी दिखाई पड़ रही थी। डाक्टर सोच रहा था कि नलिनी की मृत्यु का उत्तरदायित्व जैसे उसी पर था। नलिनी को समझने में उसने कितनी भूल की। उसके प्रेम के ही लिए जैसे नलिनी अब जी रही थी और अब-जब वह निराश हो गई तो मृत्यु ने उसे आ घेरा। उससे निराश हो कर नलिनी लखनऊ चली गई थी। परन्तु उसने कभी न सोचा था कि नलिनी इस प्रकार अपनी मृत्यु बुला लेगी। नलिनी के कहने से ही तो उससे दूर हो गया था। यदि नलिनी चाहती तो उस समय उससे सब कुछ करने के लिए कह सकती। काश, अपने हृदय की बात उस समय स्पष्ट रूप से उससे कह देती। परन्तु वह तो भूल बनी रही और डाक्टर उसको समझ न सका। एक भूल जो हो गई उसका परिमार्जन अब हो नहीं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकता था। फिर भी अभी वह एक आशा अपने हृदय में लिए हुए था। नलिनी को बचाने का वह प्रयत्न करेगा। यदि नलिनी बच गई तो—

तो वह क्या करेगा। लिली की ओर देख उसका हृदय करुणा से भर गया। लिली उसकी बगल में बैठी खिड़की से बाहर पेड़ों का भागना देख रही थी। बाहर से आती हुई हवा के झोके से उसकी केशराशि बिखर उठी थी एक लट उसके कपोलों के साथ अठखेलियाँ कर रही थीं। डाक्टर उसे देखता रहा। एक बार उसने नलिनी को एक जटिल पहेली समझा था और आज यह लिली भी उसके लिए एक जटिल पहेली बन रही थी।

लिली ने मुँह फेर कर डाक्टर की ओर देखा तो वह उसकी ओर देख रहा था। लिली ने अधरों पर मुस्कान लाते हुए कहा—'बहुत दिनों बाद आज गाँवों का यह दृश्य देखने को मिला रहा है। सो देख रही थी।'

'हाँ,' डाक्टर ने कहा।

लिली चुप रही फिर बोली—'आप व्यर्थ ही इतने चिन्तित हो रहे हैं। एक डाक्टर को अन्त समय तक आशा नहीं त्यागनी चाहिए।'

डाक्टर ने कहा—'लिली, आशा मैं नहीं छोड़ रहा हूँ। पर आज न जाने क्यों मुझे विश्वास सा हो रहा है कि नलिनी अब नहीं बच सकेगी।'

लिली चुप रही। क्या उत्तर दे वह!

डाक्टर ने फिर कहा—'इस नलिनी की मृत्यु का उत्तरदायित्व जैसे मेरे ऊपर हो।'

लिली चौंक पड़ी, फिर बोली—'तुम्हारे ऊपर क्यों? तुम तो आखिर उससे विवाह करने को तैयार थे।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'तैयार था ! पर शायद उसे आशा थी कि मैं—'

'कि तुम आजन्म के लिए अविवाहित रहोगे। यही न ! मैं कहती हूँ तुमने नलिनी को अभी तक नहीं समझा। जो स्त्री अपने जन्म गति संस्कार के लिए इतना सब त्याग कर सकती है क्या वह अपने प्रेमी को जीवन भर एक व्यथा में घुलते देख सकती है। वह चाहेगी कि उसका प्रेमी सुखी रहे।'

लिली ने कहा पर डाक्टर चुप रहा। थोड़ी देर बाद लिली ने फिर कहा—'स्त्री को त्याग करने से ही सुख मिलता है स्त्री जीवन भर त्याग ही करती रहती है। किसी से कुछ पाने की आवश्यकता नहीं करती पर अपना सब कुछ वह दे देना चाहती है।'

डाक्टर ने एक निश्वास ली। कहा—'यह तो देख ही रहा हूँ लिली। नलिनी ने जीवन भर त्याग किया पर उसे मैं नहीं समझ सका और अब देखता हूँ तुम कितना बड़ा त्याग करने जा रही हो। यह मैं अनुभव करता हूँ।'

लिली चुप रही। आपके लिए तो वह बड़ा से बड़ा त्याग कर सकती है। यह कौन ऐसा त्याग है यह लिली की समझ में न आया। बोली—'मैं त्याग क्या कर रही हूँ। कोई भी व्यक्ति किसी मरणासन्न व्यक्ति की अंतिम इच्छा की पूर्ति के लिए इतना कर सकता है। और नलिनी तो अपनी ही है।'

'अपनी ही है !' डाक्टर को आश्चर्य हुआ। पर लिली नलिनी को अपनी ही कैसे समझती है। जानती है कि नलिनी उसके अधिकार से वंचित कर रही है। फिर भी लिली उसे अपनी ही समझती है। उसके लिए इतना सब कुछ करने को तैयार है।

डाक्टर ने कहा—'लिली तुम्हारी इन बातों से मुझे जो शान्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्राप्त होती है उसे मैं अपने निकट बहुमूल्य समझता हूँ। कोई भी पत्नी शायद इतना न कर सकती।'

'नहीं' प्रत्येक पत्नी इससे भी अधिक करती है। लिली ने गर्व के साथ कहा।

डाक्टर चुप रहा। स्टेशन निकट आ रहा था। डिब्बे के साथी अपना सामान समेट रहे थे। डाक्टर उसे देखता रहा। उसे आश्चर्य हो रहा था इतनी जल्दी क्या है। जब वह ट्रेन पर बैठा था तो चाहता था कितनी जल्दी लखनऊ स्टेशन आ जाय और वह नलिनी के पास पहुँच जाय पर अब जब स्टेशन निकट आ गया तो उसे लग रहा है कि वह बहुत शीघ्र लखनऊ आ गया।

लिली ने कहा—'स्टेशन आ रहा है।'

डाक्टर लिली की बात सुन जैसे चौंक पड़ा। उठ कर वह सामान समेटने लगा, यंत्रवत।

जिस समय वह नलिनी के पिता के घर पहुँचे प्रातः की सूर्य-किरणें उतप्त हो चुकी थीं। नलिनी के पिता बैठक में ही बैठे थे। डाक्टर को देख वे उठ खड़े हुए; स्वागत करते हुए कहा—'अच्छा तुम बहुत ठीक समय से आये। नलिनी तुम्हारी बड़ी याद कर रही थी।'

डाक्टर ने कोई उत्तर न दिया; उसके पैर चलने से इन्कार कर रहे थे। वह एक कुर्सी पर ढह-सा पड़ा। नलिनी के पिता ने लिली से बैठने को कह नौकर को बुला सामान रखवाने का आदेश दिया।

डाक्टर क्षण भर बैठा रहा फिर उठ खड़ा हुआ। नलिनी के पिता भीतर समाचार देने चले गये थे। डाक्टर ने उनके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

आने की प्रतीक्षा नहीं की; बैठक पार कर उसने भीतर प्रवेश किया। लिली भी उसके साथ-साथ भीतर चली।

तभी नलिनी के पिता आँगन में आगए। डाक्टर को आते देख कहा—'आइए।'

डाक्टर भी चुपचाप उसके पीछे-पीछे एक कमरे के द्वार पर जा रुक गया। अन्दर का जो दृश्य देखा तो उसका हृदय रो उठा पर उस समय वह अपनी व्यथा प्रकट कर मरणासन्न नलिनी को अधिक कष्ट नहीं देना चाहता था। अपने को संभाल वह नलिनी के पलँग के निकट गया।

नलिनी का कंकाल मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। उसका शरीर सूख कर केवल हड्डियों का एक ढाँचा रह गया जिसमें दो आँखें उसकी ओर देखती हुई इस प्रकार चमक रही थीं जैसे रात्रि के शून्य में दो तारे।

बिना कुछ कहे सुने डाक्टर नलिनी के निकट जाकर खड़ा हो गया। नलिनी ने आँखें उठाकर उसे देखा; शायद उसने डाक्टर की वेदना को पढ़ लिया।

वह उसी प्रकार पड़ी रही तो डाक्टर अपनी व्यथा को सँभाल न सका; बोला—'नलिनी तुमने मुझे पहले क्यों न सूचना दी।'

आँखों से आँसू बह निकले।

नलिनी के अधरों पर मुस्कान की एक रेखा खिल गई। उसने कहा—'डाक्टर! तुम्हें बुलाकर ही क्या करती। उनका बुलावा था; तो मुझे जल्दी जाना जो चाहिए।'

और फिर लिली को उसी प्रकार खड़ी देखकर बोली—'बैठ जाओ, बहिन।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निकट ही एक कुर्सी पड़ी थी। लिली बैठ गई। उसके हृदय में अनेक प्रकार के भाव आ रहे थे। उसने सोचा था सम्भव है नलिनी को देखकर उसकी नारी जन्य ईर्ष्या जग उठे पर यहाँ वह कुछ भी नहीं पा रही है। देखती है पर नलिनी जैसे उसे अपनी ओर खींचे ले रही है।

डाक्टर का डाक्टरी ज्ञान जागृत हो गया। अब तक उसने अपनी मनोव्यथा पर अधिकार पा लिया था। उसने निकट खड़े नलिनी के पिता से पूछा—'और दवा किस की हो रही है।'

नलिनी के पिता ने उत्तर दिया—'पर डाक्टर अब जवाब दे चुके हैं।'

नलिनी मुस्करा उठी। पिता को जैसे यह ब्यथा सहन न हो रही थी सो वे बाहर चले गए।

नलिनी ने कहा—'डाक्टर, तुम क्या सोच रहे हो? सोचते होगे अभी नलिनी बच सकती है। कितनी ही बार तुमने मृत्यु से लड़कर मेरी रक्षा की है। पर इस बार तुम भी मुझे नहीं बचा सकते।'

'नलिनी तुम व्यर्थ ही निराश हो रही हो। अभी तुम्हारी दशा इतनी खराब नहीं देख रहा हूँ कि निराश होकर बैठ जाया जाय।'

'डाक्टर, तुम कितने भ्रम में हो? नलिनी के सूखे अधरों पर मुस्कान खेल गई।'

क्षण भर रुक उसने कहा—'तुम्हें मैंने अन्त समय देखना चाहा था सो देख लिया। एक इच्छा थी वह पूरी हो गई। जीवन में सदैव ही चाहा था कि तुम सुखी रहो। आज देखती हूँ कि तुम सुखी हो। एक अभाव था उसकी भी पूर्ति तुमने कर ली

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

यह मेरे लिए प्रसन्नता की बात है। आज यदि तुमने विवाह न कर लिया होता तो मुझे मरते समय भी एक दुःख रह जाता। अब मैं सुख से मरूँगी !

और फिर उसने लिली की ओर देखकर कहा—बहिन, मुझ पर क्रोध न करना ! तुम्हारी यह निधि वर्षों तक मैंने सँजो कर रखी है। आज तुम्हें सौंप रही हूँ। सँभाल कर रखना। यह डाक्टर बड़े ही भावुक हैं। जीवन में संघर्ष कर रहना उनके बस की बात नहीं। इन्हें कोई दुख न पहुँचे यही मैंने चाहा है।

नलिनी के आँसू आ गए। यह नलिनी कितनी अच्छी है। उसे लगा जैसे डाक्टर ने नलिनी को प्रेम किया पर उसी का सौभाग्य था।

नलिनी ने लिली की आँखों में आँसू देखा तो बोली—ओ, बहिन देखती हूँ तुम भी इन्हीं की भाँति हो। पर तुम से आज कुछ मैं कहना चाहूँगी। जाने फिर अवसर प्राप्त हो या न हो। आज मेरी तबीयत अच्छी भी है। तुम आगई यह मेरा सौभाग्य है। जो कहना है अभी कह डालूँगी।

लिली की जवान खुली, बोली—आप व्यर्थ कष्ट अपने को न दें। ऐसी हालत में बोलना आपके लिए हानिकारक ही होगा।

'अब कुछ दोष नहीं जिसकी हानि हो सकती है बहिन ! जीवन में सभी कुछ तो खो चुकी हूँ। यह प्राण है जो अब गए तब गए। हानि मेरी क्या हो सकही है।'

डाक्टर निश्चेष्ट सा खड़ा था फिर जैसे वह खड़ा न रह सका तो नलिनी के पलँग के किनारे बैठ गया।

नलिनी ने लिली से कहा—आज कुछ छिपाना मुझे नहीं। बहिन ! डाक्टर को मैंने अपने यौवन के प्रथम उफ़ान में ही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रेम किया पर उस समय उन्होंने मुझे कर्तव्य का ज्ञान दिया। मेरे अध्यापक थे यह और इनसे यही आशा भी थी। फिर विवाहित होकर मैंने एक जीवन व्यतीत किया; यह सुखमय रहा हो या दुःखमय पर प्रत्येक स्त्री के लिए वह स्वर्गीय तो होता ही है! उसके पश्चात जब मेरा सिंदूर धुल गया तो डाक्टर अपने कर्तव्य ज्ञान से विचलित हो उठे।...

नलिनी थक गई थी, खाँसी उसे आ गई। मुँह से दो क़तरे रक्त के निकल पड़े तो उन्हें निकट रखे पात्र में गिरा दिया। डाक्टर ने मेज पर रखे हुए पानी के गिलास को उठा उसके मुँह से लगा दिया।

दो घूँट पानी पीकर फिर लेट रही। उसपर एक बेहोशी सी छा रही थी! थोड़ी देर बाद उसने फिर कहना प्रारम्भ किया—यह भूल गए कि नारी का आदर्श क्या है। पर इसके लिए मैं इन्हें दोषी नहीं ठहराती। इन्होंने मेरे लिए अपना जीवन नष्ट कर दिया था। कितनी बार मैंने चाहा, इनसे कहा कि इस प्रकार अपने जीवन के साथ अत्याचार तुम्हें न करने दूँगी किन्तु यह न माने। अन्त में मुझे ही वहाँ से चला आना पड़ा।

भूल जीवन में इन्होंने शायद एक ही की थी पर मुझे प्रसन्नता है कि तुमसे विवाह कर उसका परिमार्जन इन्होंने कर लिया।

नलिनी चुप हो गई तो डाक्टर रो पड़ा। बोला—नलिनी, तुमसे निराश होकर एक आवेश में मैंने लिली से विवाह कर उसे धोखा दिया पर आज यह अनुभव करता हूँ, कभी जीवन से निकाल मैं नहीं सका। तुम्हें—

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

'डाक्टर, तुम रोते हो ! पर तुम्हें शोभा नहीं देता यह ! तुमने एक दूसरे के जीवन का भार अपने ऊपर लिया है ।'

'लिया है यह मैं जानता हूँ नालिनी आज यह अनुभव जो कर रहा हूँ उसको मेटने की भी तो अपने में सामर्थ्य नहीं है ।' डाक्टर ने कहा ।।

नलिनी चुप रही फिर क्षण भर बाद बोली—डाक्टर, मैं तुमसे क्षमा चाहती हूँ । तुम्हारे हृदय को मैंने सदैव ही कष्ट दिया है । पर अन्त में एक बात तुमसे हाथ पसार कर माँगती हूँ मुझे निराश न करना ।

डाक्टर की वेदना उभर कर कंठ में आ गई; उसने अपनी व्यथा को दबाकर कहा—नलिनी, मैंने तुम्हें कभी निराश नहीं करना चाहा फिर आज कैसे करूँगा ।

'तो, तुम मेरी याद को अपने दाम्पत्य-जीवन में विष कर न पलने देना । अपने अन्तर का समस्त प्यार तुम मेरी बहिन लिली को दो यही मेरी अन्तिम अभिलाषा है ।'

लिली को इस नारी का आश्चर्य हो रहा था; उसकी आखें फैल सी गई । कितना त्याग यह कर सकती है । लिली ने डाक्टर की ओर देखा ; वह हृदय की यंत्रणा से छटपटा रहा था ।

डाक्टर ने कहा—नलिनी, ऐसा ही होगा । अपने भर मैं तुम्हारी इच्छापूर्ण करने का प्रयत्न करूँगा पर तुम्हें भुला सकूँगा यह नहीं कह सकता । तुम्हारी याद मुझे सदैव अपने कर्तव्य का ज्ञान दिलाती रहेगी ।

बस, मैं तुमसे यही चाहती थी ।'

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नलिनी चुप हो गई तो डाक्टर उठकर खड़ा हो गया जैसे वह अब इतनी बड़ी व्यथा लेकर नलिनी के पास बैठ न सकता हो।

इतने में दीदी आ गई; उमेश को देखते ही उन्होंने कहा—अरे डाक्टर तुम आ गए।

'हाँ दीदी' डाक्टर ने कहने का प्रयत्न किया।

दीदी किसी काम में लगी थी उससे अवकाश पा चुकी तब उन्हें डाक्टर के आने का समाचार मिला। सो तुरन्त ही नलिनी के कमरे में आ गई।

उन्होंने कहा—डाक्टर; जिस दिन से यहाँ आईं इनका स्वास्थ्य बिगड़ता ही गया। मैं तो दिल्ली चली गई थी। बहू की तबीयत का हाल सुन अभी एक महीना ही तो हुआ मुझे आये। देखो तो इसने अपनी दशा क्या बना ली है।

डाक्टर ने एक करुणापूर्ण दृष्टि से नलिनी की ओर देखा फिर कहा—दीदी इसमें निराश होने की आवश्यकता नहीं।'

'पर सब डाक्टरों ने तो जवाब दे दिया है भैया!'।दीदी ने आह के साथ उत्तर दिया।

'पर मैंनें तो नहीं दिया! मैं नलिनी को बचा लूँगा। दीदी।' डाक्टर ने उत्साह के साथ कहा।

और उसके बाद वह बाहर चला गया।

लिली को देख दीदी ने पूछा—और यह डाक्टर की पत्नी है।

नलिनी ने धीरे से कहा—हाँ।

दीदी ने लिली को और देखा—फिर कहा—अरे बेटी तुम जब से आई हो जान पड़ता है यहीं बैठी हो। यात्रा से थक गई होगी चलो नहा-धो लो फिर देखा जायगा।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

लिली यंत्र चलित सी उठी। दीदी उसके नहाने-धोने का प्रबंध करने लगी।

डाक्टर उमेश नलिनी के पास से उठ कर बाहर चला गया था। वह नगर के एक क्षय विषेसज्ञ डाक्टर के पास गया। उससे वहाँ उसने परामर्श किया और फिर उसके साथ आया।

डाक्टर नलिनी की परीक्षा कर रहा था तो उमेश उसके निकट खड़ा था। नलिनी उसकी ओर देखकर मुस्करा रही थी पर वह जैसे आशा निराशा के बीच युद्ध कर रहा था।

डाक्टर परीक्षा करके बाहर के कमरे में आया। उस समय डाक्टर और उमेश के अतिरिक्त कोई नहीं था।

डाक्टर ने कहा—डाक्टर उमेश, मुझे दुःख है कि अब बहुत देर हो गई है। बचाना अब असम्भव है।

'यह तो मैं भी समझता हूँ डाक्टरसाहब पर बचाना उसे होगा ही। कुछ तो कहिए।'

'करने को हम कुछ उठा न रखेंगे पर मेरे विचार से यह दो-एक दिन से अधिक नहीं जीवित रह सकतीं। डाक्टर ने निराशा से कहा और अपनी मोटर की ओर बढ़ा।

उमेश उसी प्रकार कमरे में खड़ा रहा जैसे उसके प्राण ही चल बसे हों। एक सूखे वृक्ष की भाँति वह खड़ा रहा।

दवा आगई। उमेश को प्रसन्न करने के लिए नलिनी ने दवा पी भी ली।

दूसरे दिन वह अधिक प्रसन्न दिखाई पड़ी। उमेश ने समझा कि नलिनी में सुधार हो रहा है। उसने आशा के महल बनाने प्रारम्भ कर दिए।

दीपक का तेल जब समाप्त हो जाता है तो उसकी लौ अन्तिम बार भभक कर अपना प्रकाश बिखेर उठता है। यही

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दशा नलिनी की भी थी। मृत्यु के पूर्व उसके प्राण एक बार अपनी सारी शक्ति लगा भभक उठे।

दूसरे दिन प्रातः डाक्टर चाय पी रहा था तभी दीदी दौड़ी हुई कमरे में आई; बोली—डाक्टर नलिनी की तबीयत बहुत ख़राब हो गई है। अभी उसे खून का वमन हुआ था—

पर डाक्टर को अधिक सुनने का जैसे अवसर ही न हो। वह दौड़ कर नलिनी के कमरे में पहुँचा। उसकी दशा देख कर वह समझ गया। जान गया कि नलिनी अन्तिम बार मृत्यु से युद्ध कर रही है।

उसने दीदी की ओर आँसू भरी दृष्टि से देखा तो दीदी जैसे सब समझ गई। घर के सभी लोग कमरे में जुट गए डाक्टर नलिनी के निकट बैठ गया।

अन्तिम बार नलिनी ने अपनी आँखें खोली—डाक्टर को अपने निकट देख बोली – डाक्टर, मुझे क्षमा करना लिली को—

एक हिचकी के पश्चात् सब शान्ति हो गया।

डाक्टर सुन्न सा बैठा रहा; उसकी आँखों के सामने अंधकार था।

——

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

—सत्रहवाँ—

गोमती के तट पर एक विशाल इमारत बनी हुई है। क्षय के रोगियों की यहाँ चिकित्सा होती है। डाक्टर उमेश आजकल इसी अस्पताल में काम करता है। उसके साथ कई डाक्टर हैं। रोगियों की संख्या भी बहुत अधिक है। दूर-दूर से रोगी यहाँ आते हैं।

लिली के साथ दीदी अस्पताल में टहल रही थीं। नित्य ही वे एक बार सारे अस्पताल का चक्कर लगा जाती हैं। आज एक नया रोगी आया है। टहलती-टहलती वे उस कमरे के पास पहुँची तो देखा डाक्टर उमेश रोगी की परीक्षा कर रहे हैं। वे बरामदे में क्षण भर रुकी और फिर आगे बढ़ गईं।

दीदी ने कहा—नलिनी की आत्मा स्वर्ग में भी डाक्टर के इस कार्य को देख कर कितनी प्रसन्न हो रही होगी।

लिली चुप रही फिर बोली—हाँ, और मैं देखती हूँ उन्हें भी इससे एक प्रकार का संतोष प्राप्त होता है। प्रत्येक रोगी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

को वे कितने ध्यान से देखते हैं जैसे चाहते हैं कोई भी इस अस्पताल में आकर फिर न मर सके।

दीदी क्षण भर चुप रही, फिर बोली—यह संस्था नलिनी की स्मृति बन कर सदैव ही जीवित रहेगी और इस प्रकार डाक्टर और नलिनी का नाम सदैव के लिए अमर रहेगा।

लिली सोचने लगी डाक्टर और नलिनी का नाम अमर रहेगा इससे उसे कितनी शान्ति मिलती है। पूर्व की घटनायें उसकी आँखों के सम्मुख चल-चित्र की भांति आने लगीं। नलिनी की मृत्यु के पश्चात् डाक्टर लौट कर अपने नगर में गया पर डाक्टरी करने में उसका जी न लग रहा था। उसे अपने पर जैसे विश्वास ही न रह गया हो। वह सोचता जब उसका सम्पूर्ण ज्ञान नलिनी को ही अच्छा न कर सका उसे ही मृत्यु के मुँह से न बचा सका तब फिर अब वह कैसे आशा करे कि किसी रोगी को वह बचा सकता हो दवाखाने में जाना उसका अनिश्चित हो गया; वह उदास सा रहता। और तभी लिली के हृदय में यह भाव आया। डाक्टर को उत्साह की आवश्यकता है। उसने डाक्टर से कहा। क्यों न वे नलिनी की स्मृति में एक अस्पताल स्थापित करें इस प्रकार नलिनी की स्मृति भी सुरक्षित रहेगी और रोगियों की चिकित्सा कर वह उन्हें नलिनी की भाँति मृत्यु के मुँह में जाने से बचा भी सकेगा।

डाक्टर को लिली का विचार पसन्द आया। उसने गोमती के किनारे जहाँ नलिनी का शरीर अंतिम बार जल कर राख हुआ था उसी के निकट एक अस्पताल बनाने का निश्चय किया उसने अपनी सारी सम्पति इसी कार्य में लगा दी। दीदी ने जो डाक्टर का यह निश्चय देखा तो उन्होंने नलिनी की सारी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सम्पत्ति से अस्पताल का प्रबन्ध करा दिया। राजदेव के पिता की सम्पति आधी थी। डाक्टर के परिश्रम से अस्पताल का नाम चारों ओर प्रसिद्ध हो गया। डाक्टर उमेश अपने अस्पताल में केवल अपने रोगियों की चिकित्सा करता है। उसकी आय भी बढ़ गई है परन्तु अपनी आय का अधिकांश तो वह इस स्मृति को सुरक्षित बनाने में ही खर्च कर देता है।

और लिली को इसी में सुख है। दीदी अपने जीवन के शेष वर्ष डाक्टर के साथ इस अस्पताल का काम देखने में बिताने के लिए उनके साथ ही आ गई हैं।

लिली की विचार धारा चल रही थी तभी सामने से नौकर बेवी को लेकर आता दिखाई पड़ा। दीदी को देख बेवी ने अपने हाथ उठा दिए तो दीदी ने उसे नौकर की गोद से ले लिया।

चूमते हुए उसे ऊपर उठा बोली—मेरी बेवी भी डाक्टर बनेगी और फिर अपने पिता की भाँति ही इस अस्पताल के रोगियों की चिकित्सा करेगी।

लिली मुस्करा दी।

दीदी बेवी से पूछने लगी—क्यों बेवी तुम डाक्टर बनोगे न ?

बेवी दीदी की बात ध्यान से सुन रही थी; उनकी ओर देख उसने मुस्करा दिया तो उन्होंने उसे फिर चूम लिया। डेढ़ वर्ष के बालक ने जैसे दीदी के प्रश्न का उत्तर दे दिया हो।

लिली दीदी की गोद में बेवी को देख रही थी। दीदी बेबी को बहुत चाहती है। जब से बेवी पैदा हुआ तभी से दीदी उस की देख भाल करती है। लिली के भरोसे पर बेवी का कोई

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भी कार्य नहीं छोड़ती है कहती है लिली बच्चों की देख रेख कर ही नहीं सकती पर लिली जानती है दीदी के नीरस जीवन में यह वेवी एक सरसता बन कर बरसा करता है।

अस्पताल से खुले पार्क में वे आगए तो लिली ने कहा—दीदी, यह तो जैसे अपनी माँ को चीन्हता ही नहीं।

दीदी हँस पड़ी—पहचाने भी क्या तुम्हें! भला कब तुमने इसका ध्यान ही दिया है। उन्होंने कहा।

लिली हँस पड़ी; बोली—जब तुम हो तो फिर मैं उसकी चिन्ता क्यों करूँ।

दीदी का हृदय खिल उठा। बोलीं—यह वेबी ही मेरे जीवन का एक अकर्षण है। जीवन में बहुत अधिक दुःख मैंने सहा है। अब कुछ सहने को शेष रहा नहीं। यही एक सुख है जो अब अन्त समय पा रही हूँ।

लिली ने कोई उत्तर न दिया। गुलाब का एक खिला फूल तोड़ कर दीदी ने वेबी को हाथ से दे दिया तो वह उसे ले देखने लगा; फिर क्षण भर बाद ही उसकी पंखुड़ियाँ तोड़ कर उसने भूमि पर गिरा दीं।

लिली सोचने लगी इसी प्रकार तोड़े मरोड़े फूल क्या डाक्टर के पास आते हैं। डाक्टर कहते हैं कि टी० बी मानसिक रोग है। हृदय की चिन्ताओं और वेदनाओं से ही तो यह उत्पन्न होता है। जीवन का अभाव ही रोग बन कर मनुष्य के शरीर पर छा जाता है तो फिर उसका रूप चूस उसके प्राण लेकर ही जाता है।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दीदी बच्चे को लेकर बँगले को चलीं गईं। जाते समय उन्होंने लिली से आने को कहा—पर उसने कहा वह अभी थोड़ी देर में आवेगी।

दीदी चली गईं तो लिली बाहर पड़ी एक बेंच पर बैठ गई। अस्पताल की इमारत जैसे सजीव हो उससे कह रही हो—लिली तुमने जो कुछ किया है वह नलिनी के प्रेम से भी अधिक है। तुमने डाक्टर के लिए जो त्याग किया है वह अद्वितीय है। तुम्हारा नाम यह निर्जिव ईंटों की दीवालें रखने में समर्थ नहीं पर हाँ, तुम से यह प्रेरणा शक्ति अवश्य ही प्राप्त करती रहेंगी।

लिली उठी। अस्पताल के पूर्वी कोने पर एक छोटा मंदिर बना हुआ है। उधर ही चल दी।

यह मन्दिर नलिनी की स्मृति में डाक्टर ने बनवाया है। चारों ओर फूल दार वृक्षों का सुन्दर शृङ्गार है मन्दिर में केवल एक छोटा कमरा है जिसके चारों ओर बरामदा है। मन्दिर बंद रहता है। दिन में एक बार डाक्टर कुछ देर के लिए इस मन्दिर में आता है तभी माली उसे खोल देता है।

मेहदी के घेरे में प्रवेश करते ही लिली ने झट से सिर झुका लिया। माली ने लिली को आते देखा तो दौड़ कर पास आया बोला—सरकार मन्दिर खोल दूँ।

'हाँ।' लिली ने धीरे से उत्तर दिया।

माली ने दरवाजा खोल दिया तो लिली ने अन्दर प्रवेश किया। सामने एक ऊँचे सिंहासन पर नलिनी की एक प्रस्तर मूर्ति बनी हुई थी छोटी सी।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अस्पताल के बाहरी बरामदे में दरवाजे के निकट भी नलिनी की एक बड़ी मूर्त्ति बनी है परन्तु इस मूर्त्ति और उसमें जैसे बहुत बड़ा अन्तर है। मन्दिर की मूर्त्ति जैसे सजीव होकर बोलना चाहती हो।

डाक्टर नित्य अस्पताल जाते समय मंदिर में आता है और इस मूर्ति के सम्मुख खड़े होकर क्षण भर नलिनी की याद कर लेता है। लिली मूर्ति के निकट चली गई। क्षण भर वह मूर्ति को देखती रही फिर सिर झुका कर अपने ही आप उसने कहा—तुम्हारा आदेश था डाक्टर का मैं सदैव ध्यान रखूँ; अब तक अपने भर उस आदेश को पूरा करती आ रही हूँ पर नहीं जानती स्वर्ग में तुम हमसे प्रसन्न हो या नहीं पर इतना अवश्य कह सकती हूँ कि प्रेम के लिए त्याग का जो मार्ग तुमने मुझे बताया था उसी पर मैं चल रही हूँ। वे मेरे पति हैं; उनके सुख और शांति के लिए मैं सदैव ही सब कुछ कर सकूँ यही मेरी कामना है।

मूर्ति के अधर जैसे हिल उठे जैसे वह पत्थर की प्रतिमा बोल रही हो। कह रही हो—लिली, तुमने एक सच्ची पत्नी के कर्तव्य को पूरा किया है।

धीरे-धीरे वह मन्दिर से बाहर चली आई और सिर झुकाये बँगले की ओर जाने लगी तो माली ने मंदिर का दरवाजा बंद कर दिया।

खट-की एक आवाज़ हुई तो नलिनी ने मुड़ कर देखा फिर आगे बढ़ गई।

डाक्टर के आने का समय हो रहा है। बँगले पर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पहुँचते ही लिली को पूछेगा। जल्दी-जल्दी पैर बढ़ा कर वह चल पड़ी।

डाक्टर अस्पताल से लौट रहा था; लिली के बँगले पर पहुँचते ही पहुँचते मिल गया। उसे देख डाक्टर ने मुस्कराते हुए पूछा—कहाँ गईं थीं।

लिली अप्रतिभ हो उठी—अस्पताल में घूम रही थी।

'अस्पताल में पर मैंने तो तुम्हें नहीं देखा।'

'वाह मैं दीदी के साथ गई थी तुम वह जो नया रोगी आया है उसी कमरे में थे। बेवी को लेकर चलीं गई तो मैं तनिक पार्क में टहलने लगी।'

संध्या की सुनहली किरणें लिली के बालों पर पड़ रही थीं! इस समय वह बड़ी सुन्दर दिखाई पड़ रही थी।

डाक्टर उसके इस आकर्षक सौंदर्य को देखता रहा फिर बोला—हाँ वह नया रोगी आया है। बड़ी बुरी दशा है। अभी मुश्किल से बीस वर्ष का युवक है, प्रतिभा उसके चेहरे से टपकती है पर बेचारा इतनी कम उम्र में ही टी० वी० का शिकार हो गया। यह टी० वी जैसे हमारे देश के युवकों का नाश करके ही रहेगा।

'तो तुमने परीक्षा की; क्या बहुत शोचनीय दशा है।' ~~नलिनी~~ लिली ने चिन्ता के साथ प्रश्न किया।

'चिन्ता जनक दशा तो नहीं है पर जान यह पड़ता है कि कोई भारी व्यथा वह अपने अन्तर से छिपाये हुए है। जीना वह स्वयं ही नहीं चाहता।'

'ओह!' ~~नलिनी~~ लिली के मुँह से निकल गया।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बँगला आ गया था। वे अन्दर चले गए। डाक्टर अस्पताल से आकर पहले नहाता-धोता है सो वह कपड़े उतार गुशलखाने की ओर चला गया तो [illegible] हाल में बैठी हुई सोचती रही—

यह अस्पताल उसकी समाधि है जो जीवन भर किसी की याद को अपने हृदय में दफ़नाये जीवित समाधि बनी रही और फिर उसके मूल स्मारक के वक्षस्थल पर भी न जाने कितनी जीवित समाधियाँ मृत्यु और जीवन के बीच यहाँ अपने क्षण बिता रही हैं।

A Good book. I took a last in reading it and learned something at least A.S.K.

समाप्त

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

SPS
891.433 A 47 J
15344

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शुभ-सन्देश

क्या ?

यदि आपको हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन की किसी परीक्षा अर्थात् उत्तमा, मध्यमा, प्रथमा (साहित्य-रत्न, विशारद, एडवांस) की परीक्षाओं के लिए अथवा प्रवेशिका, विद्याविनोदिनी, विदुषी, सरस्वती आदि, हिन्दी की किसी भी परीक्षा की पाठ्य-पुस्तकें अथवा साहित्यिक, राजनैतिक, धार्मिक, उपन्यास, कहानी-संग्रह आदि की आवश्यकता हो तो हमको अवश्य लिखें। हमारे यहाँ सब पुस्तकें सदैव रहती हैं और उचित मूल्य पर वी० पी० से भी भेजी जाती हैं। साथ जो लोग किसी भी परीक्षा की सभी पुस्तकें हमसे खरीदते अथवा वी० पी० से मँगाते हैं उनका नाम हम स्थायी-ग्राहकों की सूची में लिख लेते हैं और उनको हमारे यहाँ की प्रकाशित सभी पुस्तकों पर २५ प्रतिशत कमीशन मिलता है।

कृपया आर्डर देते समय इसका ध्यान अवश्य दिलावें जिससे कमीशन काटने में गलती होने की सम्भावना न हो।

सूचीपत्र मुफ़्त भेजा जाता है।

पता —

प्रमोद-पुस्तक-माला,

यूनीवर्सिटी रोड,

इलाहाबाद।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE